चैतन्य लहरी

जनवरी - फरवरी २००८

चैतन्य लहरी

प्रकाशक
निर्मल ट्राँसफोर्मेशन प्रा. लि.
प्लाट नं. 8, चन्द्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी,
पॉड रोड, कोथरुड
पुणे – 411 029
फोनः 020- 25285232

मुद्रक
कृष्णा प्रिन्टर्ज एण्ड डिज़ाइनर्ज़
292/23 ओंकार नगर 'बी'
त्रीनगर, दिल्ली-110035
मोबाइल : 9212238008

अपने सुझाव, अनुभव, सहज सम्बन्धी लेख,
सदस्यता एवं जानकारी के लिए निम्न पते पर लिखें :
निर्मल ट्राँसफोर्मेशन प्रा. लि.
प्लाट नं. 8, चन्द्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी,
पॉड रोड, कोथरुड
पुणे – 411 029
फोनः 020- 25285232

चैतन्य लहरी

अंक : 1 - 2 , 2008

इस अंक में

2. श्री महालक्ष्मी पूजा, 10.11.2007 (N.C.R.) नोएडा

11. दीवाली पूजा सेमिनार-2007 दिल्ली (N.C.R.) नोएडा

15. लाल बहादुर शास्त्री-उर्दू संस्करण-विमोचन

17. श्रीमाताजी निर्मल प्रेम आश्रम में

19. महाशिवरात्रि पूजा, दिल्ली- 6-3-1989

28. महाशिवरात्रि पूजा- 29-2-1976

31. प्रजापति यज्ञ- मुम्बई- 2-3-1976

35. निर्विचार में रहो- मुम्बई- 18-12-1977

37. सहजयोग की एक ही युक्ति है- 30-9-1979

43. परिवर्तित इच्छा (अनुभव)

44. त्रुटि-सुधार

श्री महालक्ष्मी पूजा

10-11-2007-नोएडा (N.C.R.)

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

Happy Diwali!

आप सबको दीवाली मुबारक हो।

ये तरह-तरह के नृत्य को आपने देखा, इससे एक बात समझ लो कि ये जो भी थे जिन्होंने ये लिखा, कहा, सब एक ही बात कह रहे हैं। और सबसे बड़ी बात कौनसी कही कि परमात्मा एक हैं। उन्होंने अलग-अलग अवतार लिए पर परमात्मा एक हैं। उनमें आपस में कोई झगड़ा नहीं, और वो इस संसार में इसलिए आते हैं कि दुष्टों का नाश करें, खराब लोगों को बरबाद करें। और हो रहा है हर जगह। हर जगह मैं देखती हूँ कि जो दुष्ट लोग हैं, वो सामने आ रहे हैं। और अब आप लोगों का भी यही काम है कि जो दुष्ट हैं, जो परमात्मा के विरोध में काम करते हैं और पैसा कमाने के लिए कोई भी काम कर सकते हैं, वो सब नर्क में जाएंगे। हमको पता नहीं कितने नर्क हैं! अभी जिस माहौल में आप बैठे हैं, जो जगह आप बैठे हैं, ये नर्क से परे है। इसका सम्बन्ध नर्क से कोई नहीं है। लेकिन आप इसमें रहकर और अधर्म करें, गलत काम करें तो आप भी नर्क में जा सकते हैं। बहुत तरह के नर्क हैं और ये नर्क में जाने की व्यवस्था भी बड़ी अच्छी है। क्योंकि वहाँ पे जाने वाले जानते नहीं कि हम कहाँ जा रहे हैं। और जो बच जाते हैं वो स्वर्ग चले जाते हैं। तो इस पृथ्वी तल पे कोई जानता ही नहीं कि हमें नर्क में जाना है। गलत काम करने से हम नर्क में जाएंगे और दीवाली का मतलब यही है कि जैसे बाहर दीये लगे वैसे आप लोगों में भी दीये लग जाएं। और आप भी देखो इस अंधेरे दुनिया में तुम लोग दीये हो, दीपक हो और तुम्हें प्रकाश देना है। लेकिन अगर अन्दर का ही प्रकाश पूरा नहीं हुआ तो आप कैसे प्रकाश दे सकते हैं? ये भी सोचो। तो पहले आप सहजयोगियों को चाहिए कि पहले अन्दर के प्रकाश को पूरा करें और इसी से शायद हम इस दुनिया में आए हैं। ईसामसीह तक तो कोई इस मामले में बात ही नहीं करता था। आज्ञा चक्र पर वो आए और अपने को पूरी तरह से दिखा दिया कि उनमें कोई भी अहंकार नहीं था, परमात्मा के पुत्र थे पर कोई अहंकार नहीं था। उनसे पहले जो लोग हो गए वो तो थोड़े बताते थे, लेकिन ईसामसीह ने यही चाहा कि हमारे आज्ञा चक्र ठीक हो जाएं। और वो आज्ञा चक्र आपके दिल्ली में बहुत पकड़ता है। इसका कारण क्या है? पहले अंग्रेज़ यहाँ रह गए और अंग्रेज़ों ने हमको घमण्ड करना सिखाया। आप लोगों का बातचीत से पता कर सकते हैं। हमने वो भी दिन देखे हैं जब अपना देश परतन्त्र था लेकिन उस 'परतन्त्र' से आप लोग निकल आए हैं। अब स्वतन्त्रता हो गई, और स्वतन्त्रता क्या है? 'स्व' को जानना। जिसने 'स्व' को जाना वह 'स्व' के तन्त्र को जानता है। सहजयोग से आपने अपने को जाना है और आप जानते हैं कि आप तन्त्र हैं और आपको 'स्व' के तन्त्र से चलना है।

दिल्ली में बहुत काम हुआ है, ये तो दिखाई दे रहा है। दिल्ली से बाहर भी काम हुआ है। यहाँ के लोगों में जो दोष हैं वो तो आप जानते हैं, मुझे बताने की कोई ज़रूरत नहीं है। लेकिन अब आप स्वतन्त्र हो गए हैं। तो आपको देखना चाहिए की हममें तो ये दोष नहीं है। पहला तो दोष ये है कि आपका आज्ञा ही चक्र पकड़ रहा है। ईसामसीह मर गए, सूली पर चढ़ गए लेकिन उससे हम लोग सीखे नहीं। उल्टे जहाँ ईसाई देश हैं उनमें बहुत ही अहंकार है। वो हम लोगों पर भी छाए हुए थे। पर सबसे बड़ी जो यहाँ खराबी है कि हम अभी एक दूसरे को पहचानते ही नहीं। जहाँ-तहाँ झगड़े, जहाँ-तहाँ लड़ाई और आपस में शुद्ध मन नहीं। तो पहली चीज है कि अपने मन को शुद्ध करना है। सहजयोग से सब हो सकता है, कहाँ से कहाँ लोग पहुँच सकते हैं। ज़रूरी नहीं कि उसके लिए आप हिमालय जाके बैठें। इसी दिल्ली शहर में आप कर सकते हैं। पर आप चारों तरफ अगर देखें कि अहंकारी लोग हैं, बहुत ज्यादा उनका आज्ञा चक्र पकड़ा हुआ है तो बड़ी मुश्किल है। अब एक भगवान ने नई चीज़ भेजी है 'कैन्सर'। अगर आपको कैन्सर हो गया है और आपका अगर आज्ञा चक्र ठीक नहीं हुआ, तो वो ठीक हो ही नहीं सकता और बड़ी आफ़त हो

जाएगी। इसलिए जिनको कैन्सर हुआ है उनको तो चाहिए सहजयोग लें और अपने अन्दर जो अहंकार है उसे निकालें। क्योंकि जहाँ भी Government होती है लोगों में अहंकार आ जाता है। हमारे यहाँ इतने Government Servants हैं और उनके अन्दर काफ़ी सा अहंकार है। पर उनसे भी ज्यादा जो बाहर से आए हैं वो तो उनके नाना हैं, और ऊपर से सब शराब पीते हैं! आप सोचिए कि ईसाई कहलाते हैं और सब शराब पीते हैं! तो शराब पीना तो आप अपने ही खिलाफ़ जा रहे हैं। आप अपने आज्ञा चक्र को ही मना कर रहे हैं। उसको नहीं मान रहे। जिस आदमी का आज्ञा चक्र हट गया वो शराब नहीं पी सकता, कभी नहीं पी सकता। आप जहाँ-तहाँ देखते हैं लोग शराब पीते हैं और उसको निकालने का कोई इलाज भी नहीं है उन लोगों के पास। क्योंकि उसके ऊपर फिर वो शराब पीते हैं। तो किसी भी तरह की लत जो होती है वो अपने को गुलामी में डाल देती है। कोई सी भी। अभी इधर में पान की बात बहुत है, उसमें तम्बाकू डालेंगे! बताइए! इतने भगवान ने आपको मोहब्बत से पैदा किया है इस देश में कि आप सारी दुनिया से निराले हो जाएं। हो सकते हैं, हिन्दुस्तानी होते हैं, लेकिन उनमें दो चार बीमारियाँ अभी मैं ज्यादा देखती हूँ। वो ये कि वो खाने की जगह पैसा खाते हैं। अभी जिस रास्ते से हम आए तो मुझे बड़ा दुख हुआ, वो रास्ता पहले नहीं था और अब ऐसा रास्ता बना है कि कोई कह नहीं सकता कि ये नया रास्ता है। ये सब हिन्दुस्तानी ही कर सकते हैं। इतने बेशर्म तो मैंने दुनिया में कहीं लोग देखे ही नहीं जो ऐसे काम करें और कोई ज़रूरत नहीं है। यहाँ बड़े से बड़ा (अस्पष्ट)कोई भी ये काम कर सकता है।

तो आज ये निश्चय करना है कि पहले हम अपने आज्ञा को ठीक करें। आज्ञा में सबसे बड़ी बात ये है कि हम अपने को सबसे उत्तम समझते हैं, और हम सोचते हैं कि दुनिया भर में हम चला सकते हैं, दुनिया को हम ठीक कर सकते हैं। जब आप ही ठीक नहीं तो दुनिया कैसे ठीक होगी? देखिए ऐसे आपने बहुत लोग देखे होंगे, जो अपने को बहुत ऊँचा समझ के और बहुत गलत काम करते हैं। इस देश में तो लोग पैसा खाते हैं, बताइए कि भगवान कैसे माफ़ करेगा हमको? सबसे बड़ा गुनाह तो ये है कि चोरी करना और पैसा खाना। जो इस तरह के गुनाह को करता है उसको कुछ भी करे, वो कुछ भी कोशिश करे, पूजा करे, पाठ करे, नमाज़ पढ़े, अल्लाह को पुकारे, उसको कोई फ़ायदा नहीं हो सकता।

तो आज आपका नया साल है, आपको मुबारक हो। और मैं चाहती हूँ कि आप लोग आज ये निश्चय करें कि हम झूठ नहीं बोलेंगे, कभी भी झूठ नहीं बोलेंगे। हिन्दुस्तानी मशहूर हैं, दुनिया भर में मैं गई हूँ, कि बड़े ही झूठे हैं। पता नहीं क्यों हमारे देश पे ऐसे ठप्पा लगता है कि झूठे लोग हैं। जहाँ इतने बड़े बड़े सन्त-साधु हो गए, जहाँ सूफ़ी जैसे लोग हो गए वहाँ लोग इतना झूठ क्यों बोलते हैं? तो आप आज कसम ले लीजिए कि हम झूठ नहीं बोलेंगे। चाहे कुछ हो जाए। उसके लिए हिम्मत चाहिए। लेकिन अब आप जब पार हो गए हो तो और हिम्मत क्या चाहिए? आप झूठ बोल ही नहीं सकते। और आप जब ऐसे हो जाएंगे तभी तो लोग आप पे विश्वास करेंगे कि ये लोग सच्चे हैं। तो सहजयोगी को सच्चा होना है। कुछ भी हो, बिज़निस हो, कोई भी हो, इंजीनियर हों, सड़कें बना रहे हों, डॉक्टर हों, सबका इलाज कर रहे हों। ये सब होते हुए भी आपके लिए नर्क है अगर आप झूठ बोलें तो। अब क्योंकि आपने अपना हुलिया बदल लिया है, अब आप पार हैं, सो पार लोग, अगर कोई झूठ बोलें तो उनको कोई भी फ़ायदा नहीं हो सकता। अपने देश के बारे में बाहर मैं सुनती हूँ, तो बड़ा दुख होता है कि यहाँ के लोग बड़े धोखेबाज़ हैं, बड़े झूठे हैं, पैसा बनाते हैं। आज आपका अच्छा शुभ दिन है। आज सब निश्चय कर लो कि हम कभी भी झूठ नहीं बोलेंगे, चाहे कुछ हो जाए। हम खुद हैं एक औरत, वो भी हिन्दुस्तान की, हमने कभी झूठ नहीं बोला। झूठ बोलने से आप ही को नुकसान होगा। झूठे काम करने से आप ही को नुकसान होगा। इस तरह से आप पैसा ज्यादा कमा लें या और भी ढंग कर लें, लेकिन इसके बाद आप स्वर्ग में नहीं जा सकते, नर्क में जाएंगे। ये बहुत

ज़रूरी जान लेना है कि हमारे बारे में सब देशों में इतनी बदनामी है। ये बदनामी क्यों है, क्योंकि हमारे यहाँ ऐसे लोग हैं। आपको अगर पता हो जाए कि कोई झूठा है तो आप उसके लिए एक संस्था बनाइए और उससे पूछिए कि साहब इसके मतलब क्या है? जैसे एक सड़क है, वो अगर ठीक ही नहीं बनी है तो पता करिए कि कितना पैसा खर्च हुआ और उनको देखिए कि वो क्या कर रहे हैं? ऐसे पैसे खाके शराब ही तो पिएंगे और शराब हमारी दुश्मन है। किसलिए चाहिए? आप लोगों की तो हालत बहुत अच्छी है और बहुत देश में गरीब लोग हैं, लेकिन मैंने देखा है कि वो बड़े ईमानदार हैं, तो ईमानदारी पहली चीज़ है। आज निश्चय होना चाहिए कि हम बेईमानी नहीं करेंगे और हम बेईमानों के साथ नहीं रहेंगे और किसी ने अगर किया तो हम बता देंगे। अब ये है कि लोग कहेंगे, ''माँ, पुलिस में भी ऐसे हैं, उसमें भी वैसे हैं'' लेकिन आप सहजयोगी हैं। जो सहजयोगी हैं वो किसी पुलिसवाले से या किसी भी बड़े आदमी से कम नहीं। बहुत उनमें शक्ति है। पर सारी शक्ति सच्चाई की है। सच्चाई होनी चाहिए और मुझे बड़ी खुशी है कि बहुत से सहजयोगी बहुत सच्चे हैं, बहुत सच्चे हैं। लेकिन अभी अपने को और भी सहजयोगी चाहिएं कि जो सच्चे हो जाएं। सच्चाई बहुत ज़रूरी चीज़ है नहीं तो आपका आज्ञा छूट ही नहीं सकता। आज्ञा होता है उसमें एक चीज़ है कि 'अहंकार'। जब आदमी में अहंकार आ जाता है तो कोई सी भी गलती करता है, बुराई करता है, किसी को नुकसान करता है, पैसा खाता है वो सब नर्क में जाएंगे। मैं आपको बता देना चाहती हूँ कि आपको पैसा नहीं खाना चाहिए। कोई आप मर नहीं रहे। क्या किया पैसा ज्यादा कमाके, क्या कर रहे हैं? दो चार lights लगा लिए होंगे और कोई दो चार औरतें रख ली होंगी और क्या? लेकिन अब जब नर्क में जाएंगे तो आपका क्या हाल होने वाला है? दीवाली के दिन मैं ये बात इसलिए कह रही हूँ, दीवाली इसलिए मनाई गई थी कि जब सीताजी वापिस राम के पास आ गईं। जब हमारे पास चरित्र आ जाएगा तो फिर हम गुलाम नहीं रह सकते। हम अपने ही गुलाम हैं, दूसरों के थोड़े ही। किसी भी बात के लिए झूठ नहीं बोलना है। हम दिल्ली बहुत रह चुके हैं और हम तो हैरान थे की लोग कितना झूठ बोलते हैं यहाँ, ''बाप रे बाप! उनको कोई डर ही नहीं!'' साफ़ साफ़ झूठ बोलना और उससे लाभ? पता नहीं उनको यहाँ हो जाए शायद, कुछ रुपया पैसा ज्यादा कमा लें लेकिन वो स्वर्ग में नहीं जा सकते। मैं चाहती हूँ सहजयोगी आज से कसम ले लें, **'न तो हम झूठ बोलेंगे और न तो हम झूठों की मदद करेंगे।'** अपने देश के बारे में लोग ये कहते हैं कि बड़े बेईमान हैं। हाँ, सब जगह, मैं तो बहुत दूर घूमी हूँ। सबसे मैंने देखा कि रशिया के लोग हैं, बहुत बढ़िया। वो आधे सहजयोगी तो हैं ही और बहुत सहजयोगी हैं। मैं रशिया इस साल जा भी नहीं पाई। अगले साल जाऊंगी ज़रूरी। पर इसका ये मतलब है कि हम democracy नहीं पाल सकते। हमको भी कम्यूनिस्ट होना चाहिए। वहाँ कोई चोरी चकारी नहीं, झूठ बोलना नहीं और सब बहुत प्यार करते हैं। मेरा भी बहुत मान है। लेकिन समझने की बात यह है कि हम कहाँ जा रहे हैं? दो चार पैसे कमाने के लिए हम जा कहाँ रहे हैं? हमें क्या मिलने वाला है? सो पहले तो ईमानदारी अपने साथ होनी चाहिए। तुम्हारे बेईमानी से तुम्हारे ही लोगों को तकलीफ़ होगी।

हिन्दुस्तान को लोग कहते हैं कि यहाँ के लोग बड़े बेईमान हैं। शर्म आती है सुनकर के। तुम्हारे यहाँ इतने बड़े-बड़े सन्त हो गए, इतने इतने महान पुरुष हो गए और यहाँ पर लोग बड़े चोर हैं और बहुत चोरी करते हैं और बुराई करते हैं। तो इससे पहले ही तो आपका आज्ञा डर गया। बड़े-बड़े रईस बन जाएंगे। देखिए अन्त में, रईस साहब चले जा रहे हैं 'नरक में'। मैं आज बताना चाहती हूँ कि दिवाली का मतलब ये है कि नर्क अंधेरा है और तुम प्रकाश हो गए हो। तुमको चाहिए कि जहाँ भी अंधेरा हो वहाँ लड़ो और वो बताओ कि ये गलत बात है। इससे हमारा देश सुधरेगा। तुमको ये भी काम एक करना है। पूजा पाठ हम कर ही रहे हैं। लेकिन जो हमारे अन्दर शक्ति है वो ये है कि हम जो भी असत्य है उसके विरोध में हैं। बहुत से लोगों को पता नहीं पैसा कमाने की बीमारी है। सीधे वो नर्क में जाएंगे। मैं आपसे इसलिए बता रही हूँ कि किसी ने ऐसा बताया ही नहीं। दीवाली के दिन मैं

बता रही हूँ कि हम खुशियाँ मनाएंगे और दीये जलाएंगे, अपने हृदय में, उसमें, उस दीये में हमें दिखाई देगा कि कौन कैसे हैं, चोरी करते हैं, अब तो एक दूसरी लड़ाई मैं देखती हूँ। हिन्दू-मुसलमानों की तो लड़ाई खतम हो गई और दूसरे लोगों की लड़ाई शुरु हो गई। यानि दूसरी बात ये है हम लड़ाका भी बहुत हैं। कम से कम दूसरे देशों में इतने देश के धर्म नहीं हैं। तो अपने यहाँ तो कोई भी मौका मिल जाए, लड़ाई करो। लड़ाई पहले। मियाँ-बीवी में झगड़ा, फिर उनके बच्चों में झगड़ा, फिर आपस में कोई हो तो उससे झगड़ा।

सहजयोग क्या है? सहजयोग प्रेम है, प्रेम। अपने अन्दर जो प्रेम की शक्ति है उसको जगाओ। आज का बड़ा शुभदिन है और हमें दीये जलाने हैं अपने हृदय में और ये निश्चय कर लेना है कि हम मर भी जाएंगे तो भी हम झूठ नहीं बोलेंगे। अपने यहाँ ऐसे लोग हो गए हैं। लेकिन इतना नाम बदनाम है दुनिया में कि हिन्दुस्तानी बेईमान होते हैं। भई मैने तो कोई देखे नहीं, पर सुनते हैं तो बड़ा दु:ख लगता है। हिन्दुस्तान जैसे पवित्र स्थान जहाँ इतने बड़े सन्त जन्म लिए और तो कहीं नहीं। सूफ़ी हैं, यहीं पैदा हुए, सब जो महान लोग हो गए, सब हिन्दुस्तान में हुए। किसी भी देश में इतने महान लोग हुए नहीं हैं। एक आध दो हुए होंगे, पर हमारे यहाँ तो बड़े महान लोग हो गए और उसके बाद उन्होंने जो भी सिखाया, वो तो छोड़िए, नम्बरी हम लोग चोर हो गए। तो जो भी चोरी करते हैं, वो कभी भी स्वर्ग में नहीं जा सकते और यहाँ की जिन्दगी जितनी है उससे हजार गुने ज़्यादा ज़िन्दगी आपको नर्क में मिलेगी। आज के दिन मैं इसलिए नर्क की बात कर रही हूँ कि नर्क माने जो अंधेरा है वो नर्क हम देखते हैं। अब आपके दीये जल गए। उससे आप देखो कि कौन कौन नर्क हैं। आप Government को मदद करो। मदद करो कि कौन लोग बेईमान हैं। आप छोटी पॅज़िशन में हों चाहे बड़ी पॅज़िशन में हों, आपको बता देना चाहिए कि कौन चोर हैं। चोरों को पकड़ो। झूठ बोलने वालों को पकड़ो। अब तुम्हारे पास शक्ति आई है वो किस चीज़ के लिए? तुम जाग गए हो किस चीज़ के लिए? तुम्हारे प्रकाश हो गए, उस प्रकाश में आप अपने को देखो। अन्धेरे में तो कुछ नहीं दिखा, पर अपने प्रकाश को देखो कि आप क्या हैं? और झूठ बोलने से आपको क्या प्राप्त होगा? हम एक गृहस्थी हैं। हम कभी झूठ नहीं बोलते, कभी भी नहीं। और बोल ही नहीं सकते। जैसे ही आपको झूठ बोलना पड़े आपके पास शक्ति है, आप सब दीप हैं, आप देख लीजिए इस अंधेरे में। आप दीप हैं और दीप को जलना है। इस अंधेरे को हमको मिटाना है। हम सब दूर तक बदनाम हैं, अरे! हमारे देश के जैसे तो लोग कहीं हैं ही नहीं और बड़ा दुख लगता है सुनके कि लोग हमें कितना गलत समझे हैं! और बेईमानी करके भी क्या पाते हैं, पता नहीं! और जो पाना है वो तो भयंकर है। कोई भी नहीं छूटेगा। जो भी बेईमान हो गए, सब पकड़े जाएंगे। उसकी व्यवस्था है, आप पार हो गए क्योंकि आप बेईमान नहीं है। आप सत्य को प्यार करते हैं और सत्य की इज्ज़त करते हैं। मैं चाहती हूँ कि आप सत्य पर खड़े हों। अब जैसे जमुनाजी में लोग कचरा फेंकते हैं, माने बेवकूफ हैं। जमुनाजी तो सीधे नर्क में उतरती हैं, लेकिन उस नरक से आप बच जाओगे। आप पार हैं। जिसके पास दीया होता है गिरता तो नहीं। लेकिन अगर आपको वाकई में सहजयोग को अपने अन्दर पूरी तरह समाना है, तो पहले तय कर लो कि हम बेईमानी नहीं करेंगे किसी भी तरह। पैसा कमाना ही इस दुनिया में धन्धा रह गया है। उससे क्या होता है? कोई उनको याद भी नहीं करता। अगर आप अपने देश को प्यार करते हैं तो पहले आप सच्चाई रखो। नहीं तो झूठे आदमी के प्यार का क्या विश्वास? ये आपकी एक बड़ी मुश्किल है। क्योंकि आप देखते हैं हमारा पड़ोसी ऐसा तो हम भी वैसे हो जाएं, पर ऐसा क्यों नहीं सोचते हैं कि हम ऐसे हैं, तो उस पड़ोसी को क्यों नहीं अपने जैसे बनाएं? पहले तो आज कसम खालो कि हम कोई बेईमानी नहीं करेंगे और हम बेईमानों का साथ नहीं देंगे। झूठेपना अपने देश पे पता नहीं शाप है। बहुत से लोग हैं, सुबह से शाम तक दस झूठ बोले मगर उनका पेट ही नहीं भरता। अब तो आपकी गरीबी हट गई। काफ़ी ठीक है, खाना पीना सब है। कोई आप लोग भिखारी नहीं हैं। फिर झूठ क्यों बोलते हो? आज के दिन का निश्चय कर लो

कि हम झूठ नहीं बोलेंगे और अगर कोई झूठा होगा तो हम उसके साथ नहीं चलेंगे। हमारा उससे कोई सम्बन्ध नहीं होगा। इसमें बड़ा सुख है, बहुत आनन्द है। इससे आपको पता है कि झूठे आदमी नरक में जाएंगे और आप भी उसके पीछे-पीछे जाएंगे। आपको भगवान ने जागृत किया है। आपके अन्दर प्रकाश है। उस प्रकाश में देखो। अगर (.....अस्पष्ट) यह तय करलें कि हम झूठ नहीं बोलेंगे, चाहे कुछ हो जाए, चाहे हमारी गर्दन कट जाए। इस मामले में हिन्दुस्तानी बहुत अच्छे हैं। मैं जानती हूँ, लेकिन जब मैं बाहर सुनती हूँ तो बड़ा दु:ख होता है। अब जैसे रास्ता ये बनाया है, ये कोई रास्ता है? ये तो मुझे लग रहा था कहीं जंगल में जा रहे हैं। जो ऐसा कुछ दिखाई दे, तो तुम्हारा organization है, तुम सब मिल करके ये पूछो कि ऐसा रास्ता किसने बनाया? क्यों बनाया? किसने पैसे खाए? सारे आपके सहजयोगियों को एक हो जाना चाहिए और उस तरफ आप कोशिश करें कि ये अपने भारत वर्ष में जो भूत घुसा हुआ है उसको निकालें। कहीं भी जाओ तो लोग कहते हैं, ''भैया हिंदुस्तानियों पर विश्वास मत करो'' कितनी शरम की बात है! जिस पे सबसे ज्यादा विश्वास करना चाहिए वो तो हम हिन्दुस्तानी हैं। लेकिन हमारे यहाँ बड़े-बड़े सब लीडर हो गए, बड़े-बड़े महान लोग हुए, महान आदमी और हम उनको नहीं देखते कि उनका कितना नाम है, उनको लोग कितना मानते हैं! आपको भी मानते हैं, मैं जानती हूँ, पर आप चोरों के साथ मत खड़े हों। अगर आपको पता हुआ कि ये आदमी चोर है तो उसके घर खाना खाने नहीं जाओ। चोरों को बड़ी मुश्किल हो जाएगी। मैं आपसे बताती हूँ कि आप सब भगवान के पुलिसवाले हैं और जितने भी चोर आपको मिलें उनका पता रखो। आपके बच्चे उनमें भी हिम्मत भरो। अगर कोई गलत काम करते हैं और झूठ बोलते हैं तो आप उसका पता करो। अपने को ये देश, बहुत सारे सन्तों के साथ जागृत हुआ है और आप सब संत हैं। आपको कोई जरूरी नहीं कि आप झूठ बोलें। अरे एक बार खाना मिला तो क्या? खाना नहीं खाने से कोई मरता नहीं। हम लोगों को खाना-पीना मिलता है पर उस पर शराब लेते हैं। शराब लेने से तो दूसरे एक कदम हम चलते हैं जिससे हम नष्ट हो जाएंगे। शराब होने से हम कुछ ठीक नहीं हो सकते। अब जैसे अमेरिका है, वो एक एक नई बात निकालते हैं कि सोलह साल का बच्चा हो जाए तो अपना (.....अस्पष्ट) मतलब ये कि सब नौकर हैं। जब वो कुछ काम करते हैं, गाड़ी धोते हैं तो उनको पैसा देते हैं। और सोलह साल में वो क्या कहते हैं, ''कि साहब अब हम तो सोलह साल के हो गए। अब जाइए बाहर।'' मैंने ये देखा है हर जगह यह गरीब सोलह साल के बच्चे। हम लोग तो ये सोचते हैं कि वह सोलह साल का हो रहा है तो कहाँ जाएगा, क्या पढ़ेगा? वो तो सोलह साल का हो गया ना, उनको घर से निकाल देते हैं, माँ भी और बाप भी। यह Americans का कितने दिन चलने वाला है, देख लीजिए आप। नष्ट हो रहे हैं। एक दो aeroplane ले लेने से कोई बड़ा नहीं होता। आप कहाँ हैं, आपकी कौन सी औकात है?

हिन्दुस्तान ऐसा देश है कि सारी दुनिया को बचा सकता है, सारी दुनिया को। लेकिन उसमें सच्चाई आनी चाहिए। सच्चाई आना बहुत ज़रूरी है। हर मामले में सच्चाई। कोई झूठापना करने की ज़रूरत क्या है, मेरी समझ में नहीं आता! ज्यादा जितने अमीर लोग हैं, उनको तो पहले समझ लेना चाहिए कि अब आप अमीर हैं, अब चुप बैठिए। और कमाने की मत सोचो। ज्यादा पैसा मिलने से कौन आदमी खुश है, ये मैंने तो आज तक देखा नहीं। आप सहजयोगी हैं, आपके अन्दर प्रकाश है। प्रकाश में आप अपना रास्ता देखते हैं और रास्ता सत्य का है। चाहे आप मुसलमान हों, चाहे हिन्दू हों, चाहे ईसाई हों, कुछ फ़र्क नहीं पड़ता, आप सब इन्सान हैं। और अगर इन्सान में ईमानदारी नहीं तो वो बेईमान है। उसको कोई नहीं जानेगा। इसके बाद भी तो हमारी ज़िन्दगी है, वो कैसी होगी? ईमानदारी से अनेक लाभ हैं। सबसे तो बड़ा ये कि परमेश्वर का आप पे आशीर्वाद होता है। ऐसा आशीर्वाद होता है कि बैठे बिठाए, आप हैरान हो जाएंगे, बैठे बिठाए आपका सब ठीक हो जाता है। लेकिन अब हिन्दुस्तान में लोग पैसे भी हों, नहीं भी हों, सब पैसे के पीछे भागते हैं। और तो भी ग़रीब लोग बहुत हैं। इसीलिए आज के दिन उनकी भी दीवाली होनी चाहिए।

उनको भी खुश होना चाहिए, हम उसी देश के रहनेवाले हैं। पर हम तो अपने ही को धोखा देते हैं! बड़े होशियार हैं! इससे हमारे अन्दर अहंकार आ जाता है, और जब अहंकार आ गया तो फ़िर किसी भी तरह से कोई नहीं बचा सकता। अहंकार में आपको तो कैन्सर हो जाएगा। तो आप बचा नहीं सकते अपने को। अगर आपके अन्दर कैन्सर है तो आप बचा नहीं सकते, मैं नहीं बचा सकती। सच बात बता रही हूँ। आपका पहले अहंकार जो है, उसको आग में जला लीजिए और अहंकार है तो शर्म कीजिए। किस चीज़ का अहंकार है साहब? अपने देश में तो हर बात का। किसी ने बी.ए. पास कर दिया तो उसको अहंकार हो गया और उससे आगे कुछ किया तो उसको डबल अहंकार! किसी ने कुछ प्राप्त किया, इन्जीनियर हो गया, डॉक्टर हो गया तो उसको अहंकार! सो ये आज्ञा चक्र जो पकड़ जाता है वो सीधे आपको कहाँ ले जाएगा? नर्क में, और नर्क महा-भयंकर जगह है। आपके पास भगवान ने बुद्धि दी और अब आप पार हो गए हैं। उसके बाद भी अगर आप नर्क में जाना चाहें तो जाइए। आज तक किसी ने ये बात नहीं करी, कहा नहीं, आज का दिन जो है इसलिए शुभ है कि बहुत अच्छे काम हुए। सीताजी लौट आईं, रामचन्द्रजी के ज़माने में, कृष्ण के ज़मानें में, और जो बड़े-बड़े काम हुए सब पार लोगों से हुए। इसलिए पहली चीज़ आज निश्चय कर लीजिए आज, कि हम कोई भी बेईमानी तो करेंगे ही नहीं लेकिन कोई अगर करेगा तो हम उसको पकड़वा देंगे। पर मैं देखती हूँ इस देश में काले का गोरे से झगड़ा है, कोई किसी से झगड़ा। भारत वर्ष को चाहते हैं कि इसे अलग-अलग कर दें। उससे कोई फ़ायदा नहीं होने वाला। फ़ायदा काहे से होगा? जब आप ईमानदार रहो और तुम्हारा चरित्र अच्छा हो। अंग्रेज़ों से जो भी सीखा है उनसे सीखने लायक कोई चीज़ नहीं। वो तो सब बुरी हालत में हैं आज कल। लेकिन हमको अपने देश को बचाना है और सारी दुनिया को बचाना है। बड़ी जिम्मेदारी है। आपको पार कर दिया आपमें प्रकाश आ गया, तो भी आप गड्ढे में जाना चाहें तो कौन क्या करेगा? सबको मिल कर के कोशिश करनी चाहिए। मैं तो चाहती हूँ कि सहजयोगियों की एक कमेटी बनाएं कि वहाँ आपको कहीं भी चोरी पता चली तो कमेटी को बताओ और कमेटी क्या करती है देखें। इसी तरह से आपका नाम होगा, इसी तरह से आप बड़ी पॅजिशन में जाएंगे। तो पहली तो चीज़ है न आप बेईमान बनें, और न किसी को बनने दें। ये बहुत ज़रूरी है, आपके देश पे बड़ा कलंक है। तेल में मिलावट है, तो घी में मिलावट है। जहाँ देखो, वहाँ देखो सब लोग हँसते हैं हम पर! कोई विश्वास ही नहीं करता, हालांकि सबसे बढ़िया लोग हिंदुस्तान में हैं। इतने लोग कहीं पार ही नहीं हुए हैं। इन्होंने पुण्य नहीं कमाया। तो पैसा कमाने से अच्छा है पुण्य कमाओ। तो बहुत गरीब लोग हैं, उनको देखो। तो आज का दिन बड़ा शुभ है और आनन्द का दिन है, किसलिए? इस रोज़ हमको स्वर्ग मिला और हम स्वर्ग में ही रहना चाहते हैं। पर स्वर्ग में डरपोक लोग नहीं जा सकते। डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। अरे दो पैसे अगर कम मिले या ज्यादा मिले तो इतनी कौनसी आफ़त आनेवाली है? सब लोग रईस हो गए हैं, मैं देखती हूँ न, मैं यहाँ सत्तरह-अठारह साल से आ रही हूँ। पहले से आप सब लोग रईस हो गए हैं। पहले से अब हालत ठीक हो गई है। पर सुबह से शाम बेईमानी, बेईमानी, बेईमानी। तो रास्ता बना हुआ है। बस आज कसम खालो कि हम कोई बेईमानी नहीं करेंगे और अगर कोई होगा तो हम सब मिलकर के उसको oppose करेंगे। सहजयोग आपको क्यों दिया? पार क्यों कराया? इसलिए कि आप प्रकाश डालें। आप ही के अन्दर प्रकाश नहीं होगा तो बाहर क्या प्रकाश डालेंगे आप? और प्रकाश डालके देखें कि हम बेईमानों को मदद कर रहे हैं? कुछ नहीं होता अगर दो पैसे कम कमाएँ या ज्यादा कमाएं। अगर आप ईमानदार हैं तो आपको भगवान मदद करते हैं। अपने देश में लोग इतने क्यों मरते हैं? और कहीं नहीं मरते। उसका कारण है कि नर्क में जाना है न। तो ये जान लीजिए आप अगर बेईमानी करेंगे तो पहला कदम तो आपका नर्क में हो गया और दूसरा झूठ बोलने की कोई ज़रूरत ही नहीं है। आप सच बोलिए। जो आदमी सच बोलेगा वो एक अनोखा, वो अगर सहजयोग करे तो भव्य होगा। जैसे आज आप सूफ़ी को याद कर रहे हैं, तब लोग आपको याद करेंगे। काम कुछ करना नहीं

है, सिर्फ़ बेईमान जो हैं उनको पकड़ो, ज़रूरी है। यहाँ लोग झगड़ा कर रहे हैं कि जमुनाजी में कचरा मत फेंको, ये नहीं फेंको। अब ये भी बताना पड़ता है। मैं इतने देशों में घूमी हूँ कहीं भी कोई नदी में कचरा नहीं फेंकता। तो इतने आलसी क्यों हो? यहाँ इन्तज़ाम कितना है कि कचरा आप muncipality को दे दीजिए, कहीं कर दीजिए। पर आप खुद ही कचरा हैं, तो फिर आप क्या करेंगे? सब लोग सोचो मन में और निश्चय करो आज, बड़ा अच्छा दिन है आज का, बड़ा अच्छा दिन है कि हम न तो बेईमानी करेंगे और न ही हम बेईमानों को मानेंगे। हमने ऐसे लोग देखे हैं कि जो खुद बेईमान नहीं थे और बेईमानो के घर जाते नहीं थे, उनसे कोई मतलब नहीं रखते थे। क्योंकि वो अपना तो हित करते ही हैं पर सारे देश का हित करते हैं। तो आप सहजयोगी हैं, आपको चाहिए कसमें खालो कि हम कोई बेईमानी कभी करेंगे नहीं। आप सिर्फ़ पहचान लीजिए कि कोई बेईमान है और सिर्फ़ आप अपने अन्तरआत्मा से कहिए कि बेईमान है, और सहजयोगी, अगर बारह सहजयोगी भी मिल जाएँ और सब मिलकर जानलें कि ये आदमी बेईमान है, तो परमात्मा तुम्हारे साथ है। थोड़े रईसों से ये देश का भला नहीं हो सकता। लेकिन ईमानदारों से होगा। तो सबसे बड़ी चीज़ हमारे ऊपर कलंक ये कि बेईमान हैं। और जो सहजयोगी है वो तो बेईमान हो ही नहीं सकता, ये मेरा विश्वास है। हमको सब एक होना चाहिए। सब झगड़े छोड़ दीजिए और ये कि हम ईमानदार लोग हैं। हिन्दुस्तान का नाम, बहुत नाम बदनाम है, इसलिए आज से वचन लो कि हम कोई बेईमानी नहीं करेंगे और दूसरे बेईमान अगर हो तो हम सब मिलकर उसका पीछा करेंगे। दूसरे दिन उसकी नींद भाग जाएगी। पर बहुत बढ़ गई है, हम तो आपसे कह रहे हैं कि हम तो हैरान हैं, हर चीज़ में बेईमानी, हर चीज़ में बेईमानी। पहले ये छोटी-छोटी बात में Outcast बनाते थे और छोटीछोटी चीज़ों में अपने को अलग करते थे। लेकिन हमारा देश इतना ईमानदार रहा, ऐसे ऐसे गुण थे, वो हम क्यों भूल गए? कहाँ चले गए? हर जगह मैं देखती हूँ कि बेईमानी। हर कदम पे बेईमानी है। हमारे यहाँ 'बच्चों' को सिखाओ कि तुम बेईमान मत बनो। अगर हैं, मर रहे हैं, भूखे मर रहे हैं तो उसका इन्तज़ाम हो सकता है, पर अगर ईमानदार हैं तो और अगर ईमानदारी नहीं है तो परमात्मा तो क्या, आपको कोई मदद नहीं करेगा। दुनिया भर की बीमारियाँ लग जाएंगी। ऐसे हमारे देश के बहुत tradition अच्छे हैं बहुत। शराब पिएंगे, दारू पिएंगे, बताइए! यहाँ क्या आप बेवकूफ़ बनने के लिए आए हैं? और जो करते हैं उनसे दोस्ती छोड़ो। उनको मदद मत करो। मैंने यह देखा है कि कोई आदमी शराब पीता है तो लोग उसके यहाँ आते हैं और वो भी शराब पीते हैं। लेकिन आपको अगर पता हुआ कि ये आदमी ऐसा है, ये पता हुआ कि ये आदमी बेईमान है, तो आप उसके घर खाना छोड़ दो। उससे कोई मतलब नहीं है। अपने देश का हमें भला करना है, क्योंकि भगवान ने हमें light दे दी। उस light में देखो। उसकी शक्ति बहुत ज़बरदस्त है। तुम अगर यही सोच लो कि जिसने बेईमानी करी है देश से, उसको भगवान देखेगा, बस बहुत है! लेकिन आप बहरे हो जाते हैं, आपको समझ ही में नहीं आता! ऐसा आदमी कभी कुछ अच्छा नहीं कर सकता, न कभी देख सकता है। पता नहीं कैसे वो बेशरम जीते हैं? यह मुझे पता नहीं, पर जीते हैं। और इसीलिए आज का एक सन्देश आपको है कि आज ये व्रत ले लो कि हम कभी भी कोई बेईमानी नहीं करेंगे। और अगर कोई बेईमान होगा तो हम उसको मदद नहीं करेंगे। बस, काफ़ी है। अपने देश में और भी realized souls आएंगे। पर ऐसे बेईमान देश में कौन आने चला? तो आज का एक ही सन्देश है कि आपके पास प्रकाश है और उस प्रकाश में आप चलो और वो तुमको शक्ति देगा। जो भी करना चाहो (.....अस्पष्ट)। देखिए, हमने अपनी स्वतन्त्रता को पाया है। स्वतन्त्र, स्व: को जानो ना।

अब मैं चाहती हूँ कि बहुत से बच्चे पैदा हों, इसलिए पहले सीख लो। आज का बड़ा दिन है। आज व्रत ले लो कि हम न तो बेईमानी करेंगे और ना ही बेईमानों के साथ होंगे, न उनसे डरेंगे। उनके साथ भगवान तो है नहीं। भगवान आपके साथ हैं। अगर आप (अस्पष्ट) हैं तो भगवान आपके साथ हैं। सारे लोगों ने तो इसी भारत भूमि में जन्म लिया था, इसलिए तो नहीं कि आपस में लड़ो मरो,

महामूर्ख। हम लोग लड़ते हैं, मरते हैं। कुछ लड़ने से फ़ायदा नहीं, लोगों को बताओ। अरे भाई क्यों लड़ते हो? तुमको क्या चाहिए? क्यों? आखिर क्या चाहिए तुमको? खाने को अच्छा है, पीने को अच्छा है। बस और क्या चाहिए? पर आज कल तो ये है कि भाई हमें ये कपड़े चाहिएं, हमें ऐसा घर चाहिए और ये नहीं, उसी के साथ कि हम जाएंगे नर्क। उस वक्त में वो जो सूफ़ी हो गए। वैसे आप सब सूफ़ी हैं, क्योंकि आपकी सफ़ाई हो गई है। अब सब लोग कविता लिखो, ईमानदारी की। ये बेईमानी तो जानी चाहिए, पहली चीज़ और दूसरी बहुत सी बातें हैं जो ठीक होनी चाहिएं। लेकिन सबसे पहले तो बेईमानी मत करो। कोई भारतवर्ष में इतना ग़रीब नहीं कि उसको बेईमानी करना पड़े। हम ये कह रहे हैं कि हमारे देश पे कलंक है उसको मिटाना चाहिए। और आप सहजयोगी हैं, आप कर सकते हैं। आपके पास प्रकाश है। प्रकाश से आप सब जगह light फैला सकते हैं और सबको हिम्मत दें कि ठीक है। ख़ासकर आप में जो young लोग हैं, दोस्त हैं, वो ये सोचो कि क्या ईमानदारी का काम आप कर सकते हैं। अब लग गए कि जमुनाजी में यह मत फेंको। ठीक है, लेकिन वो इतनी ज़रूरी चीज़ नहीं है। ज़रूरी चीज़ है एक अपने ईमान को खोना। और इसीलिए आज का दिन बड़ा शुभ माना जाता है हर जगह। जगह-जगह में light लगाई जाती हैं। सब कुछ होता है और अगर ये हम नहीं कर सकें तो सहजयोगी होने से फ़ायदा क्या? सबसे ज़्यादा सहजयोगी हिन्दुस्तान में हैं। सबसे ज़्यादा। और उसके बाद रशिया (रूस) में। अब रशियन लोग बहुत ही ज़्यादा नम्र हैं। वो चोरी चकारी नहीं करते। पता नहीं क्यों? हमारे यहाँ कम्यूनिज़्म आ जाए तो शायद हम लोग भी वैसे हो जाएं। पर वो कोई बात बड़ी ऊँची नहीं है। ज़बरदस्ती कोई कुछ करे, वो अच्छा नहीं है। हम अपने पे ज़बरदस्त हो जाएं। तय कर लीजिए, आज यह निश्चय कर लीजिए आज बड़ा अच्छा दिन है, कि न तो हम बेईमानी करेंगे और न ही दूसरे को करने देंगे। आपका देश बहुत समृद्ध हो जाएगा। और देश क्या हैं, मैं देख चुकी हूँ सब देश। बेकार लोग हैं। पर हमारे देश में लोगों में अब भी बहुत ज़्यादा धर्म है। हमारे यहाँ धर्म खत्म हो चुका, जब बेईमान लोग इतने ज़बरदस्त हो गए हैं। तो आज एक ही संदेश है कि 'न तो हम बेईमानी करेंगे और न ही किसी को करने देंगे।'

लेकिन यहाँ के लोग इस मामले में बहुत tolrent हैं, सहते हैं। सबसे बड़ी यही गलती है। जब आपने प्रकाश पाया है तो आप क्यों डरते हो? आपको क्या ज़रूरत है डरने की? इसलिए मैं आज आपसे विनती करती हूँ कि हिम्मत से काम लो। और अब एक स्वतन्त्रता हो गई। स्व का तन्त्र आप पाएंगे। आपने पाया है लेकिन उसको इस्तेमाल करो। आज आप इतने लोग यहाँ आए हैं। मैंने इतने कभी नहीं देखे थे दिल्ली में। सो आज सब लोग यही मन में निश्चय कर लें कि हम लोग किसी बेईमान को मानेंगे ही नहीं और सब राक्षस भी ये इसीलिए जन्म लेते हैं क्योंकि हमारे अन्दर कुछ है ना ऐसा कि वो सोचते हैं कि वो हमें मान लेंगे। हिंदुस्तानियों को कभी नहीं मानना चाहिए और फिर जो पार हैं उसको तो कभी भी नहीं। अपने देश पे एक बड़ा लाँछन है सब जगह। ये बात सच नहीं है, हिन्दुस्तान में बहुत लोग हैं ईमानदार, बहुत। लेकिन ये बात सच नहीं है। पर ये बात मैंने देखी है, झगड़ा करेंगे, यह ज़मीन हमारी, ये ज़मीन तुम्हारी। अरे जो आपका है वो है 'स्वराज्य' स्व का राज्य। स्व का राज्य होगा, तभी होगा जब आप वाक़ई में स्वतन्त्र हो जाएं। किसी से डरने की ज़रूरत नहीं। किसी को कुछ कहने की ज़रूरत नहीं। इतने लोगों को देखकर मैं तो हैरान हो गई। मैंने कभी दिल्ली में इतने लोग देखे नहीं थे। तो आपसे जो विनती यही है कि आज इतने शुभ दिन पर निश्चय कर लें कि हम बेईमानी तो करेंगे नहीं, चाहे हम मर जाएं। दस साल में बहुत अपना देश ख़राब हो गया है। तुम लोग इतने सहजयोगी हो, तुमको किसका डर है? डरने की कौन सी बात है? सबके पीछे परमात्मा खड़े हुए हैं। देखिए सूफ़ियों को पता हुआ कि परमात्मा हमारे पीछे हैं तो वो सब उन्होंने दुनिया भर की बेकार की चीज़ें हटा दी, पर सब नहीं, कुछ सूफ़ियों ने। तो ऐसा आपको सबको करना चाहिए। मेरे ख़्याल से आज का यही सन्देश है कि अब आप ना तो खुद चोर हों और न ही चोरों की मदद करो, पर मैं देखती हूँ पेपर में कि और और चीज़ों के लिए

झगड़ा है। जाति-पाति पे झगड़ा है। अरे बाबा, इस देश को तुमको बचाना है कि डुबाना है? बड़ी ज़िम्मेदारी है आपकी। आप कलयुग में पैदा हुए हैं इसलिए इस कलयुग को बदलना है और हज़ारों में आप पार हैं। इतने लोग तो कहीं दुनिया में पार नहीं हुए। इसलिए आपसे फिर फिर मैं बार-बार कहूँगी कि तुम सच्चाई पर खड़े रहो, मैं तुम्हारे साथ हूँ और भगवान भी तुम्हारे साथ है। भगवान भी तुम्हारे साथ है। तो सबसे बिनती है कि आज अपने अन्दर ये ठान लो कि हम कोई चोरी चकारी चलने नहीं देंगे। जहाँ पता होगा वहाँ हम लड़ेंगे। पर मेरे ख़्याल से लोग क्या शराब पी गए कि क्या? इस प्रकाश में आपने क्या पाया? हिम्मत, और हिम्मत से लड़ो। जो गलत चीज़ है इस देश की वो हटानी है। बहुत बदनाम है। और भी बहुत बातें है पर सबसे बड़ी बात यही है कि पहले तो ईमानदारी ही नहीं तो तुमको भगवान कैसे मदद करेगा? पैसे पाना कोई भगवान की मदद नहीं है। धर्म को पाना, और तुमने पाया है। इतने लोग तो कोई सहजयोगी हैं ही नहीं दुनिया में। और सहजयोगी ऐसा काम करते भी नहीं हैं। पर मैं इसलिए बता रही हूँ कि यहाँ का atmosphere खराब है। और हमलोग इतने बदनाम हैं हर जगह। सब है आपके पास, खाने-पीने को है, कपड़े लत्ते हैं, और क्या चाहिए? आप सिनेमा देखो, ये देखो, इतना तो पैसा है। पर ये पैसे की बीमारी जो है, ये पहले जानी चाहिए। मुझे पूर्ण आशा है कि मेरी आज की बात को आप ध्यान से सुनेंगे। और आज से कसम खालें कि हम तो बेईमानी करेंगे ही नहीं लेकिन जो दूसरे भी करते हैं उसका हम विरोध करेंगे। यह सबसे बड़ी बात समझ लो कि आज अपने देश को ईमानदारी चाहिए। इससे बढ़कर और कोई चीज़ नहीं। आपकी माँ है ईमानदारी। दस शर्ट की जगह एक शर्ट है तो क्या हुआ? ऐसे ही औरतों से कहो। हो जाएगा, बन जाएगा। आज का भाषण ज़रा अलग है, निराला है और तुम लोगों को पसन्द आया ये बड़ी कृपा है। सो धन्यवाद!

(मूल आडियो के अनुरूप)

त्रिदिवसीय दीवाली पूजा सेमिनार

दिल्ली, एन.सी.आर. (नोएडा)

9-11 नवम्बर 2007

9 नवम्बर 2007 : 9 नवम्बर शुक्रवार के दिन सेमिनार की सफलता तथा बाधा निवारण की कामना से हवन के साथ इस उत्सव का शुभारम्भ किया गया। सायंकाल शानदार संगीत कार्यक्रम हुआ जो देर रात तक चला। घोषणा की गई कि पूजा के लिए साक्षात् श्री महालक्ष्मी- परम पूज्य श्रीमाताजी- के 10 नवम्बर या 11 नवम्बर संध्या के समय आने की सम्भावना है। ये भी बताया गया कि पूजा 4.00 बजे सायं के बाद किसी भी समय आरम्भ हो सकती है। संगीत संध्या को देर रात तक दीपक वर्मा, डा. अरुण आप्टे, श्री राजेश, श्री मुखीराम, प. सुब्रमण्यम् तथा गुरुजी के साथ निर्मल संगीत सरिता के लताधुमाल, धनंजय धुमाल, छाया और श्याम जैन ने श्री चरणों में मनमोहक गीत, भजन और राग प्रस्तुत किए।

10 नवम्बर 2007 : शनिवार 10 नवम्बर प्रात: कार्यक्रम का आरम्भ युवाशक्ति सेमिनार से हुआ। बहुत सी आवश्यक सूचनाओं एवं गतिविधियों के बारे में बात की गई। इंटरनैट द्वारा सहज प्रचार-प्रसार के कारण सम्भावित हानियों के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। इस बात पर बल दिया गया कि विष्णुमाया के इस माध्यम से अच्छी- बुरी दोनों प्रकार की सूचनाएं जन-जन तक जा सकती हैं। अत: निष्कष निकाला गया कि इंटरनैट का उपयोग पूर्ण विवेक पूर्वक किया जाना चाहिए। अतिचेतन (Supra-conscious) गतिविधियों के कारण श्रीमाताजी के प्रवचनों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करने वाले लोगों से सावधान रहने के लिए सलाह दी गई। इंटरनैट उपयोग के लिए कुछ नियमाचरणों का भी वर्णन किया गया।

तत्पश्चात कारपोरेट सेक्टर में आत्मसाक्षात्कार कार्यक्रम करने के तरीकों पर बातचीत की गई तथा सहज मर्यादाओं के बारे में भी बताया गया। इस्लाम धर्म को मानने वाले लोगों में सहजयोग प्रचार-प्रसार करने के लिए बरती जाने वाली आवश्यक सावधानियों के विषय में भी चर्चा की गई। मेराज़, कयामा और कयामत आदि शब्दों के अर्थ विस्तारपूर्वक बताए गए।

ये भी व्याख्या की गई कि गैब्रील, जिन्हें हम श्री हनुमान के रूप में जानते हैं, पैगम्बर मोहम्मद को बुराक पर सात स्वर्गों से ले गए। हर स्वर्ग का एक देवदूत और पैगम्बर था जो यहाँ दैवी नियमों के अनुसार शासन करता था। गैब्रील मोहम्मद को छठे स्वर्ग तक ला पाए और यहाँ उन्हें कहा कि वे इससे आगे नहीं जा सकते हैं और अन्तिम स्वर्ग में उन्हें स्वयं प्रवेश करना होगा। प्रस्तुति इतनी

प्रभावशाली थी कि योगियों के मन में उठने वाले बहुत से प्रश्नों का उत्तर उन्हें स्वत: ही मिल गया।

प्रात: का कार्यक्रम समाप्त होते ही पूजा के लिए तैयार होकर आए योगियों और योगिनियों से पण्डाल भरने लगा और 25 हजार लोगों के बैठने के लिए पर्याप्त पण्डाल सायं 3.30 बजे तक पूरा भर चुका था। नए पुराने सभी सहजयोगी ध्यानमुद्रा में श्री महालक्ष्मी के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। समय बीतता गया और शाम को लगभग 6.50 पर मंच के पर्दे डाल दिए गए और कुछ रंग-बिरंगी आतिशबाजी चलाई गई, परम पावनी श्रीमाताजी के स्वागत के लिए चलाई गई आतिशबाजी के रंगों तथा आवाज से पूरा आकाश गुँजायमान हो उठा। सभी योगी अपने अपने स्थानों पर खड़े हो गए और मंच पर परम पावनी श्रीमाताजी का स्वागत किया। आशा की जा रही थी पारम्परिक सहजशैली में किसी भी क्षण पूजा आरम्भ होगी परन्तु पूजा भजन के स्थान पर 'श्री जगदम्बे आई रे' भजन के साथ श्रीमाताजी के 108 नाम आरम्भ हो गए। कण-कण से चैतन्य फूट पड़ रहा था। तभी मंच से घोषणा की गई कि संगीतकार मंच पर आकर संगीत प्रस्तुत करें। कुछ लोग आश्चर्यचकित थे परन्तु अधिकतर चैतन्य सागर में डूबे हुए थे। वातावरण में शीतलता बढ़ रही थी और स्पष्ट महसूस किया जा सकता था कि महामाया अपनी लीला कर रही हैं।

पूजा कार्यक्रम संगीत सन्ध्या में परिवर्तित हो गया था और मंच पर विराजमान परम पूज्य श्रीमाताजी अपने बच्चों को संगीत के माध्यम से आशीर्वादित कर रहीं थीं।

एक के बाद एक संगीतकार श्रीमाताजी के सम्मुख स्तुतिसंगीत प्रस्तुत कर रहे थे। ऐसा लगता था मानो दैदीप्यमान मुख से श्रीमाताजी अपने बच्चों की आत्मा में झाँक रहीं हों। संगीत प्रस्तुति के अन्त में वे कलाकारों को प्रोत्साहित करतीं। लगभग साढ़े आठ बजे संगीत प्रस्तुति सम्पन्न हुई और अचानक परम पावनी माँ ने माइक्रोफोन देने के लिए कहा। बहुत समय के बाद श्रीमाताजी के मुख से आवाज़ सुनने पर पूरी सामूहिकता ने प्रफुल्लित हृदय से जयघोष किए और बहुत से योगी-योगिनियों की आँखों से झर-झर आँसू बहने लगे।

सभी को दीवाली की मंगलकामना करते हुए श्रीमाताजी ने हिन्दी भाषा में अपना सम्बोधन आरम्भ किया। उनका संदेश 60 से भी ज़्यादा मिनट तक चला। सहज इतिहास का शायद यह सबसे लम्बा प्रवचन था। उनका कहा गया हर शब्द मन्त्र था। श्रीमाताजी ने प्राय: अपने शब्दों को तीन चार बार दोहराया ताकि सभी लोग उनके सन्देश के सार को भलीभांति समझ सकें।

सन्देश का सार सम्भवत: सहज-जीवन में अपनी नैतिक जिम्मेदारियों तथा कर्तव्यों को समझना था। ऐसा लग रहा था कि अपने प्रवचन में श्रीमाताजी हमारे अन्तर्निहित अष्टलक्ष्मियों के गुणों की व्याख्या कर रहीं थीं। गृहलक्ष्मी के रूप में श्रीमाताजी की मानवमात्र के हित की चिन्ता की पूरी सामूहिकता साक्षी थी।

'अहंकार' विषय से उन्होंने अपना प्रवचन आरम्भ किया। मानो सूक्ष्म रूप से वे सामूहिकता के आज्ञा चक्र को स्वच्छ करने के लिए मन्त्र उच्चारण कर रहीं थीं! उन्होंने बताया कि 'अहं अन्तत: उन्हें अंधकार की ओर ले जाता है और इस अन्धकार में अच्छाई देख पाना सम्भव नहीं है। इसके कारण लोग भ्रष्टाचार और बेईमानी का जामा ओढ़े दुष्टता के जाल में फँसते चले जाते हैं। हमारा उद्धार करने के लिए ईसामसीह सूली पर चढ़ गए, फिर भी हम उनके सन्देश को नहीं समझते। हमें कभी भी बेईमानी स्वीकार नहीं करनी चाहिए और असत्य से बचना चाहिए। झूठ बोलने वाले लोग सीधे नर्क में जाएंगे और वहाँ पर बहुत लम्बे समय तक कष्ट भोगना होगा। माँ के रूप में मैं आपको बताती हूँ कि नर्क बहुत भयानक है, वहाँ पूर्ण अन्धकार है। आपके हृदय में प्रकाश प्रज्जवलित हो गया है, इस प्रकाश में आप केवल अच्छाई को देखें।

यद्यपि श्रीमाताजी ने नैतिकता, चरित्र तथा सत्यसार पर बल दिया परन्तु उनके तेजोमय मुख एवं हर भावभंगिमा से करुणा टपक रही थी। अपने बच्चों से उन्हें बहुत आशाएं थीं। अपने बच्चों से उन्होंने वचन माँगा कि सभी मिलकर झूठ, बेईमानी, भ्रष्टाचार और बुरा करने वालों का मुकाबला करें। इस कार्य को करने के लिए सहजयोगी समितियाँ बनाएं और सरकार को इनके विरुद्ध कारवाई करने

के लिए विवश करें। उन्होंने कहा कि इस कार्य को करने के लिए सहजयोगी 10-10 लोगों का समूह भी बना सकते हैं। श्रीमाताजी ने कहा कि आप आत्मसाक्षात्कारी हैं और हृदय के प्रकाश में आप बेईमान लोगों को पहचानकर उनके विरुद्ध कारवाई कर सकते हैं। सरकार को उनके नाम बताकर उन्हें दण्डित करवाएं। चेतावनी देते हुए श्रीमाताजी ने कहा कि 'बेईमानों के साथ आपको सम्बन्ध नहीं रखने। आपको उनके घर तथा संगीत में भी नहीं जाना चाहिए।' स्वत: ही वे रास्ते पर आ जाएंगे। अब आपके अन्दर असत्य और बेईमानी को पहचानने के लिए प्रकाश है और सर्वशक्तिमान परमात्मा का आशीर्वाद आपके साथ है। अत: घबराएं नहीं। स्वर्ग कायरों और डरपोक लोगों के लिए नहीं है। बेईमानी को बरदाश्त करते हुए बेईमानों तथा गलत गतिविधियों का विरोध न करने वाले भी नर्क में जाएंगे।

भारत की वर्तमान अवस्था तथा देश में क्षीण होती हुई नैतिकता पर प्रकाश डालते हुए श्रीमाताजी ने योगियों को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि गर्वपूर्वक आपको घोषणा करनी है कि आप भारतीय हैं और आपको परमात्मा की शक्ति और प्रेम का आशीर्वाद मिल चुका है। इस आशीर्वादित देश में आपको उच्च चारित्रिक मूल्यों के साथ रहना चाहिए 'परन्तु आप सबको क्या हो गया है। लोगों में हर समय झूठ बोलने की आदत पड़ गई है।' 'कभी आप इन्हें आश्रय न दें। उन्होंने कहा कि हमारे अन्दर से सत्य के सिवाए कुछ नहीं निकलना चाहिए। माँ के रूप में जब उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला तो उनके बच्चे क्यों असत्य को आश्रय दें?

तत्पश्चात् विश्वभर में बच्चों और माता-पिता के पारस्परिक सम्बन्धों के बारे में बताते हुए श्रीमाताजी ने कहा कि दुख की बात है कि अमरीका जैसे देश में 16 वर्ष की आयु के बाद अपने भविष्य का निर्णय करने के लिए बच्चे को घर से निकाल दिया जाता है परन्तु भारतीय संस्कृति में हम ऐसा सोच भी नहीं सकते। ऐसा करने की अपेक्षा बच्चे के 16 वर्ष का होने पर पिता उसके भविष्य की योजनाएं बनाने पर और अधिक ध्यान देता है। ''आपको अवश्य अपने बच्चों की देखभाल करनी चाहिए।'' राष्ट्रीय धर्म के बारे में बताते हुए श्रीमाताजी ने कहा कि व्यक्ति को अपने राष्ट्र पर गर्व होना चाहिए। ये बात भारतीय लोगों को विशेष रूप से कही गई। उन्होंने कहा कि ''भारत महान देश है जिसमें साक्षात्कारी लोगों की विशालतम सामूहिकता है। निश्चित रूप से ये आशीर्वादित देश है।''

रूस के बारे में बोलते हुए श्रीमाताजी ने कहा कि ''रूस एक महान देश है और सम्भवत: साम्यवाद ने वहाँ के लोगों को सत्यनिष्ठ बना दिया है। वो इतना अधिक झूठ नहीं बोलते। भारत में भी यदि साम्यवाद होता तो शायद यहाँ भी चीज़ें बिल्कुल भिन्न होतीं और लोग आज की तरह से इतना अधिक झूठ नहीं बोलते।

श्रीमाताजी ने कहा कि इतने सारे सहजयोगियों को देखकर वे अत्यन्त प्रसन्न हैं। ये बात सत्य है कि विश्व के बहुत से गरीब देशों के मुकाबले भारत की स्थिति में बहुत सुधार हुआ है। यह बात सत्य है कि भारत के लोग (विशेषरूप से सहजयोगी) पहले की अपेक्षा बहुत समृद्ध हुए हैं। अब उन्हें धन के पीछे नहीं भागना चाहिए। उन्हें चाहिए कि देश से बेईमानी को निकाल फेंकने के कार्य में जुट जाएं। अधिक धन की लालसा में व्यक्ति बेईमानी, असत्य और भ्रष्टाचार में फँस जाता है। अत: अब सहजयोगियों को दिव्य प्रकाश में नैतिक जीवन गुज़ारना चाहिए और झूठे तथा बेईमान लोगों की निन्दा करनी चाहिए।

श्रीमाताजी ने कहा कि हमें बेईमान और बुरे लोगों पर अवश्य विजय प्राप्त होगी क्योंकि परमात्मा का आशीर्वाद हमारे साथ है। एक बार फिर अहं के विषय में बोलते हुए श्रीमाताजी ने कहा कि कैंसर रोगी अपने आज्ञा चक्र को स्वच्छ करें और अहं से मुक्ति पा लें। सत्य की अग्नि में अपने अहं की आहुति दे दें, स्वयं को और विश्व को पहचानें।

बेईमानी और भ्रष्टाचार का एक उदाहरण देते हुए श्रीमाताजी ने कहा कि जिस सड़क से अभी उनकी गाड़ी आई है वह इसे बनाने और बनवाने वाले लोगों की बेईमानी का जीता जागता सबूत है। ऐसे लोगों को दण्डित करने में सरकार की मदद की जानी चाहिए।

तम्बाकू, पानमसाला और शराब के उपयोग

की भी उन्होंने निन्दा की। इन आदतों में फँसे लोग सीधे नर्क में जाते हैं, उनके लिए स्वर्ग में कोई स्थान नहीं है।

पर्यावरण की समस्या के बारे में बताते हुए श्रीमाताजी ने यमुनानदी में कूड़ा डाले जाने की निन्दा की। उन्होंने कहा कि ये अत्यन्त भयानक बात है तथा हमें चाहिए कि सरकार और नगरपालिका की इस बुराई को रोकने में मदद करें।

प्रकाश के त्यौहार दिवाली के अन्य पक्ष पर बताते हुए श्रीमाताजी ने कहा कि श्री सीताजी का जन्म इसी दिन हुआ था। अत: व्यक्ति को अपने आन्तरिक चारित्रिक मूल्यों का सम्मान करना चाहिए।

धनलोलुपता पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि अपने लिए उन्हें कोई पैसा नहीं चाहिए। ''आप मेरे इतने सारे बच्चे हो, मुझे धन की क्या आवश्यकता है?'' उन्होंने कहा। आपके होते हुए मुझे वास्तव में अपने लिए कोई पैसा नहीं चाहिए। श्रीमाताजी ने पुन: दोहराया कि पहली बार इतने सारे सहजयोगियों को देखकर मैं आश्चर्य चकित हूँ।

अपने सारगर्भित प्रवचन में श्रीमाताजी ने भारत में प्राय: उपयोग किए जाने वाले देशभक्ति पूर्ण दो शब्दों के बारे में बताया- एक है 'स्वराज' - स्व अर्थात 'अपनी आत्मा' और 'राज' अर्थात साम्राज्य और दूसरा शब्द है- 'स्वतन्त्र' - 'स्व' अर्थात आत्मा और 'तन्त्र।' जब हम स्वतन्त्र शब्द बोलते हैं तो इसका अर्थ है 'आत्मा का तन्त्र'। राष्ट्र का अर्थ समझने के लिए पहले व्यक्ति को स्व को समझना होगा। स्वराज की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि अपनी सांस्कृतिक धरोहर का अब हमें प्रतिनिधित्व करना चाहिए। अपने 80 मिनट के प्रवचन के बारे में उन्होंने कहा कि आज का भाषण निराला है।

श्रीमाताजी के प्रस्थान से पूर्व राष्ट्रीय समन्वयकों ने उनसे पूजा स्वीकार करने के लिए प्रार्थना की और उन्होंने कहा कि घोषणा कर दो कि कल 3.00 बजे पूजा होगी। इस विशेष पूजा की घोषणा से पूरी सामूहिकता में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।

11 नवम्बर 2007 : रविवार 2.30 बजे ही पण्डाल 20-25 हजार योगियों से भर गया, सभी योगी पूजा के लिए मंच के समीप स्थान ग्रहण करना चाहते थे। साढ़े तीन बजे तीन महामन्त्रों के साथ ध्यान का आरम्भ हुआ और छ: बजे सायं तक भिन्न कलाकारों ने संगीत प्रस्तुत किया। तब घोषणा की गई कि पूजा लगभग 8.00 बजे आरम्भ होगी। 8.20 बजे पुन: घोषणा की गई कि श्रीमाताजी का निवास हमारे हृदय में है और आज हम सब श्रीमाताजी की निराकार में पूजा करेंगे क्योंकि वे प्रतिष्ठान में आराम कर रहीं हैं और उन्होंने सामूहिक पूजा करने का आदेश दिया है।

स्वागत भजन 'स्वागत आगत स्वागतम' के साथ सायं 8.20 बजे महालक्ष्मी पूजा का आरम्भ हुआ। पूजा प्रार्थना गीत 'विनती सुनिए, आदिशक्ति मेरी' गाया गया। 'श्री गणेश अथर्वशीर्षम' और 'हेमजा सुतम भजे' के साथ 108 नन्हें गणेशों ने श्री चरण धोए। बच्चों की लम्बी पंक्ति होने के कारण श्री गणेश के दो और भजन गाए गए। तत्पश्चात् 'श्री महालक्ष्मी स्तोत्रम्' के साथ श्री महालक्ष्मी पूजा आरम्भ हुई। ऐ गिरी नन्दिनी' और 'महामाया महाकाली' भजनों से देवी पूजा की गई, हासत आली निर्मल आई के साथ देवी का शृंगार हुआ और ओटी अर्पण और अन्तत: 'विश्ववन्दिता' गाया गया। 9.50 बजे आरती की गई और तीन महामन्त्रों के साथ पूजा सम्पन्न हुई। पूरे वातावरण के कण-कण से चैतन्य प्रवाहित हो रहा था।

पूजा के पश्चात् कुछ मिनट ध्यान का आनन्द लिया गया तत्पश्चात् 'जोगवा' तथा कई अन्य भजनों के साथ पूजा समिति के कुछ सदस्यों ने नतमस्तक होकर मंच पर विराजमान निराकार महालक्ष्मी के सम्मुख नृत्य किया। पण्डाल में उपस्थित सभी योगी/योगिनियाँ अपने स्थानों पर खड़े हर्षपूर्वक नाच रहे थे। सर्वत्र चैतन्य का साम्राज्य था और पूरा दृश्य स्वर्गीय था।

श्रीमाताजी विश्व भर के हम आपके सभी सहजयोगी बच्चे अपना हार्दिक आभार प्रकट करते हैं कि आपने अपने चरणकमलों में श्री महालक्ष्मी पूजा स्वीकार की.....!

जय श्री माताजी

डा. सी.पी. श्रीवास्तव लिखित

लाल बहादुर शास्त्री-राजनीति में सत्य निष्ठ जीवन के उर्दू संस्करण का विमोचन

17 नवम्बर 2007

सर सी.पी. श्रीवास्तव द्वारा लिखित पुस्तक 'लाल बहादुर शास्त्री, राजनीति में सत्यनिष्ठ जीवन' के प्रोफेसर अब्दुल हक़ द्वारा किए गये उर्दू रूपान्तरण का विमोचन भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. हामिद अंसारी ने अशोका होटल नई दिल्ली, भारत, के कन्वेंशन हॉल में 17 नवम्बर 2007 शनिवार की संध्या को किया। समारोह का आयोजन परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी ट्रस्ट और मैसर्ज़ गलगोटिया पब्लिशर्ज़ ने किया। मेज़बानों सहित दिल्ली और नोएडा के सहजयोगियों की देखरेख में हुए इस समारोह में विशिष्ट अतिथियों सहित 1000 से भी अधिक मेहमान सम्मिलित हुए।

सुप्रसिद्ध अशोका होटल के प्रवेश द्वार की छवि दर्शनीय थी। प्रवेश द्वार से हाल तक का पूरा मार्ग फूलों से सजाया गया था। हॉल के वरांडे में अत्यन्त सुन्दर ढंग से सजाई गई मेज़ पर विमोचित पुस्तक के अंग्रेजी, हिन्दी और उर्दू संस्करण की बहुत सी प्रतियाँ रखी हुईं थीं। लगभग सवा दो बजे परम पूज्य श्रीमाताजी सर सी.पी. तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अशोका होटल पधारीं।

स्वागत कक्ष की सुन्दर सजावट देखते ही बनती थी। स्वागत कक्ष में भगवान गणेश की तीन मूर्तियाँ लगी हुईं थीं और हाथ में बाँसुरी लिए श्री कृष्ण की एक अत्यन्त सुन्दर चित्रकारी लगाई गई थी जिसमें श्रीकृष्ण के समीप खड़ीं राधाजी उन्हें अत्यन्त प्रेमपूर्वक निहार रही हैं। ऐसा प्रतीत होता था मानो श्रीमाताजी का स्वागत करने के लिए साक्षात श्री कृष्ण वहाँ खड़े हों और श्री राधा इस दिव्य स्वागत को प्रसन्नतापूर्वक देख रहीं हों। होटल पहुँचने पर श्रीमाताजी को उनके लिए सातवीं मंजिल पर आरक्षित किए गए विशेष स्वीट में ले जाया गया।

श्रीमाताजी के चरणकमलों की आरती उतारने और चरणकमलों में पुष्पार्पण करने के बाद अधिकतर सहजयोगी सायंकालीन समारोह का प्रबन्धकार्य देखने के लिए नीचे चले गए।

सायंकाल 4.00 बजते बजते पूरा सभागार विशिष्ट अतिथियों एवं सहजयोगियों से भर चुका था। केवल मीडिया के लोगों की कुछ सीटें खाली थीं। ठीक सवाचार बजे परम पूज्य श्रीमाताजी, सर सी.पी. तथा परिवार के अन्य सदस्यों को सम्मानपूर्वक हॉल में लाया गया। तुरन्त सभी कैमरों का मुख श्रीमाताजी की ओर घूम गया और उनकी करुणामयी मुखाकृति एवं प्रेम छलकाती आँखें मंच के दोनों ओर लगाए गए विशाल पर्दों पर दिखाई जाने लगी।

तत्पश्चात् सर सी.पी. को स्थान ग्रहण करने के लिए मंच पर आमंत्रित किया गया। लाल मुलायम मखमल के पर्दों से सजाया गया मंच का पृष्ठपट कन्वेंशन हॉल के सौन्दर्य को चार चाँद लगा रहा था। मंच पर विराजमान प्रतिष्ठित अतिथियों-जिनमें भारत के उपराष्ट्रपति श्री एम. हामिद अंसारी, हरियाणा राज्य के गवर्नर डा. ए.आर. किदवई, गलगोटिया पब्लिशर्ज़ के चेयरमैन, श्री लाल बहादुर शास्त्री के पुत्र श्री अनिल शास्त्री और सुनील शास्त्री मुख्य थे- को गुलदस्ते भेंट करने के साथ समारोह का शुभारम्भ हुआ।

अपने संक्षिप्त भाषण में सर सी.पी. ने पुस्तक विमोचन के इस समारोह को भव्यता प्रदान करने के लिए भारत के उपराष्ट्रपति का हृदय से धन्यवाद किया। पुस्तक के उर्दू रूपान्तरण के लिए उन्होंने प्रो. अब्दुल हक के प्रति भी आभार प्रकट किया तथा हरियाणा राज्य के गवर्नर श्री किदवई को पुस्तक का प्राक्थन लिखने के लिए विशेष रूप से धन्यवाद दिया। श्री शास्त्री के दोनों बेटों तथा विशिष्ट अतिथियों का स्वागत करते हुए सर सी.पी. ने श्री लाल बहादुर शास्त्री के साथ अपने कार्यकाल की स्मरणीय घटनाओं का उल्लेख किया। श्री शास्त्री की ईमानदारी, सत्यनिष्ठा एवं अदम्य साहस का उदाहरण देते हुए सर सी.पी. ने स्पष्ट कहा कि वे लाल बहादुर शास्त्री की समानता के दृष्टिकोण एवं हमारे धर्म निरपेक्ष देश के सभी धर्मों एवं जातियों के प्रति गहन सम्मान की भावना से अत्यन्त प्रेरित हुए। उन्होंने बताया कि श्री लालबहादुर शास्त्री की कूटनीतिक कुशलता और उनका चमत्कारिक व्यक्तित्व अद्वितीय है। उनके इन गुणों ने उस युद्ध काल की कड़वाहट में भी पाकिस्तान के भिन्न नेताओं के साथ उन्हें मित्रता एवं सामंजस्य स्थापित करने में सहायता की।

सर सी.पी. का भाषण इतना प्रभावशाली था कि बीच-बीच में माननीय अतिथि एवं दर्शकों की तालियों से हॉल का सभागार गूँज उठा। भाषण समाप्त होने पर सब लोगों ने खड़े होकर तालियाँ बजाकर उनका स्वागत किया। भाषण समाप्त करने से पूर्व सर सी.पी. ने परम पूज्य श्रीमाताजी को 'मेरी मोहतरमा, मेरी बीवी' सम्बोधित करते हुए उन्हें लालबहादुर शास्त्री पर ये पुस्तक लिखने के कठिन कार्य को पूर्ण करने का प्रेरणास्रोत बताया और उनके प्रति आभार प्रकट किया। उन्होनें कहा कि इसका सारा श्रेय श्रीमाताजी को है। सभी कैमरों का मुख श्रीमाताजी की ओर मुड़ गया और दो विशाल पर्दों पर उनका दैदीप्यमान मुख कुछ क्षणों के लिए सभी को दिखाई दिया। साधना दीदी ने उनके कान में जब इसके बारे में बताया तो वे मुस्करा उठीं। हरियाणा राज्य के गवर्नर माननीय डा. ए.आर. किदवई के भाषण के साथ समारोह आगे बढ़ा। उन्होंने प्रधानमंत्री के रूप में श्री लालबहादुर शास्त्री के जीवन के उच्च नैतिक मूल्यों की कुछ घटनाओं का वर्णन किया।

तत्पश्चात् भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम श्री एम. हामिद अन्सारी ने सर सी.पी. का धन्यवाद किया और लालबहादुर शास्त्री के जीवन के विषय में अपने व्यक्तिगत विचार व्यक्त किए। उन्होंने पुस्तक के लेखक का धन्यवाद किया और कहा कि पुस्तक के उर्दू संस्करण के माध्यम से विश्वभर के उर्दूभाषी लोग बीसवीं सदी के इस महान व्यक्तित्व को जान पाएंगे। उन्होंने व्यक्तिगत चारित्रिक मूल्यों की उस विशेष घटना का वर्णन किया जिसमें रेलमंत्री के रूप में लालबहादुर शास्त्री ने रेल दुर्घटना के विषय में जानकारी मिलते ही अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने इस घटना को पद की नैतिकता का स्मरणीय उदाहरण बताया। उनकी राष्ट्रीयता की भावना और उनके चरित्र का वर्णन करते हुए माननीय उपराष्ट्रपति ने आशा जताई कि देश के आज के राजनीतिज्ञ एवं पदाधिकारी भी लाल बहादुर शास्त्री के उच्च मानदण्डों को अपनाएंगे। भाषण अभी चल ही रहा था कि परम पूज्य श्रीमाताजी के भाई तथा भारत के अनुभवी राजनीतिज्ञ श्री एन. के.पी. साल्वे समारोह में पधारे और उन्हें श्रीमाताजी के साथ वाली कुर्सी दी गई। श्रीमाताजी की आँखों में भाई के प्रति प्रेम देखते ही बनता था।

तत्पश्चात् सर सी.पी. द्वारा लिखित पुस्तक 'लाल बहादुर शास्त्री' के उर्दू संस्करण का भारत के माननीय उपराष्ट्रपति ने विमोचन किया। चाँदी की तश्तरी में सुसज्जित पुस्तक विमोचन के लिए पेश की गई और सर सी.पी. की प्रशंसा उद्घोष से पूरा सभागार गूँज उठा।

पुस्तक के प्रकाशक गलगोटिया पब्लिकेशन के चेयरमैन श्री गलगोटिया ने आभाराभिव्यक्ति की। उन्होंने श्रीमाताजी, परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी ट्रस्ट और रूपान्तरकार के प्रति हार्दिक आभार प्रकट किया।

सभी उपस्थित सम्माननीय अतिथियों एवं योगियों को चाय नाश्ते के आमंत्रण के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

दिवाली के बाद, मानो भैयादूज के अवसर पर, श्रीमाताजी को अपने भाई के साथ अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा में देखना एक स्वर्गीय अनुभव था। सहजयोगियों ने परम पावनी माँ में उनके गृहलक्ष्मी तथा स्नेहमयी बहन रूप के दर्शन किए।

जय श्रीमाताजी

परम पूज्य श्रीमाताजी निर्मल प्रेम आश्रम (N.G.O.) में

ग्रेटर नोएडा- 22 नवम्बर, 2007, भारत

हमारी परम पावनी माँ श्रीमाताजी ने 22 नवम्बर दोपहर पश्चात एक बार फिर ग्रेटर नोएडा स्थित 'निर्मल प्रेम आश्रम' के बच्चों को आशीर्वादित किया। आश्रम के बच्चों, अध्यापिकाओं, अधिकारियों, थोड़े से सहजयोगियों तथा आश्रम के आयोजकों ने हृदय से स्वागत-आगत भजन तथा आरती गाकर परम पूज्य श्रीमाताजी का स्वागत किया।

निर्मल प्रेम आश्रम का प्रवेश सभागार रंगबिरंगी रंगोली और फूलों से सजाया गया था। मध्य सभागार तक जाने वाले मार्ग पर गुलाब की पंखुड़ियाँ बिछाई गई थी। ऐसा प्रतीत होता था मानो निराश्रित महिलाओं तथा यतीम बच्चों की उस शरणस्थली में प्रेमलहरियाँ प्रवाहित होने लगीं हों।

सफेद साड़ी और हल्के रंग की शाल पहने करुणामयी श्रीमाताजी निर्मल प्रेम आश्रम के बच्चों के सम्मुख परमेश्वरी माँ के रूप में प्रकट हुईं। बांसुरी बजाते हुए श्री कृष्ण और गोपियों संग उन्हें देखती हुईं राधा का चित्र हॉल की सज्जा को बढ़ा रहा था। आश्रम के बच्चों के मुख से फूटता हुआ तेज श्रीमाताजी के प्रेम को प्रतिबिम्बित कर रहा था। बालसुलभ दृष्टि से अत्यन्त अनुशासित ढंग से बच्चे हर चीज़ को देख रहे थे और श्रीमाताजी के प्रेमकेन्द्र बनने के प्रयत्न में लगे हुए थे। 80 से 100 योगियों की सामूहिकता के बीच श्रीमाताजी ने बच्चों द्वारा गाए गए सामूहिक भजनों का आनन्द उठाया। हर भजन के बाद श्रीमाताजी ने तालियाँ बजाकर बच्चों को प्रोत्साहित किया और उनकी श्रद्धा को सराहा। उनकी करुणा का पारावार न था। बच्चों द्वारा सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किए जाने पर

श्रीमाताजी गद्‌गद् हो उठीं।

तत्पश्चात् श्रीमाताजी को आश्रम तथा वहाँ की कार्यशैली दिखाने के लिए ले जाया गया। श्रीमाताजी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए व्यवस्था करने वालों और अधिकारियों की हृदय से प्रशंसा की और कहा कि आश्रम में रहने वाले इन बच्चों की सुखसुविधाओं के लिए ये लोग अथक कार्य कर रहे हैं। आश्रम देखते हुए श्रीमाताजी ने स्वयं बच्चों से पूछा कि उन्हें वहाँ की कौन सी चीज़ वास्तव में अच्छी लगती है? एक नन्हें शिशु के सहज उत्तर ''खाना, श्रीमाताजी!'' ने सबको हैरान कर दिया। इस बालसुलभ उत्तर ने सभी के हृदय खोल दिए। श्रीमाताजी इस प्रकार मुस्करा रहीं थीं मानो कह रही हों, 'आखिरकार स्वप्न साकार हो गया है।'

आश्रम के बच्चों ने श्रीमाताजी को हाथों से बनाए उपहार भेंट किए तथा बीच-बीच में सहजयोगी श्रीमाताजी को गुलदस्ते भेंट करने के लिए आते रहे। ऐसा ही एक अवसर पाकर SITA India द्वारा बनाई गई वेबसाइट जनता को समर्पित करने से पूर्व विमोचन के लिए श्रीमाताजी के सम्मुख लाई गई। श्रीमाताजी ने वेबसाइट से लिए गए कुछ पृष्ठों को देखते हुए टीम के प्रयत्नों को सराहा और उन्हें आशीर्वाद दिया।

आश्रम के नन्हें बच्चों के भोलेपन का साक्षी बनने का एक अन्य अवसर भी उपस्थित सामूहिकता को प्राप्त हुआ। श्रीमाताजी के आस-पास खड़े बच्चों ने छः नन्हें पिल्ले उठाए हुए थे। इस आनन्ददायी क्षण से श्रीमाताजी बहुत प्रसन्न हुईं। वे मुस्काईं और पिल्लों को प्रेमपूर्वक उठाए नन्हें शिशुओं का आनन्द लिया। तत्पश्चात् श्रीमाताजी ने पुणे में बड़े स्तर पर एक ऐसा ही आश्रम स्थापित करने की इच्छा व्यक्त की। N.G.O. की महासचिव प्रोफेसर किरण वालिया ने उन्हें विश्वास दिलाया कि उनकी परमेश्वरी इच्छा का उनके बच्चे सम्मान करेंगे और उसे कार्यान्वित करेंगे। तत्पश्चात् अधिकृत रूप से श्रीमाताजी की इच्छा और N.G.O. को उदारतापूर्वक उनकी ओर से दी गई राशि के विषय में बताया गया।

सायं 4.00 बजे के करीब जब श्रीमाताजी ने आश्रम से प्रस्थान किया तब भी पिल्लों को हाथों में पकड़े हुए बच्चों ने उन्हें घेरा हुआ था। प्रेम एवं करुणा से ओत-प्रोत श्रीमाताजी ने इच्छा जताई कि उनमें से दो पिल्ले प्रतिष्ठान में रखने के लिए उनके साथ भेज दिए जाएं। अत्यन्त हृदयस्पर्शी दृश्य था। पिल्ले श्रीमाताजी को भेंट करने के लिए दौड़ते हुए बच्चों को देखना अत्यन्त हृदय स्पर्शी दृश्य था।

कार में बैठे हुए, कार को घेरे बच्चों के साथ उन्होंने कुछ क्षण और बिताए। अपने एक माह के बच्चे को श्रीमाताजी से आशीर्वाद एवं नाम दिलवाने के लिए खड़े एक सहजयोगी को भी देखा गया। श्रीमाताजी ने तुरन्त उसे 'सहज' नाम दिया। सभी लोग आनन्द से जयजयकार कर उठे और N.G.O. आश्रम में पधारकर आशीष वर्षा करने के लिए परम पावनी माँ का हृदय से धन्यवाद किया।

जय श्रीमाताजी

महाशिवरात्रि पूजा

दिल्ली-6-3-1989

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

इस कलयुग में ईमानदारी से जो काम किया जाता है उसके लिये काफी विपत्तियाँ, आपत्ति, संकट उठाने पड़ते हैं। हालांकि सबसे बड़ा समाधान ये है कि हम लोग ईमानदार हैं। और सहजयोग में एक बात जाननी चाहिए कि जो चीज़ जिस वक्त बननी है उस वक्त ज़रूर बन जाएगी, उसमें रुकावट नहीं हो सकती। गर कोई रुकावट हुई है तो ज़रूरी थी, गर समय उसमें ज्यादा लग गया या कम लग गया, रुपया अधिक लगा या कम लगा, ये सब ज़रूरी थे। इसलिए किसी भी चीज़ में दोष निकालना नहीं चाहिए, लेकिन उसका आनन्द पूरा प्राप्त करना चाहिए। अब हमें सोचना चाहिए कि दिल्ली में सबसे पहले हिन्दुस्तान का, सहजयोग का आश्रम बनाया गया जो अभी तक सारे भारत वर्ष में कोशिश करने से भी नहीं बना। ये कोशिश अठारह साल से हो रही थी और आज ये आश्रम देखकर मुझे बड़ा आनन्द आया। इसका पूरा उत्तरदायित्व आप लोगों ने लिया था और सारा श्रम आपने किया और इसका श्रेय भी, सारा Credit भी आप ही को है। जब आप लोग मुझे किसी चीज़ का श्रेय देते हैं तो मेरी समझ में नहीं आता है कि आप लोग इतने अकर्म में उतर गए हैं कि आप जानते ही नहीं कि सब आप ही कर रहे हैं! अगर सब काम मुझसे ही होता तो मुझे आपको जोड़ने की क्या ज़रूरत पड़ जाती? आप ही मेरे हाथ हैं, आप ही मेरे आँख हैं, और आप ही मेरे कान हैं। आपके बगैर मैं कोई भी कार्य नहीं कर सकती और इसके लिए मैं आपके शरणागत हूँ एक तरह से, कहती हूँ कि जब भी आप लोगों को मेरे लिए हुकुम हो उस जगह मैं हाज़िर हो जाऊंगी और जहाँ कहोगे वहाँ मैं स्थापित हो जाऊंगी। लेकिन इसमें आपका जो हमारे ऊपर अधिकार है वो बना रहना चाहिए, वो पूरी तरह से बना रहना चाहिए और जब वो अधिकार बना रहता है तो उस अधिकार की पूर्ति भी बहुत आसानी से हो जाती है। अब मुझे तो पता नहीं मैंने इसमें कितना रुपया दिया कि क्या दिया? ये तो सारा सहजयोगियों का रुपया है, मेरी जेब से तो मैंने एक पैसा नहीं दिया। लेकिन मैं अपनी जेब से भी देना चाहती हूँ क्योंकि मेरे लिए भी तो आप यहाँ कमरा बना रहे हैं। तब थोड़ा सा मुझे भी तो पैसा देना चाहिए। आप लोग तो बना ही रहे हैं लेकिन मुझे भी तो कुछ देना चाहिए।

सहजयोग एक आनन्द का पर्व है, एक आनन्द का सागर है। हर चीज़ में आपको आनन्द गर मिले तो सोचना चाहिए कि आप सहजयोग की संवेदनशीलता को प्राप्त करते हैं। लेकिन आपमें वो आनन्द, उसकी प्रचीति न हो तो सोचना चाहिए कि आपमें अभी कमी रह गई है। इसको बनाने में जो कुछ भी कष्ट हुआ हो, जो कुछ भी परेशानियाँ हुई हों और जो कुछ भी आपको उठाना पड़ा हो, ये सब कुछ एक खेल है, ये सब एक खेल है और इस खेल को हमने किस तरह से खेला, उसका मज़ा हमने उठाया। घर बनाना, दुकान बनाना, विश्व बनाना, ये सब एक खेल है। गर आप विश्व के बनाने पर ये सोचें कि कैसे बनेगा, क्या होगा तो उसका मज़ा ही खत्म हो जाएगा। लेकिन आप बना रहे हैं, आप देख रहे हैं, किस तरह से बना रहे हैं और किस तरह से इस चीज को बनाइएगा। सिर्फ आपका चित्त गर स्वच्छ हो जाए, चित्त शुद्धि हो और चित्त में यही प्यार हो कि कोई चीज़ करनी है और ये परमात्मा के कार्य के लिए हम कर रहे हैं तो आनन्द द्विगुणित हो जाता है। और भी बढ़ जाता है, इसकी लहरें और भी आपको लपेटती चली जाती हैं और आप बड़ी गहरी ऐसी एक अनुभूति में जाते हैं जहाँ पर जाकर आप कहते हैं कि 'अब मस्त हुए फिर क्या बोलें?' वही हाल आज मेरा हो रहा है। ये सारा देखकर के, वैसे तो सारा विश्व ही बनाया है लेकिन ये जो अभी बनाया है, जैसे गुड़िया के खेल में जब आप उस गुड़िया का छोटा सा घर बनाते हैं उसको देखकर के बड़ा अद्भुत सा आनन्द होता है। ऐसा ही विश्व में बसा हुआ ये हमारा आश्रम है जिसके प्रति मुझे वही एक अनुभूति प्रतीत हो रही है।

आज का दिवस भी बड़ा शुभ है कि आज शिवतत्व के दिन, जिस दिन हमारे अन्दर शिवतत्व तत्व प्रगटित होता है, वो आज का दिन है। जिस दिन शिवजी की पूजा की जाती है। शिव माने जो अटूट, अचल, अविनाशी और आज के दिन कोई ऐसी चीज़ बन गई जो अटूट, अचल, और अविनाशी-इन तीन स्तम्भों को प्रकाशित करने वाली है, ये तो एक सारे संसार के लिए बड़ी सौभाग्य

और बड़ी मुश्किल बात है। इसे हम लोग इस तरह से समझें कि सारे विश्व में हलचल और दुनिया भर की आफत, ये कलयुग की घोर यातनाएं और उसका प्रकाश तांडव चला हुआ है। ऐसे वक्त एक लेखना कोई होनी चाहिए जिसको हम पकड़ लें। उस लेखना के लिए एक गणेश तत्व को बिठाना होगा। उस गणेश तत्व को बिठाने के लिए कोई न कोई पृथ्वी तत्व पे चीज़ खड़ी करनी पड़ती है। उसी प्रकार आज गणेशतत्व यहाँ बसाया गया, एक पवित्रता यहाँ लाई गई। ये एक पवित्र मन्दिर सा बन गया है और यहाँ से पवित्रता सारे संसार में कूद सकती है और उसका जो कुछ भी कार्य है वो बहुत सुचारु रूप से हो सकता है। हर तरह का आक्रमण, आततायी लोगों को ये एक छोटा सा दिखने वाला आश्रम ही बहुत कार्य कर सकता है। तो जिसे कहते हैं कि nucleus इस तरह से ये एक भारतवर्ष में आज दिल्ली में शुरु हुआ है। **सर्वप्रथम संसार में जो चीज़ बनाई गई वो है श्री गणेश। लेकिन उनसे भी पहले और आदिशक्ति से भी पहले जो तत्व था उस तत्व को हम ये कहेंगे कि वो सदाशिव स्वरूप, सदाशिव था। उस सदाशिव तत्व से ही उनकी जो शक्ति आई उसे हम आदिशक्ति कहते हैं।** तो सबसे पहले जो चीज़ संसार में रही और रहती है और हमेशा रहेगी, वो चाहे सुप्तावस्था में होती है तब कोई सा भी सृजन (Creation) नहीं होता है, 'लेकिन जब वो जागृत अवस्था में रहती है तब सारा सृजन होता है। उस वक्त हर तरह का सृजन आते रहता है। फिर उसके बाद, अवतरण आते हैं और सब तरह के कार्य होते हैं और फिर वही जा करके चीज़ जब सो जाती है तो सब चीज़ फिर सुप्त अवस्था में चला जाता है। तो ये जो सुप्तावस्था में जाने की स्थिति है उस स्थिति से पहले ही हम लोगों को उस जागरण में उतरना चाहिए जो शिवतत्व है।

शिव का तत्व समझना एक हिन्दुस्तानी के लिए कठिन बात नहीं है क्योंकि अपने यहाँ, भारत वर्ष में जो कि भारतीय हैं, जो कि विदेशी लोग हैं या विदेशी संस्कृति से प्रभावित हैं उनकी बात नहीं, पर सर्वसाधारण किसी भी भारतीय को आप गर देखें तो वो यही कहेगा कि इस अविनाशी तत्व को ही पाना हमारे जीवन का लक्ष्य है। बाकी सब चीज़ें विनाशी हैं। ये हम लोग जानते हैं। सारी चीज़ें विनाशी हैं और विनाशी चीज़ों के पीछे दौड़ना ये कोई भी अक्ल की बात नहीं है। विनाशी चीज़ें जहाँ हैं वहाँ हैं, अपनी सीमा मे रहें। लेकिन उनका ज़रूरत से ज्यादा महत्व करना विनाश की ओर जाना है। यही चीज़ है जो शिवतत्व है इसे हमें प्राप्त करना है, जो सारी हमारी कार्यपद्धति, गतिविधियों का लक्ष्य भी है और वही हमारा केन्द्रबिन्दु और स्रोत भी है। यही चीज़ विदेश के लोग भूल गए हैं। विदेश में लोग विनाशी चीज़ों को बहुत महत्व देते हैं, और विनाशी चीज़ों के लिए भागते हैं, उसी को महत्वपूर्ण समझते हैं और उसी को सोचते हैं कि उसी से हम सब लाभ कर सकते हैं। उनको अविनाशी की शायद ख़बर भी नहीं, बहुत से लोगों को, और जिनको है वो भी बस उसको विचारों में, और तत्वों में और इस चीज़ में बाँधकर के एक बड़ा भारी सा, कहना चाहिए, कि कबन्ध सा बना देते हैं। लेकिन उसमें जान नहीं है, उसमें प्राण नहीं हैं, उसके जो प्राण हैं, वो है शिवतत्व। और शिव तत्व जो है वो हम लोगों को मालूम है और हम जानते हैं कि इस अविनाशी शिवतत्व से ही सारा कार्य होने वाला है! गर हमारा मस्तिष्क, गर किसी तरह से काम से चला जाए तो भी हम ज़िन्दा हैं, गर हमारा हाथ टूट जाए तो भी हम ज़िन्दा हैं, गर हमारा पैर टूट जाए तो भी हम जिन्दा रह सकते हैं, रीढ़ की हड्डी भी टूटने पर हम ज़िन्दा रह सकते हैं। पर जैसे ही हृदय बन्द हो जाता है जहाँ शिव का तत्व है, फिर हम संसार में नहीं रह सकते।

तो शिव के तत्व के बारे में हमें जानना चाहिए कि यह तत्व अत्यन्त भोला है। भोलेपन का ये मतलब नहीं कि मूर्ख, भोलेपन का मतलब है पवित्र, अत्यन्त पवित्र है। जैसे कि एक पवित्र चीज आपने यहाँ बिछा दी हो कुछ भी, इस पर एक छोटा सा भी दाग़ लग जाए तो फौरन दिखाई दे जाएगा। इसी प्रकार शिवतत्व का है कि जैसे ही थोड़ी सी भी गलती करते हैं तो शिवतत्व के प्रकाश में वो एकदम साफ दिखाई देती है। और अब इस शिवतत्व को अगर आप ऐसा समझिए कि हमारे जीवन में इस शिवतत्व का क्या उपयोग है तो जो आज आप चैतन्य को जानते हैं या चैतन्य की आपमें जो अनुभूति होती है ये ही शिवतत्व का प्रकाश है और जब तक शिव आपके अन्दर जागृत नहीं होते, जब तक आत्मा आपके अन्दर जागृत नहीं होती आप

इस शिवतत्व को प्राप्त नहीं कर सकते, उसकी प्रचीति नहीं कर सकते, उसे जान नहीं सकते। उसकी प्रचीति होना ही एक बोध है, इसी को विद् कहना चाहिए जो वेद है। इसी को Knowledge कहते हैं जो ज्ञान है। यही शिवतत्व को जानना चाहिए। अब शिवतत्व है या नहीं ये तो आप जानते है, इसमें आपको शंका नहीं है कि शिवतत्व है या नहीं। किन्तु शिवतत्व पे हम जमें हैं या नहीं, ये सोचना चाहिए। शिवतत्व का सबसे बड़ा फायदा ये है कि ये प्रेम है, प्रेम का स्रोत है, प्रेम का लक्ष्य है प्रेम का केन्द्र है, ये प्रेम है। सबसे बड़ी चीज़ आप अपने हृदय को खोल लें, शिवतत्व को अपने अन्दर समाने का मतलब है अपने हृदय को खोल लो। हृदय को खोलकर के बिल्कुल खुली तबियत से रखें। इसके विरोध में क्या-क्या चीज़ें बैठती हैं वो हमें देखना चाहिए। इसके विरोध में जब हमें एक तो स्वार्थ 'मैं', ममत्व, 'मैं, मेरा पति, मेरे बच्चे, मेरा घर' जहाँ ममत्व शुरु हुआ वहाँ शिवतत्व खत्म होने लगता है। अब शिवजी को देखिए कहाँ रहते हैं? कैलाश पर, जहाँ कोई भी नहीं रह सकता, वहाँ बसे हुए हैं। कपड़े क्या पहनते हैं वो तो आप जानते ही हैं। अलंकार उनके क्या हैं और जिस मस्ती में वो पहनते हैं वो भी आप जानते हैं। लेकिन उनको कोई आराम की ज़रूरत नहीं, कि मुझे कौन सा आराम मिलेगा। हम लोग पहले सोचते हैं-भई वहाँ जा रहे हैं तो वो कितने स्टार होटल हैं, वहाँ क्या इन्तज़ाम होगा, वहाँ ये चीज़ ठीक होगी या नहीं होगी, वहाँ किस तरह से रहने को मिलेगा, वहाँ कौन सा इन्तज़ाम होगा और किस तरह से खाना होगा? वो इस चीज़ की परवाह नहीं करते। शिव तत्व वालों का पहली पहचान है, वो मस्ती में कहीं भी रह सकते हैं। आप उनको जंगल में सुला दीजिए, वो जंगल में आराम से हैं, महलों में रख दीजिए तो महलों में आराम से हैं। जहाँ है वहाँ वो शिव हैं। उससे ऊँची कोई चीज़ है ही नहीं जिसका वो आनन्द उठा सकें क्योंकि स्वयं आनन्दमय होने की वजह से और किस चीज़ से आनन्द उठाना है? बाकी तो सब कचरा ही है। जो असली परम चीज़ है वो उन्होनें पाई है अपने अन्दर में, शिव की और उस शिव के आनन्द में ही वो पूरी तरह से जमे हुए हैं। तो उनके लिए ऐसी कौन सी विशेष चीज़ होगी जो उनको दबा सकेगी या उनको मोहित कर सकेगी? ऐसी कोई सी भी चीज़ उनके लिए नहीं है। इसी से आप जान सकते हैं कि गर हमारे अन्दर शिव तत्व चलता है तो पहले तो हम ऐसे इन्सान हो जाते हैं जिसे कहते हैं, औलिया- माने आप कहीं भी सो लीजिए, कहीं भी बैठ लीजिए, कहीं भी खाना खा लीजिए, किसी वक्त भी खाना खा लीजिए, कितना टाइम है सोलें और ये घड़ी जो है ये बन्द हो जाती है, क्योंकि आप कालातीत हो गए, किस वक्त जाना, किस वक्त आना, किस वक्त क्या करना, उसका विचार ही नहीं रहता। सब ये कि हो रहा है। जो भी चल रहा है ठीक है। अभी यहाँ बैठे थे यहाँ बैठ गए, कल को वहाँ जाकर बैठ जाएंगे। उसमें ये विचार ही नहीं आता है कि अब Time हो रहा है चलो, अब वहाँ पर ऐसा करना है ये करने का है, ये सब दिमागी जमाखर्च उसमें होते ही नहीं। क्योंकि जो हो रहा हैं वो कालचक्र के हिसाब से ठीक ही हो रहा है। इसीलिए मैंने कहा कि ये कब बनेगा, कैसे बनेगा, उसके लिए व्याकुल होने की ज़रूरत नहीं। जब इसके लायक लोग हो जाएंगे तब ये पूरा हो जाएगा। जब इसमें रहने लायक लोग हो जाएंगे, तब ये पूरा होगा, नहीं तो यहाँ पर क्या, कौन रहेगा? जानवर आकर रहेंगे, चिड़िया पंछी रहेंगे? मैने तो इनसे कहा था कि पहले ये तय कर लो दिल्ली वाले कि कौन रहने वाले हैं यहाँ आकर। कहने लगे माँ आप तो रहेंगे। मैंने कहा मैं कौन-से-कौन से आश्रम में रहने वाली हूँ? ये बता दीजिए। तो एक मेरे लिए मत आश्रम बनाओ, आपमें से कितने लोग आश्रम में रहना चाहते हैं, ये पहले तय कर लो। क्योंकि हिन्दुस्तानी तो बहुत ही ज्यादा सीमित हैं। उसको तो अपना घर चाहिए, अपनी बीवी चाहिए, अपने बच्चे चाहिएं और बीवी पर रौब जमाने के लिए चाहिए। ऊपर से ये कि उनको मोटर चाहिए अपनी। 'अपना' 'मेरा'। ये मेरी, ये मेरी चीज़ है, मेरे बच्चे मेरे पास हैं, मेरी बीवी मेरे पास है। कितने लोग ऐसे हैं कि जो सामूहिक तरह से रह सकते हैं दुनिया में? परदेस में ये प्रश्न नहीं उठता।

परदेस में तो गर आश्रम बनाया तो खट से बन जाता है क्योंकि सब अपना बिस्तर वगैरा लेकर के चले आते हैं। भई क्या हुआ? अब तो घर-वर बेच दिया, अब तो माँ आश्रम में रहेंगे। अब हमारे सारे प्रश्न ही छूट गए क्योंकि अब न तो घर का किराया देने का, न कोई आफ़त, न कोई चीज़। बस

अब यहाँ रहेंगे, सामूहिक में रहेंगे, जो कुछ पैसा देना है वो देंगे और अपना आराम से रहेंगे। सब लोग मिलकर काम करेंगे, और कोई Problem ही नहीं। कोई आफत आई तो सब लोग मिलकर उठा लेंगे और कोई ऐसी विशेष बात हुई तो उसका भी आनन्द सब लोग उठा लेंगे। वो लोग तो इतने खुश हो जाते हैं कि इसमें हमें कुछ मिल गया, जैसे कि हम किसी चीज के हो गए, जिसको कहते हैं belonging, किसी चीज को हम belong कर गए। और हम लोग हैं चिपटे-चिपटे घूमे रहते हैं। अच्छा उस घर में भी, घर के अन्दर भी, फिर झगड़े शुरु होते हैं कि साहब ये बड़ा लड़का है, ये छोटा लड़का है, ये बड़ी बहू, ये छोटी बहू। फिर उसका बच्चा, फिर मेरी बहन, फिर ये, ढिकाना। उसमें भी झगड़ा! क्योंकि ये जो रिश्तेदारी है कृत्रिम रिश्तेदारी है, ये असली रिश्तेदारी नहीं। कोई किसी का बेटा हो जाए तो उससे उसका रिश्ता नहीं होता। गर होता, रिश्ता गर बनता तो झगड़ा क्यों होता? मतलब इसमें वास्तविकता नहीं है। उसमें फिर छोटी-छोटी बात की मांग क्यों होती? एक दूसरे में प्यार क्यों नहीं होता? तो जिस तरह से हम आपको कहते हैं कि बाहर के धर्म सब झूठे हैं इसी तरह से बाहर के रिश्ते भी सब झूठे हैं। एक-एक आदमी को इसकी प्रचीति आएगी। अब कोई कहेगा साहब मेरी माँ को बुला दीजिए, माँ को बुला दीजिए। लन्दन में हम थे तो एक साहब मेरी जान के पीछे पड़ गए। मैंने कहा अच्छा भई तुम इतने पीछे पड़े हो तो माँ को बुला देते हैं। जब माँ को बुला दिया तो वो रोज़ कहें माँ इससे मुझे छुटकारा करें, मेरी जान खा गई है। इसको कैसे भगाऊँ? मैंने कहा पहले तो कह रहे थे माँ को बुलाओ, माँ को बुलाओ, मेरी जान खाली, अब ये कि इसको यहाँ से निकालने की कैसे कोशिश करें। मैं कैसे इसको निकाल दूं, मेरा सर खा लिया। मैंने कहा, पहले बुलाया क्यों और अब भेज क्यों रहें है? वजह ये है कि ये जो रिश्ता था ये रिश्ता सच्चा नहीं था, ये झूठा रिश्ता था। अगर सच्चा रिश्ता होता तो एक प्रेम में विभोर मनुष्य रहता। उसमें ये नहीं भावना आती कि ये मेरा है। 'मेरा' की जो भावना है ये झूठी भावना है, ये सच्ची भावना बिल्कुल नहीं है। गर सच्ची भावना होती तो आप मुझे बताइए कि कौन सी रिश्तेदारी में आपने देखा है कि एक आदमी को शिकायत हो जाए तो सारे लोग उसके साथ खड़े हो जाएंगे। उल्टे गर आप सहजयोग में आएं तो आपकी टाँगें खींचेंगे। अच्छा गर आप सहजयोग में आए तो आपसे कहेंगे कि चलो फिर हमें ठीक कराओ। तुमने हमें ठीक नहीं कराया तो हम तुम्हें सहजयोग में नहीं जाने देंगे। फिर और भी तमाशे खड़े कर लिए। क्योंकि शिवतत्व ही सत्य है, बाकी सब असत्य है और शिवतत्व का रिश्ता आप जानते है, वो चैतन्य से होता है। इस प्रकार से जब आप चैतन्य को महसूस करते हैं, आप जानते हैं कि चैतन्य है तो आप समझ लेते हैं कि ये जो दूसरा सामने बैठा है इससे कितना कितना आनन्द आ रहा है। एक बार कलकत्ते में एक साहब मेरे पास आए। वो मेरे पैर पर आते ही साथ आठ-दस वहाँ जितने भी सहजयोगी थे दौड़ पड़े! मैंने कहा, क्या हुआ है? पता नहीं क्या? एकदम से कुण्डलिनी चढ़ गई एकदम खुल गई। हमने कहा जाकर देखे माँ को क्या हुआ? तो ये देखा कि सामने एक realized soul! अब वो सब खड़े हो गए वो बिचारा झुका ही बैठा था मैंने कहा उसको तो छोड़ो। पकड़ लिया उसको। उसका जो आनन्द आ रहा था जैसे कि गुलाब के फूल से भी न आए, न कमल के फूल से आए, ऐसे उसका मज़ा उठा रहे थे! ये असली रिश्ता हुआ कि बैठे कहाँ थे, वहाँ से भागे-भागे आए! क्या मज़ा आया! जब ये मज़ा आने लग गया तब रिश्तेदारी है। यही असली दोस्ती है, यही असली सहजयोग की प्रेरणा, प्यार और उसका आनन्द है। ये सिर्फ शिव तत्व से मिल सकता है। गर आपके अन्दर शिव तत्व है तो आप आपस में झगड़ ही नहीं सकते। आपने गणों को देखा है कि गण कैसे होते है कि वो एक इशारे पे कठिन से कठिन काम सब लोग मिलकर करने लग जाते हैं, कठिन से कठिन बात हो, उसमें सब जुटकर के करने लग जाते हैं। लेकिन गर हमारे यहाँ शिवतत्व की जब पूर्ण प्रणाली शुरु हो जाती है, मैंने देखा है, कि गर समझ लीजिए कोई चीज़ अमेरिका में हो गई तो सारे सहजयोगी उधर दौड़ पड़ेंगे। कोई घटना आस्ट्रेलिया में हो गई, सबका चित्त वहाँ चला जाएगा। कितनी बड़ी बात है! लेकिन सबसे पहले उसमें हमें जानना चाहिए कि हम शिवतत्व में स्थित हैं। शिव तत्व में स्थित होना माने मैं नहीं कहती कि आप सन्यासी बाबा बन जाएं। पर अन्दर से सन्यस्थ भाव आना चाहिए। अन्दर से सन्यस्थ भाव आने का

अर्थ ये होता है कि आप इस तरह से कि एक पेड़ के अन्दर उसकी शक्ति या उसके अन्दर का जो Sap होता है वो उठता है और हर जगह जाता है, हर पत्ती पर, हर शै पर, हर फूल पर, हर फल पर जाता है और फिर लौट जाता है। इसी प्रकार आपका भी प्यार बिल्कुल निर्वाज्य, पूरी तरह से असंग में, detached होना चाहिए। तब आप शिवतत्व में स्थित होंगे। और जब वैसे आप हो जाते हैं तब आपको एक दूसरे का मज़ा आने लगता है, नहीं तो एक दूसरे को देखकर के, वो ऐसा बोले, इन्होंने ऐसा किया। शुरु-शुरु में तो ऐसा लगता था कि मैं किसी झगड़ालू घर में घुस गई हूँ। इसका उसका आपस में झगड़ा, न किसी को आपस में मजा आ रहा है, न कोई आपस में प्यार कर रहा है। इसका झगड़ा उससे, उसका झगड़ा उससे, मैं तो देख-देख के सोचती थी हे भगवान! अब मैं क्या करूं? यहाँ कुछ मेरा कार्य तो बनना ही नहीं। लेकिन धीरे-धीरे, धीरे-धीरे दिमाग ठण्डे हो गए, शिवतत्व अंदर स्थापित होने लग गया और अब लोग आपसी प्रेम को आनन्द से भोग रहे हैं और जान रहे हैं कि आपसी प्रेम जो है यही सबसे बड़ी चीज़ है। और रिश्तेदारों का भी अनुभव आने लग गया कि ये क्या चीज़ है। अपना रिश्ता एक ही चीज़ से होता है वो है शिवतत्व से। **जिस आदमी में शिवतत्व नहीं, जिस आदमी में vibrations नहीं, जिसके vibrations ठीक नहीं हैं उस आदमी से आपका रिश्ता हो ही नहीं सकता।** कितनी भी कोशिश कर लो, तो भी वो रिश्ता बन नहीं सकता। उसको जब तक उसके vibrations ठीक नहीं हो जाएंगे तब तक आप कुछ भी कर लें, आपको उसके साथ मज़ा आ ही नहीं सकता। या तो आपके ही vibrations खराब हो जाएंगे या उसके vibrations खराब हो जाएंगे। तो आपको ऐसा लगेगा कि इसी के vibrations ख़राब हैं तो क्या मेरे ख़राब हो गए? और मेरे ख़राब हैं तो क्या उसके ख़राब हो गए? और एक तरह से संभ्रान्त, भ्रान्तिमय स्थिति आ जाएगी। आपको ये ही समझ में नहीं आएगा कि vibrations किसके ख़राब हैं? तो इसलिए ऐसे आदमी जिनके कि vibrations ठीक नहीं हैं उनसे दूर रहना चाहिए। उसमें कोई किसी को बुरा नहीं मानना चाहिए, उसमें दोनों का लाभ है। गर आपके अन्दर शिवतत्व जागृत है तो आप उनसे अलिप्त रहिए। इसका मतलब ये नहीं कि आप उनको धुत्कारिए या बुरा कहिए, लेकिन उनका भी शिवतत्व ठीक करना चाहिए और उनसे भी कहना चाहिए कि आप अपने शिव तत्व को ठीक करें, क्योंकि गर ऐसे लोग बीच में आ जाएं तो उसमें कभी भी आनन्द नहीं आ सकता जैसे कि कोई कहे कि दूध में आप दही डाल दें। क्या हर्ज़ है? हम सब तो detached ही हैं, ऐसे तो होता नहीं। दूध में आपने दही डाल दिया तो दही हो जाएगा। आप कितनी भी कुछ Theory लगाओ, उस Theory का काम नहीं। उसके सामने जाकर प्रार्थना करो, नमस्कार करो, कुछ करो, दूध में आपने दही डाल दी और जिन लोगों के vibrations ख़राब हैं उनको पूरी तरह से guidance देना चाहिए। तुम्हारे vibration ठीक हो जाएंगे और सब ठीक हो जाएगा और आपकी शान्ति आपके शिवतत्व से वो देखकर कहेंगे, ''हाँ ठीक है।'' ये आदमी कितना शान्ति में बैठा है मैं भी ऐसी शान्ति में बैठूं। इस शान्ति को मैं क्यों न पाऊं? उसका मैं क्यों न उपभोग करूं? इस तरह का आपका जीवन उस शान्ति में, सादगी में, प्रेम में जब घुस जाएगा तो दूसरे लोग जिनके vibrations ठीक नहीं हैं, जो इतने अभी बैठे नहीं हैं सहजयोग में, वो धीरे-धीरे बैठ जाएंगे।' लेकिन सबको यही कोशिश करनी चाहिए कि हमारा हित काहे में है, हमारा हित इस तरह से पागल जैसे घूमने में और भटकने में नहीं। उस अविनाशी चीज़ को प्राप्त करना ही हमारे जीवन का लक्ष्य है। हम इसीलिए सहजयोग में भी आए हैं और सहजयोग में आकर के अगर हम आधे-अधूरे रह गए तो क्या फायदा? हमने क्या प्राप्त किया? उसमें हम जिस रास्ते पर आए हैं हम बीच ही में बैठ गए, मंजिल तक तो पहुँचे ही नहीं। इस शिवतत्व के बारे में मैंने अनेक बार बातें करीं हैं और बताया लेकिन दिल्ली वालों के लिए विशेष रूप से शिवतत्व की बात कहनी चाहिए। सो शिवतत्व की बात ऐसी है कि आपको पता होना चाहिए कि जब हृदय आपका पकड़ जाता है तो आपका आज्ञा चक्र पकड़ जाता है। पर मैं तो उल्टे कहूंगी, गर आपका आज्ञा चक्र पकड़ गया, सामने का, तो आपका हृदय एकदम से संकुचित हो जाएगा, एकदम छोटा हो जाएगा। और जब आपका आज्ञा चक्र खुल जाएगा तो आपका हृदय एकदम ठण्डा ठण्डा उसमें से बहने शुरु हो जाएगा। आज्ञा चक्र चढ़ता है अहंकार से। क्योंकि

आप इस राजधानी में रहते हैं और सब घोड़े पर सवार लोग हैं, आप भी सोचते हैं (बच्चों को ज़रा-पता नहीं क्यों बच्चे रो रहे हैं इनको देखना चाहिए जो बच्चे रो रहे हैं उनको देखना चाहिए) सो दिल्ली शहर में मेरी जब शादी होकर आई तो मुझे लगा कि ये कोई अजीब दुनिया है। यहाँ लोग चलते तो ज़मीन पर हैं परन्तु गर्दन उनकी ऊपर ही चलती है ऐसे, और आप जब-तक कूदकर उनसे बात नहीं करिए उनको कुछ समझ में नहीं आएगा। एक अजीब अहंकार की दुनियां थी, बापरे, जब उस Time में जब देखा, मैं बहुत छोटी सी और भोली सी थी, मुझे हँसी आती थी कि ये सब पागल लोग जा कहाँ रहे हैं। सीधे जमुना जा रहे हैं, किसी घाट पर जा रहे हैं, कुछ समझ में नहीं आता था। तो मैं देखा करती थी और मुझे बड़ा आश्चर्य होता था, सबकी गर्दन, यहाँ से उठकर छः फुट चलती थी और इसका कारण ये कि अहंकार, इतना अहंकार। एक चपरासी की गर बीवी घर में आए तो वो शनील के सूट पहनकर के, लिपस्टिक विपस्टिक लगा करके पहुँची घर में, मैंने सोचा कोई मेमसाहब ही होगी। नाखून रंगाए हुए, लिपस्टिक लगाए हुए, चूड़ियाँ पहनी हुई बिल्कुल फैशनेबल। और मैं तो उसके सामने बिल्कुल ही गाँव की औरत लग रही थी। तो मैंने सोचा कोई मेमसाहब होगी। तो मैंने उनसे कहा चाय लो, सोफे पे बिठा दिया और वो बैठे न, मैंने कहा, आप बैठिए न, बैठिए न। कहने लगी, मैं कैसे बैठ सकती हूँ? मैंने कहा क्यों आप हैं कौन? मैं आपके चपरासी की बीवी हूँ, तो मैंने कहा, कोई हर्ज़ नहीं है, बैठ जाइए अब आप। और फिर जितनी उसमें घमण्ड थी, मैंने देखा कि उतनी तो Collector के नहीं होती। तो मैंने कहा कि जब इनका ये हाल है तो कलेक्टर की बीवी क्या होगी! और इस कदर अहंकार और झूठ और इतनी कृत्रिम जिन्दगी कि मैं तो नागपुर से आई थी, तो लगा कि ये है दुनिया, कैसी दुनिया है ये, कुछ समझ ही में नहीं आ रहा। अजीब-अजीब से अनुभव आने लगे। जैसे हमारे पति आए, वो शास्त्री जी के साथ थे। ऐसा दुनिया में तो बड़ी भारी नौकरी, मुझे तो समझ में नहीं आता इसमें क्या बड़ा भारीपन है? तो एक हमारी सहेली हमें मिली, सो वो हमारे कॉलेज में पढ़ती थी। वो तो हमसे बात ही नहीं कर रही। तो मैंने कहा कि नमस्ते वमस्ते किया। तुम कहाँ रहती हो? तब हमें एक मीनाबाग में एक जगह मिल गई थी, कहने लगी मीनाबाग में रहती हो? तुम्हारे पति क्या करते हैं? भई कुछ करते ही हैं सरकारी नौकरी ही है, ऐसा ही after all। ये मीराबाग में तुम रहती हो, किससे शादी कर ली तुमने? तुमको और कोई नहीं मिला? मैंने कहा भई मेरे पति तो बहुत अच्छे आदमी हैं बहुत अच्छे। अरे उसको क्या चाटना है? तुम क्या मीनाबाग में रहती हो? मैंने सोचा कि इसको सारी दुनिया में कौन कहाँ रहता है, किसकी क्या Position है, उसको सब पाठ याद है कि कहाँ रहते हैं। मैने कहा कि तुम कहाँ रहती हो? कहने लगी, मैं तो वहाँ रहती हूँ राउज़एवेन्यू में। मैंने कहा वो कहाँ है? तो वो पुल के पास है। मैंने कहा, तो वो दूर होगा न ज़रा यहाँ से। अरे तो क्या मेरे पास मोटर है, उसमें क्या है, कहीं भी हो, रहते तो शान से हैं। मेरे पति तो ये हैं, मेरा पति। पहले तो मेरे यही नहीं समझ में आता था कि additional, under इन सारे prepositions का क्या मतलब है।

मेरे Husband से मैं पूछती थी कि additional और under में क्या फर्क होता है? वो कहने लगे कि वैसे तुम्हारे पास बहुत ज्यादा अक्ल है लेकिन तुम तीन पत्ती नहीं खेल सकती, इसमें तुम्हें याद नहीं रहता कौन सी चीज़ Higher-lower है। ये तुम्हें ब्यूरोक्रेसी याद हीं नहीं रहेगी। तो मैंने कहा साहब मुझे समझ ही में नहीं आता है कि इतने सारे Prepositions हैं, उसमें ऊपर नीचे क्या होता है। बहरहाल जो भी हो, तो वो बहुत मुझसे बिल्कुल दूर भाग के खड़ी हुई कि ये तो कोई क्लर्क की बीवी है या जो भी सोचा हो, पता नहीं। तो मैंने उनसे ये कहा कि भई ठीक है, मैं मीना बाग में रहती हूँ तो इतने नाराज़ होने की कोई बात नहीं है। जो सरकार ने हमें जगह दी है हम रहते हैं। तो कहने लगी कि, इतने में मेरे पति आ गए। अब तो भई यहाँ तो सब लोग नमस्कार कुर्सी को करते हैं, चाहे जो भी हो, तो वो आते ही साथ सब वो नमस्ते, नमस्ते, नमस्ते नमस्ते। तो ये भी उन्हें नमस्ते करने लगी। तो कहने लगी तुमने क्यों नहीं नमस्ते किया? वो तो मेरे पति हैं न, उनको क्या नमस्ते करनी। कहने लगी ये तुम्हारे पति हैं तुम मीना बाग में क्यों रहती हो? जैसे कि कोई वो यरवड़ा का जेल है कि मीना बाग। उसमें इतना objection क्या है? कहने लगी, ये तुम्हारे पति हैं! अरे तुम तो बड़े आदमी की बी॰

हो। मैंने कहा मेरे लिए तो पता नहीं, पर ज़रा लम्बे हैं मेरे Husband। तो कहने लगी, तुम तो निरी गवार हो। तुमको तो वो फलानी जगह में कोठी माँगनी चाहिए थी मैंने कहा काहे के लिए? तो कहने लगी वाह इतने बड़े आदमी हैं तो क्या तुमको बड़ी कोठी नहीं चाहिए? मैंने कहा कि भई मुझे तो छोटा ही घर अच्छा लगता है, सफाई वफाई करने में मुश्किल ज्यादा नहीं होती। कहने लगी तुम्हारे घर में नौकर नहीं है, मैंने कहा, है पर उसको बहुत ज्यादा काम पड़ेगा न। तो बेहतर है छोटा ही घर अच्छा है। इस कदर यहाँ पर artificiality, ऊपरी तरह से बात, ऊपरी तरह से तामझाम। बस, उसके बाद तो वो समझ लीजिए कि वो मुझे रोज़ एक फोन करती थी। मैं तो परेशान हो गई। मैंने कहा इसको क्या हो गया भई ये? अभी तो ये मीना बाग से घबराती थी और वो रोज़ ही आने के लिए बैठी है मीना बाग, समझ ही में नहीं आता। इस तरह की चीज़ें जब मैंने देखीं तो मैंने सोचा कि यहां के लोगों का दिमाग, क्या हो जाएगा? गर समझ लीजिए कोई बिल्ली से आप कह दें कि आप घोड़ा हैं तो वो घोड़ा रहा एक तरफ तो वो बिल्ली क्या हो जाएगी ये बता दीजिए। वही हाल यहाँ के लोगों का है कि हर आदमी जो है वो अपने को पता नहीं क्या समझता है। और ये सब बाहर के लादे हुए गोबर के टुकड़े उनको लेकर के कौन सी शान बघारते हैं? ये तो कल गिर जाएगी। ये सब चीज़ गिर जाएगी, ये सब विनाशी चीज़ें हैं, इसमें रखा क्या है? आज बड़े कुर्सी पर बैठे हैं, कोई भी आदमी हो, कितना भी खराब हो, बस एकदम लोफर हो, कैसा भी हो, वो कुर्सी पर बैठा है, सब हाथ जोड़े खड़े हुए हैं! वो कोई प्रतिबन्ध है ही नहीं, किस तरह का आदमी कुर्सी पर बैठे? अच्छा और गर वो आदमी उस कुर्सी से उतर गया उसका सारा कच्चा चिट्ठा आप पूछ लीजिए। जब तक कुर्सी पर है वो तो समझ लीजिए भगवान से भी बढ़कर है। भगवान ही लोग उसको कहते हैं। आपको आश्चर्य होगा कि बहुत से लोग मेरे Husband को मिलने आते तो पूछते थे वो कि वो भगवान जी हैं? तो मैंने कहा कौन भगवान जी? साहब, श्रीवास्तव साहब। वो भगवान जी हैं, भगवान जी? तो, मैंने कहा फिर शास्त्री जी कौन हैं। कहने लगे, अरे वो परमभगवान हैं। आप कौन? मैंने कहा, यहाँ मैं नौकरानी हूँ। तो तब से मैं अपने पति को भगवान जी चिढ़ाती हूँ। कहने लगे बस करो, आप मुझे मत चिढ़ाया करो। इस कदर का घमण्ड, इस कदर का ज़ोर, इस कदर की ज़बरदस्ती और उसमें एक औरतों में जो एक विशेष रूप से एक विचार आता है, कि ओ, मैं इसकी पत्नी हूँ। मुझे तो ये भी नहीं पता था कि मेरे पति कहाँ, कितना, क्या उनकी position है और उन लोगों को तो सारी Civil list मालूम है कि इनका नम्बर इतना, तो उसका नम्बर इतना, तो उसका ये। मैंने कहा कि ये क्या घोड़े की list बना रहे हो या काहे की list बना रहे हो। ये किसलिए तुम इस तरह की बातें करते हो? और उन लोगों की बातें मुझसे समझ में मेरे आती नहीं थी, क्योंकि बैठे-बैठे discussion करती रहतीं थी इसको ये promotion मिला, उसको वो Promotion मिला। अच्छी भली पढ़ी-लिखी औरतें, educated। हम लोगों के साथ पढ़ी लिखी औरते थीं वो अपना कुछ पढ़ना न लिखना न कुछ जानना न कोई बातें, बस ये कि पति की नौकरी कौन सी है। उसी के प्रकाश में मार अपने को.....। इस कृत्रिम जीवन से आप एकदम हट जाइए, इस कृत्रिम जीवन को एकदम आप छोड़ दीजिए। ये जो कुछ भी मेमसाबियत है ये सब खत्म हो चुकी है। अब असलियत पर आना है क्योंकि हम सहजयोगी हैं। और सहजयोगी के लिए ये ज़रूर है कि कायदे के कपड़े पहने, कायदे से रहे, सुशोभित रहे। ये सब चीज़ ठीक हैं लेकिन अपनी सीमा में। अपनी सीमा में। और इस कृत्रिमता को जब आप हटाएँगे तभी आप देखिएगा कि अन्दर वो शिवतत्व आपके अन्दर चमक रहा है। आपकी जो शान है वो देख रही है दुनिया, कहते हैं ना एक ऐसे एक साहब हैं। आप मिले है उनसे? आह क्या चीज है! फिर वो कुर्सी से उतरें या कुर्सी पर बैठें चाहे वो बाहर जाएं, चाहे वो अन्दर जाएं, सारी दुनिया उनके नाम से ही सोचेगी वाह क्या नाम दे दिया? ये सहजयोगियों की बात होनी चाहिए। एक ऐसा चरित्र होना चाहिए, एक ऐसा विशेष स्वरूप होना चाहिए कि जो कहें कि शिवजी जो थे ये, वो तो राक्षसों को भी क्षमा करते थे। इस प्रकार जिस शिवतत्व को हमने मान्य कर लिया और उनका क्षमा तत्व जब हमारे अन्दर बस गया तो हमें कोई सता ही नहीं सकता, कोई दुख ही नहीं दे सकता क्योंकि जब हमें याद ही नहीं रहा किसने क्या तकलीफ दी तो हमें कौन सा दुख होगा? इस

शिवतत्व में उतरने के लिए सबसे पहले आपको समझ लेना चाहिए, कि बिल्ली बिल्ली है, ये घोड़ा नहीं है और बिल्ली पर बैठा नहीं जाता है नहीं तो बिल्ली मर जाती है। ये नहीं सोचना है कि हम दिल्ली में रह रहे हैं तो हम कोई विशेष हो गए। जैसे ये सोच लिया ऐसे ही आपका जो है सारा चरित्र ही एक हास्यास्पद, Idiotic हो जाता है। एक और भी मज़ेदार बात है कि एक साहब minister साहब से मिलने गए एक साहब वहाँ बहुत कूद रहे थे, तो उन्होंने कहा, साहब आप इतना क्यों कूद रहे हैं? आपको पता नहीं मैं पी.ए. हूँ। उन्होंने कहा, अच्छा आप पीए हैं, अच्छा नमस्कार! ये तो पीए हुए आदमी हैं। तो इस प्रकार इस दिल्ली का बहुत अनुभव मुझे आया। और उस पर भी मेरे जैसी एक दो गवार औरते थीं, तो हमलोग बैठे-बैठे धर्म की चर्चा, इसकी चर्चा करते थे। बहुत कम, लेकिन अधिकतर सबमें ऐसी बातें। जो लड़कियाँ हमारे साथ कालेज में पढ़ती थी, इतनी सीधी, सरल, सादगी से रहने वाली, उनको पता नहीं एकदम उनके पर कैसे चढ़ जाते है? फिर हर चीज़ में ये मेरा घर है, एक ग़र उनका नैपकिन खो गया तो वो सारे ब्रह्माण्ड को फोन करेंगी, भई तुम गलती से मेरा नैपकिन तो नहीं ले गए। अरे भई एक गया तो गया, चूल्हे में गया। एक किसी का चम्मच खो गया तो उसके लिए वो सारी दुनिया को फोन करेंगे कि भई वो एक मेरे यहाँ से चम्मच खो गया है, इन्हें शर्म भी नहीं आती। किसी चीज़ की, इतनी बेशर्मी से इस तरह की कंजूसी की बातें करना और ऊपर से आप लिपस्टिक लगाओ ये बनाओ अपना शृंगार करो और अन्दर से तो आप इतने टुच्चे, छोटे तबियत के लोग हैं। उनको क्या इतना महत्व देना, जो कि छोटी-छोटी चीज़ों के लिए, इतनी बरबाद चीज़ों के लिए परेशान हैं। कभी-कभी तो आश्चर्य हो जाता है कि किस तरह से ये लोग अपने को इतना बड़ा बनाकर दिखाते हैं और होते हैं कितने टूच्चे, कितने low level के। उनसे तो एक चीज़ नहीं छूटती, एक इतनी सी चीज़ किसी के पास रह जाए तो उनके प्राण निकल जाएंगे। वो सब अपने साथ ले जाने वाले हैं। तो शिवतत्व में जब हम अविनाशी चीज़ को सोचते हैं तो संसार की सारी चीज़ जो है वो हमारे लिए क्षण भंगुर है। किसी चीज़ का महात्म्य ही नहीं। उसके पीछे छिपी हुई या उसमें अन्तर्निहित जो चेतना है उसी का प्यार है। जैसे मैंने आपसे बताया था कि मैं कश्मीर गई थी तो वहाँ पाँच मील दूरी पर मुझे vibrations आए, मैंने driver से कहा कि यहाँ से चलो, वहाँ से चलो। तो वो मुझसे कहने लगा, यहाँ तो कोई भी चीज़ नहीं, तो मैंने कहा नहीं चलिए यहाँ कुछ होगा जरूर। जाके देखा तो बहुत मुसलमानो के ऐसे छोटे-छोटे घर थे, आगे जाकर पूछा यहाँ क्या है? कहने लगे, यहाँ हज़रत इकबाल का एक बाल है। मेरे अब भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं, एक बाल, इकबाल, माने कौन मोहम्मद साहब, एक बाल वहाँ रखा हुआ था और पाँच छः मील पर मैंने उसे पकड़ा। इतने vibrations थे। आप सोच लीजिए एक बाल में क्या शक्ति होगी! इसी तरह से ये आपका जो आश्रम है, इसकी मिट्टी, पत्थर सीमेंट, फीमेंट जो भी लगा है, उसका महात्म्य नहीं है लेकिन इसके अन्दर बसे हुए मेरे बच्चों का महात्म्य है जिन्होंने अपनी मेहनत से प्यार से इसे बनाया और हर चीज़ इसकी vibrate करी है। आगे लोग मेरा फोटो न मिले तो इसी के बाहर बैठकर के vibrations ले सकते हैं। तो ये आपके ऊपर निर्भर है कि जब आप इसके अन्दर आएं तो याद रखें कि आप अपने शिवतत्व को जागृत करने आ रहे हैं, शिवतत्व पाने आ रहे हैं, उसी को जानने आ रहे हैं। और जिस आदमी में शिवतत्व होता है वो आनन्दमय, हँसता खेलता रहता है। जो लोग Serious होते हैं उनको रोज़ चाहिए अपने मुँह पर दो थप्पड़ मारें। क्योंकि मैं जब देखती हूँ तो मेरा ही मन करता है कि दो थप्पड़ इनको लगाऊं। जब आपके अन्दर शिवतत्व जागृत हो गया है तो आप इतनी मनहूस शक्ल बनाकर क्यों आए हैं? और सवेरे से माफ़ करो, माफ़ करो, भई काहे की माफ़ करो। सवेरे से चलता है माफ़ करो, माफ़ करो, माफ़ करो। मैंने कहा देखो फिर से मत कहना माफ़ करो, नहीं तो एक लगाऊँगी। क्योंकि बात ये है कि हम लोग तो शिवतत्व को प्राप्त हैं और हमारे अंदर आनन्द की उदियाँ उठ रही हैं हम Serious कैसे हो सकते हैं? कोई हमारे घर में मातम हो रहा है कि कोई मर गया है? और ये भी एक बीमारी उत्तर हिन्दुस्तान में है खासकर आदमी लोग जब उनकी बीवी के साथ होते हैं तो देख लेना चाहिए, वो ऐसा मुँह लटका लेते हैं जैसे किसी पशानी में चले जा रहे हों। कभी मैंने इधर के आदमियों को

औरतों से हँसते खेलते बोलते नहीं देखा। ज्यादातर तो कहते हैं हमारे भैया लोग जो यू.पी. के हैं कि आदमी आगे चलता है और बीबी घूंघट निकालकर दस कदम पीछे चलती है। वो बिचारी देखती चलती है कि उसका चमरोदा कहां जा रहा है उसके पीछे चलूं। और आदमी लोगों को तो बीवी से बात करना किसी आप होटल में जाकर बैठिए, किसी रेस्तरां में बैठिए, वहाँ अगर आप देखिए कोई आदमी किसी औरत से बहुत बात कर रहा है तो समझ लेना चाहिए कि इसकी वो बीवी नहीं है, impossible! क्योंकि बीवी से बात करते वक्त उनको पता ही नहीं क्या बिच्छू काट जाता है कि साँप काट जाता है। और ये इतना common experience मैंने देखा है कि बीवी घर में है गर, उससे बात भी नहीं करने का, न उसे कहीं बाहर ले जाने का, उसे कोई companionship, नहीं। और शिव और पार्वती ये दानों अटूट सम्बन्ध से बँधे हैं, जैसे चन्द्र और चन्द्रिका जैसे अटूट सम्बन्ध में। किसी और के साथ उनका सम्बन्ध चल ही नहीं सकता और आनन्द आ ही नहीं सकता क्योंकि स्त्री उनकी शक्ति है और यही कार्य करती है जो ये चाहते हैं। कितना आपस में मधुर उनका सम्बन्ध है और किस तरह से आदान-प्रदान और किस तरह से आनन्द! तो आदमी जो है वो हँसता खेलता रहे, औरते जो हैं वो भी हँसती खेलती रहें और आपस में बड़ा प्रेम और आनन्द आता रहे, उसे कहना चाहिए कि ये जो है ये शिव और पार्वती का (अस्पष्ट)। शिव अपने ढंग के हैं पार्वती अपने ढंग की हैं, शिवजी ये नहीं कहते कि तुम मेरे ढंग की हो जाओ और पार्वती ये नहीं कहतीं कि तुम मेरे ढंग के हो जाओ। न कोई ज़बरदस्ती, न कोई ये और आपस में एक तरह का बड़ा सा ही अच्छा (Love) जिसे कहते हैं, प्यार मनमुटाव चलते रहता है।

शिवतत्व से हमें ये भी समझना है कि जो विवाह हमारे अन्दर होते हैं वो तभी पूर्णतया सुखी हो सकते हैं जब पुरुष और स्त्री दोनों ही अपने आनन्द को प्राप्त करें। जब तक स्त्री ये सोचेगी कि मैं आदमी को कितना कब्ज़ा करूं और आदमी सोचेगा कि मैं अपनी औरत को कितने कब्जे में रखूं तो उस वक्त में ये समझ लीजिए ये आनन्द खत्म हो जाता है। और इतनी बेवकूफी की बात है कि जब अपने सामने सब कुछ थाली भरकर रखा हुआ है, सब आनन्द हमारे लिए पूरा भरा हुआ है और हम उससे अछूते ही रहें। आपस में जो सहजयोगियों का आपस में मेल-जोल है वो तो बहुत अच्छी बात है लेकिन अपनी गृहस्थी में भी इसी तरह से मेलजोल होना चाहिए। न कोई स्त्री पुरुष को dominate करे न पुरुष स्त्री को dominate करे, सब लोग अपनी अपनी जगह आनन्द में रहें। इसमें आपको ये भी है यहाँ औरतें इसलिए भी चिढ़ती हैं आदमी से बहुत, दिल्ली मैंने देखा, इनके पति काम में बहुत व्यस्त हैं। अब अगर आपके अन्दर शिवतत्व है, आपके हृदय में शिवतत्व है इस शिवतत्व से ही आनन्द मिलता है। गर आप चाहें अपने पति से, आप आनन्द तो नहीं पा सकतीं, उससे सुख पा सकती हैं, उससे अपने अहंकार को अपने पाल सकती हैं लेकिन पति से आपको आनन्द नहीं मिल सकता। आनन्द के लिए तो आप ही का अपना शिवतत्व है उसको पा लीजिए। तो फिर दुखी रहने की कौन सी बात है? गर उसको काम करना है, मेहनत करना है, हम तो अपने जीवन में आप बताएं तो आपको विश्वास ही नहीं होगा। जितने साल तक हम India में रहे हमारे पति ने एक भी छुट्टी नहीं ली, एक भी। वो भी इसलिए छुट्टी ली एक दिन, उस दिन मौलाना आज़ाद मर गए थे और सब चीज़ बन्द ही हो गई थी। लेकिन मैंने कभी शिकायत नहीं की, मैं अपने आनन्द में मग्न हूँ, मुझे क्या? वो तो अच्छा ही काम कर रहे हैं, देश का काम कर रहे हैं, मेहनत कर रहे हैं, तो काम करने दो और उनके काम की वजह से मुझे भी तो कितने लाभ हो रहे हैं, तो उनको बार-बार सताने से फायदा क्या? और तकलीफ देने से फायदा क्या? उल्टे अगर वो थके आए, उनको तकलीफ हो, उनको देखना चाहिए, उनको आराम देना चाहिए, उनको संभालना चाहिए। यही चीज़ हमारे यहाँ हो नहीं पाती है इसलिए भी आनन्द बढ़ता नहीं। औरतें तो दिन भर आराम करती हैं और शाम को चाहती हैं कि आदमी बारह एक बजे तक उनको घुमाते फिरे। सो इसमें आपको ये पता होना चाहिए कि आपको अगर पूरे रात भी घुमाए तो आपको आनन्द नहीं आने वाला क्योंकि आपका आत्मा ही जागृत नहीं है। आपका आत्मा जागृत जब हो जाए तो आपको इसकी ज़रूरत ही नहीं होती है। हम दोनों आदमी आज तक कभी

(शेष भाग पृष्ट 36 पर.....)

महाशिवरात्रि पूजा

"उत्पत्ति, आदिशक्ति और शिव का स्वरूप"

दिनांक-29-2-1976

ऐसे समझ लीजिए कि किसी वृक्ष को पूर्णतया प्रगटित होने से पहले उसका बीज देखा जाता है और इसीलिए उसको बीजस्वरूप कहना चाहिए। इसीलिए शिवजी की अत्यन्त महिमा है। उसके बाद, उनके प्रगटिकरण के बाद, उन्हीं के अन्दर से शक्ति अपना स्वरूप धारण करके आदिशक्ति के नाम से जानी जाती है। वही आदिशक्ति परमात्मा के तीनों रूपों को अलग-अलग प्रकाशित करती है जिसको आप जानते हैं- जिनका नाम ब्रह्मा, विष्णु और महेश, माने शिवशंकर है। यानि एक ही हीरे के तीन पहलू आदिशक्ति धारती है। और जब प्रलयकाल में सारी सृजन की हुई सृष्टि सारा manifested संसार विसर्जित होता है, उसी ब्रह्म में अवतरित होता है, तब भी सदाशिव बने ही रहते हैं और उनका सम्बन्ध परमात्मा के उस अंग से हमेशा ही बना रहता है जो कभी भी प्रगटिकरण नहीं होता है जो कि एक nonbeing है। परमात्मा की जो शक्तियाँ प्रकट होती हैं वो being से होती हैं और जो नहीं होती हैं वो non-being की हमेशा बनी ही रहती हैं। उसमें सदाशिव का स्थान वैसा ही है जैसे एक हीरा टूट जाए, बिखर जाए, कितना भी मिट जाए, उसके कण-कण भी हो जाएं, तो भी वो चमकता ही रहता है। कभी नष्ट नहीं होती उसकी चमक। उसी प्रकार सदाशिव का स्थान है। सदाशिव से स्थिति बनती है और संसार के सृजन में जब तक स्थिति नहीं बनेगी, तब तक कोई भी सृजन नहीं हो सकता। पहले स्थिति बनाई जाती है। Existance, अस्तित्व लाना पड़ता है किसी भी चीज़ का। अस्तित्व सदाशिव की ही शक्ति से होता है। इस कारण सृजन में उनका वही हाथ होता है जैसे किसी बड़ी भारी हवेली में या भवन में उसके नींव का होता है, उसके foundation का होता है। ये दिखाई नहीं देती, जो नींव होती है वो दिखाई नहीं देती है लेकिन उसके बगैर कोई भी building खड़ी नहीं रह सकती। उसी तरह सदाशिव हमारे अन्दर भी हृदय में निवास करते हुए आत्मास्वरूप होते हैं। जब तक वे अपने हृदय में आत्मा स्वरूप स्थित होते हैं तभी तक हमारा इस संसार में जीवन चलता है, जिस दिन वो अपनी आँखे मूँद लेते हैं उसी दिन हम लोग खत्म हो जाते हैं। इस दुनिया से हम लोग निकल जाते हैं और हमारी स्थिति परलोक में हो जाती है। शिवजी, आप जानते हैं, हमारी (सूर्यनाड़ी पर वास करते हैं) चन्द्रनाड़ी पर वास करते हैं और चन्द्रनाड़ी पर बैठे हुए वे स्थिति का सारा कार्य अपने अन्दर करते ही हैं लेकिन हमारा जो प्राण है, उसको भी स्थिति वो बनाए रखते हैं। शिवजी के बगैर हमारे प्राण नहीं चल सकते। अब ये काफी लम्बी चौड़ी बाते हैं, ये मेरी किताब में मैंने काफी खोल करके कही हुई हैं।

शिवजी का स्वरूप, वे एक परम सन्यासी हैं। जैसे कि परमात्मा का एक स्वरूप है कि वो अन्दर से सन्यस्थ है। वो किसी वजह से ये रचना नहीं करते, उनको कोई कारण नहीं है। वो अपने करते हैं, उनकी whim है, उनका मज़ा है, वो अगर चाहें तो रचना करते हैं नहीं तो उसे तोड़ देते हैं। एक सन्यस्थ आदमी संसार में जो बहुत से विराजते हैं, वे उनके प्रतीक हैं। मेरे सन्यास से अर्थ जो दुनिया में माना जाता है उससे नहीं है, आप सब जानते हैं। सन्यस्थ उसे कहना चाहिए जो आदमी Self Realized होकर के उस दशा में पहुँच गया है जहाँ वो साक्षी है। अन्दर से वो सन्यस्थ होता है। बाहर से सारे संसार में रहते हुए भी वो महान सन्यासी होता है। उसमें कुछ किसी से बताना नहीं पड़ता कि मैं सन्यासी हूँ, मैंने सन्यास ले लिया है। लेकिन जो अन्दर से मन हमारे अन्दर सन्यास ले लेता है, जो अन्दर से सन्यस्थ हो जाता है वो स्वरूप श्री शिव का है। और जो संसार में हम विराजते हैं और संसार के जो कार्य करते हैं और संसार में जिसे भी हम भोगते हैं, वो भोक्ता स्वरूप परमात्मा का जो है वो उनका श्री विष्णु का स्वरूप है। **इसलिए विष्णु के स्वरूप में वो भोक्ता हैं, शिवजी के स्वरूप में वो सन्यस्थ और ब्रह्मा के स्वरूप में वो सृजन करने वाले हैं,** सृजन कार्य करने वाले हैं, कर्ता हैं। इस सन्यासी के ओर दृष्टि करने से एक अजीब सी चीज़ दिखाई देती है कि नीलवर्ण का इनका शरीर, क्योंकि यह चन्द्रमा की लाइन पर बैठे हुए हैं, इनके गले में, हाथ में सर्प लिपटे हुए

हैं, इनका सारा ही अलंकार सर्पों से हो जाता है। सर्प शीतल होते हैं, शान्त होते है, दाहकता को पीते है और वो अपने ऊपर सर्प को पाले हुए हैं। माने संसार का जितना भी दुष्ट, जितना भी विपरीत, जितना भी डंक, जितनी भी जबरदस्त चीज़ें संसार को नष्ट करने वाली हैं सबको अपने शरीर में समाए हुए हैं। दुनिया भर का गरल वो पीए हुए, अपने आप जानते ही है, कि उन्होंने सारे गरल को शुरु में ही सारा पी लिया और जो कुछ भी गरल संसार का होता है वो अपने अन्दर पीकर संसार को ठण्डा रखते हैं, संसार को सुख देते है। जो कुछ भी मर जाती है चीज़, खत्म हो जाती है वो सारी ही उनके राज्य में जाकर बसती है और जो बेकार के लोग होते हैं, जो महादुष्ट होते हैं उनके कारागार भी उन्हीं के चरण धूलि से बन्द हो जाते हैं। वो लोग बन्धित होते हैं, शिवजी की कृपा से। उनके सिर पर चन्द्रमा का राज्य है, चन्द्रमा स्वत: लक्ष्मी के भाई हैं और इसीलिए कहा जाता है कि अपने साले को उन्होंने अपने सिर पर रख लिया है। बहुत ही उनका अजीब सा वर्णन कवियों ने किया हुआ है और बहुत सुन्दर उनके सिर पे गंगा का बोझा उन्होंने उठाया हुआ है। माने वो सबका गर्व हरण करने वाले हैं। गंगा जैसी गर्ववती को भी उन्होंने अपनी जटा में बाँध लिया। इतनी उनकी जटाएं जबरदस्त हैं! मनुष्य में जो अहंकार होता है उसे भी वो अपने अन्दर पी लेते हैं और इसी प्रकार वो संसार की अहंकारी लोगों से रक्षा करते हैं। वो अतुलनीय हैं, उनका कोई वर्णन शब्दों में नहीं कर सकते। लेकिन उनके अन्दर एक बहुत बड़ा, एक बहुत ही असाधारण एक शक्ति है जो किसी भी देवी-देवता में नहीं हैं- वो है क्षमा की शक्ति। वे दुष्ट से दुष्ट महादुष्ट को भी क्षमा कर सकते हैं, जिन्हें गणेश जी क्षमा नहीं कर सकते, जिन्हें येसुमसीह नहीं क्षमा कर सकते, उनकों भी सदाशिव क्षमा कर सकते हैं। इसीलिए हमेशा जब भी क्षमा माँगनी होती है(..... मराठी) तो उन्हीं से क्षमा मांगी जाती है। क्योंकि कुछ-कुछ ऐसी बाते हैं जिसे गणेश बिल्कुल नहीं क्षमा कर सकते, जिसे कि हम कहते हैं कि sin against the mother,माँ के खिलाफ कोई सा भी पाप करना। जितने भी sex पाप हैं उसको श्री गणेश कभी भी नहीं माफ करते। कभी नहीं कर सकते, उनको बहुत मुश्किल है मनाना। जीज़स क्राइस्ट भी नहीं कर सकते, कभी भी नहीं कर सकते। उनके लिए सिर्फ महादेव, श्री शंकर समर्थ हैं। उनकी बात को ये दोनों भी नहीं टाल सकते। इसलिए उनकी आराधना करनी चाहिए। आश्चर्य की बात है कि **महाशिवरात्रि के दिन लोग उपवास क्यों करते हैं? मेरी कुछ समझ में नहीं आता कि ये प्रथा कौन से आधार पर बनाई गई?** या तो किसी 420 लोगो ने शास्त्रों में ये बात लिख दी। आज के दिन उन्होंने गरल पिया था और आपको भी आज के दिन हर चीज खाने की इजाज़त है, कि आज आप गरल भी पी लें तो आज आपने बराबर निकाल दिया कि आज तो हम उपवास करेंगे। मेरा आज इतने जोर से हृदय चक्र पे खिंचाव पड़ रहा है, जिस सहजयोगी ने आज उपवास किया है मेरे हृदय चक्र को खींचे जा रहा है। अन्धाकरण नहीं करना चाहिए सहजयोगियों को, सोच लेना चाहिए कि जो दिन बड़ा ही celebration का है, जिन्होंने गरल पीकर के संसार में विजय प्राप्त की, उस शिवजी का जब इतना बड़ा महोत्सव है उस दिन भूखा मरना किसने बताया है? जिस दिन मनुष्य खुश होता है उस दिन ज्यादा ही खाता है। आज तो दो रोटी ज्यादा खाने का दिन है, आज सबने उपवास करके रखा हुआ है। और इसलिए शिवजी सबसे नाराज हैं, और इस चीज को शिवजी भी नहीं माफ कर सकते। तो हो गया आप लोगों का कल्याण। तभी आज कल इतने बड़े-बड़े शिवभक्तों के पहले heart attack आता है। आज खुशियाँ मनाने का दिन है कि उन्होंने सारे संसार का जो कुछ भी सारा गरल था वो उसे पी लिया जो कुछ भी अहित था, जो भी पाप था, जो कुछ भी दुष्टता संसार में फैली हुई थी सबको उन्होने शोषण कर लिया, ऐसे शिवजी के महान दिवस पर्व में हमको इस तरह के मनहूस काम करना नहीं चाहिए। गर हम किसी के जन्मदिवस पर उपवास करते हैं तो उसके मरने पर हम लोग क्या खाना खाएंगे? सब उल्टा कारोबार हमारे यहाँ चलता है, कोई मरता है तो ब्राह्मण बैठकर खाना खाते हैं, जब कोई जन्म होता है तो सब लोग बैठकर उपवास करते हैं घर वाले। कैसे समझाया जाए, कौन से शास्त्र में इसका आधार है और शास्त्रों में भी महामूर्खों ने इस तरह की चीजें भर दी हैं।

जिसको देखो उसने अपने शास्त्र में दुनिया भर का अत्याचार भर दिया है। ये सोच समझ रखना चाहिए कि आज के दिन उपवास का क्या अर्थ है? सब लोग मिठाई खाएं क्योंकि आज मन्दिरों में बैठे हुए लोग मिठाई खाना चाहते हैं तो मिठाई चढ़ाई जाए। अभी रात भर भांग पीऐंगे बैठकर और चरस खाएंगे और कहेंगे शिवजी खाते थे तो हम भी खा रहे हैं चरस और भंग। शिवजी तो इसलिए खाते हैं चरस और भंग क्योंकि उनको जब subconscious में जाना पड़ता है तो वो उसे खाते हैं चाहे जिसे भी खा लें उनको क्या मतलब है। जैसे कि समझ लीजिए aeroplane है, उससे आपको कहीं जाना है तो आपको पहले पाइलट तो होना चाहिए। तो वो भंग पीकर के और चरस खा के शिवजी नहीं हो सकते हैं। वो तो शिवजी ही हैं जिन्होंने गरल पी लिया और वो हैं जो दुनिया भर के भंग पीकर के संसार के जितना भी भंग है उनका शोषण कर रहे हैं। ताकि ये भंग कहां dump की जाए? तो उनके अन्दर भर दी जाती है कि भई तुम शिवजी हो तुम पी लो, तुम गरल पी लो, तुम भंग पी लो। तो चले सब लोग भंग पीने आज कि आज भंग पीकर सबलोग शिवजी हो रहे हैं। आप में से कितने लोग शिवजी के पांव के धूल के बराबर हैं? वो तो भंग इसलिए पीते हैं कि उनके अन्दर रखा ही जाता है सारा भंग का स्टोर। संसार में भंग होती ही है, राक्षस भी होते हैं, दुष्ट भी होते हैं। इनको कहाँ रखा जाए? घर के अन्दर आप के यहाँ गर ऐसी चीज़ हो तो उसे रखने की भी व्यवस्था होनी चाहिए। शिवजी ने कहा लाओ मैं दुनिया भर का गरल पीता हूँ। इसलिए उनके पास ये चीज़ stored रखी हुई है कि भई तुम रखे रहो। तो आप लोग जो उनके नाम पर भंग और चरस पीते हैं, तुमसे बड़े महामूर्ख तो संसार में कोई है ही नहीं।

एक सोचना चाहिए सहजयोगियों के लिए कि आपको vibrations तो कभी आए नहीं, आपने अभी जाना नहीं कि ये चीज क्या है, ये क्या आपके अन्दर से बह रहा है, ये क्या आपके अन्दर हो रहा है? कुछ अभिनव चीज है, कोई बड़ी भारी चीज है, कोई विशेष रूप की चीज है। फिर अपने विचार भी बदलने चाहिएं, अपनी आदतें भी बदलनी चाहिएं। हमेशा इस तरह से उल्टी बात हम क्यों करते हैं, मेरी समझ में ही नहीं आती। और हर एक उल्टी बात ऐसी उल्टी बैठती है कि उससे शिवजी तो उठ ही गए हैं इस संसार से, और उनको फिर से बिठाना मुश्किल हो जाता है। और अगर ज्यादा देर खड़े रहें तो तांडव शुरु कर देंगे, उनका कोई ठिकाना नहीं। इसलिए सब लोग विचार-पूर्वक समझकर के और चलें। आज उनका महान, बहुत महान दिवस है। आज से promise करें कि अगले महाशिवरात्रि से बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाएगा, उनका गुणगान किया जाएगा। आपको, हो सकता है कि विष्णु जी जैसे नहीं उनको पसंद अलंकार, उनके अलंकार और हैं। उनके लिए आप भभूत लगाइए, दुनिया भर की राख उनको चढ़ा सकते हैं आप, उस सब चीज को वो तैयार हैं लेकिन उन्होंने उपवास करने की बात कही हो, ये तो मुझे पता ही नहीं है। व्रत करना शब्द ही बदल गया है। व्रत का मतलब उपवास करना हो गया है। ऐसे व्रत करना चाहिए जैसे जिस time राम चन्द्र जी वनवास गए, तब व्रत करना चाहिए। जब repentence की बात हो, जब पश्चाताप हो रहा हो, उस समय का उपवास समझ में आता है। अब क्या आपको पश्चाताप हो रहा है कि उन्होंने गरल पी लिया? कुछ सोचने की बात है। सारे संसार की विपत्ति, सारे संसार की आफतें, सारे संसार का गरल आज के महान दिवस में उन्होंने पी लिया। इसलिए आज को महाशिवरात्रि कहते हैं। सारी रात उन्होंने ले ली, अपने अन्दर। रात्रि का जितना भी उनका, जितना भी darkness संसार की है उसको उन्होंने अपने अन्दर समा लिया। अब मैं आपके लिए कोई force तो करती नहीं हूँ लेकिन आप करके देखिए। अभी आप निश्चय करें इसी वक्त कि अगले महाशिवरात्रि से हम उपवास बिल्कुल नहीं करेंगे और vibrations देखिए कितनी जोर से आती हैं, और माफी मांगिए।

'परम तत्व पाने का विशेष पथ'

प्रजापति यज्ञ

मुम्बई-2-3-1976

इस संसार में जो सबसे बढ़कर के माया है वो है पढ़त मूर्खों की। पढ़त मूर्ख: उन्हें कहते हैं जिनके लिए कबीरदास जी ने कहा है 'पढ़ि पढ़ि पण्डित मूर्ख भए।' और इसीलिए मैं किताब लिखने में भी बहुत डरती थी और जब किताब लिखने का सोचा भी है तो भी ऐसे महामूर्खों के हाथ में वो नहीं पड़नी चाहिए। वो लोग उसी प्रकार हैं जिस प्रकार कोई इन्सान किसी भी देश में नहीं जाता है और झूठी बातें सारी दुनियां में बताता है कि मैं वहाँ गया था फिर वहाँ पर ये देखा, फिर वहाँ ये था, वहाँ वो था, फिर वो ऐसा हुआ और फिर किसी ने ये कहा था, उसने वो कहा था। अपनी कोई उनके पास प्रचीती नहीं होती। लेकिन आप जो सहजयोगी हैं आप सबको इसकी प्रचीती आई है। आपके अन्दर से vibrations फूटे हैं माने ये चैतन्य बह रहा है। आपको इसका अनुभव आया है कि चैतन्य क्या चीज़ है। आप एक बड़े भारी स्थान पे बैठे हैं। वो लोग बड़े-बड़े भाषण दे सकते हैं, इसी चैतन्य के बारे में बता सकते हैं, बहुत बड़े श्लोक पढ़ सकते हैं, लेकिन उनको अनुभूति इतनी भी नहीं हुई और वो परमात्मा के राज्य से अभी बहुत दूर हैं। आपकी entry हो चुकी है। उसका एक विशेष कारण है। आपने पढ़ा होगा कि गणेश जी का जन्म सिर्फ उसकी माँ ने ही किया था। अपनी सृष्टि रचना से पहले ही उसने एक बेटे को जन्म दिया था। खुद माँ ने ही ये सब किया था। इसलिए कि बाद में वो पिता को जान सकें। और उसको एक विशेष शक्तिशाली बनाया कि उसकी ओर ब्रह्मा, विष्णु, महेश कोई भी नज़र उठाकर के भी न देख सकें। इतना वो शक्तिशाली था। एक विशेष रूप का वो बालक था और उसी की पुनरावृत्ति आज इस कलयुग में हुई है। **आपको भी मैने अपने सहस्रार से जन्म दिया है, एक विशेष रूप से।** इसीलिए आपके अन्दर vibration छूट रहे हैं। लेकिन आपमें से कितने लोग है जो अपनी इज्जत करते हैं? अपने को समझते हैं कि कोई विशेष चीज हमने पाई है? और उसी विशेष तरह से हमें रहना चहिए, अपने जीवन को उसी तरह से बनाना चहिए। आपका स्थान देवलोक से भी ऊँचा बना है। आपका वो स्थान है कि आपसे तो देवलोक भी ईर्ष्या करे। किसी देवों ने इस तरह से उंगलियों के इशारे पर जागृति नहीं की है, एक गणेश छोड़ कर। किसी भी साधु सन्तों से ये कार्य नहीं हुआ था जिन्होंने हज़ारों साल की तपस्या की हुई है। इतना ही नहीं कि तुम लोग पार हो गए हो, पर इशारे पर कुण्डलिनी उठाते हो, और हर एक की कुण्डलिनी को जानते हो कि ये कहाँ है, और कैसी है। लेकिन इतनी बड़ी चीज पाकर के भी आप लोगों ने अपनी इज्जत नहीं की। या तो हमारा नसीब खोटा है कि हमें खोटे ही सिक्के मिले, वो चल ही नही सकते। आधा-अधूरापन इतना अधिक है, इतना अधिक है कि कभी कभी मेरा मन यह चाहता है कि बन्द कर दें इस सहजयोग को अब खत्म करें। डाँटते भी हैं,, कहते भी हैं, प्यार भी करते हैं, दुलार भी करते हैं, कि सिर्फ जरा steady हो जाओ, steady हो जाओ। चित्त तुम्हारा कहाँ बहक रहा है? आप जानते हैं कि आपके हाथ से हजारों लोग ठीक हो रहे हैं और हो सकते हैं। आपकी बीमारियाँ भाग गईं। परमात्मा की जो सर्वव्यापी all pervading जो प्रेम शक्ति है वो आपके साथ-साथ हर समय घूम रही है, आपको सहारा दे रही है, आप गलतियाँ भी कर रहे हैं, वो देख रही है, आप झूठ बोलते हैं वो भी देख रही हैं, और आप माँ की निन्दा करते हैं वो भी वो जान रही है, और आप बहुत छिछोरेपन से रह रहे हैं और बहुत ही superficially आप रह रहे हैं ये भी वो जानती हैं। सहजयोग के प्रति आपका commitment बड़ा ही खराब है। ये भी वो शक्ति जानती है तो भी, तो भी आपको सहारा दे रही है, हर जगह, हर घड़ी, हर पल आपको guide कर रही है। तो भी आप misguided हैं, आप रुपया पैसा और दुनिया भर की सत्ता उसके लिए इस तरह से छोटे होते जा रहे हैं। छी, छी, छी, छी। बार-बार मैं आपसे कहती हूँ कि आपका स्थान पूजनीय है। आपमें से एक-एक की पूजा करनी चाहिए। ऐसा आपका स्थान है और भूतो न भविष्यति-इस तरह ऊँचे पर बिठाए हुए लोग, इस तरह से काम करने लग जाएं तो दुनिया क्या कहेगी? आपका इतिहास में क्या नाम जाएगा? आप तो जानते हैं कि आपमें से बहुत लोगों ने पार

तक किया हुआ है। और फिर गिर गए! जिस पथ पे इतने ऊँचे आप हैं उससे गिरना बहुत आसान है। सांसारिक चीजों में सहजयोग नहीं देखना है। परमात्मा के स्वरूप को जानने के लिए आप यहाँ आए हैं। हमें कितना रुपया मिला इसके बाद में, या हमारा क्या लाभ हुआ इसके बारे में, ये सांसारिक तुच्छ चीजों का महत्व करना सहजयोगी के लिए शोभनीय नहीं है। आप हमारे पास परमात्मा को माँगने आए हैं सांसारिक चीजें माँगने के लिए नहीं आए। न ही कुछ मेरा भाषण सुनकर के झूठा ज्ञान इक्ट्ठा करने के लिए आए हैं आप नहीं, जो साक्षात ज्ञान है, अन्दर से देखिए, जब भी आप ज्ञान माँगिएगा अन्दर से ज्ञान बहेगा, हरेक चीज़ स्पष्ट दिखाई देगी कि यही ज्ञान है। बहुत हो गया अपने बाल बच्चों के लिए और अपने घर द्वार की चिन्ताएं। आप विशेष स्थान पर बिठाए गए हैं, जो लोग विशेष होएंगे उन्हीं से विशेष कार्य घटित होएंगे।

मानव से अतिमानव हो गए हैं। आपके लिए यज्ञ भी दो किए थे पहले भी। आप जानते हैं कि पूरा प्रयत्न हम कर रहे हैं कि आपके सब अंग कमसकम परमेश्वर को समर्पित हो जाएं। उसी को समर्पित करना है अपने को, उसके लिए जो भी स्वच्छता होती है जैसे कि मां जब बाप घर आने वाला होता है तो बच्चों को कैसे धो-पोंछकर के, साफ करके, सामने presentation देती है! वही करने के लिए बड़े प्यार से हम लोग ये यज्ञ कर रहे हैं। अपने सारे चक्रों में से सब जो बहने वाली सारी शक्तियाँ हैं उससे सब मैं आपको प्लावित कर सकती हूँ। लेकिन आप कभी-कभी मुझे ऐसे जान पड़ते हैं कि मैं किसी दीवार से बात कर रही हूँ, किसी पत्थरों से मैं अपना सर टकरा रही हूँ। ये दुष्ट महादुष्ट, मेरी बात सुनने नहीं वाले। ऐसा नहीं होना चाहिए। सहजयोग में गहरा उतरिए। सारे संसार का सुख एक तरफ है और परमात्मा के चरणार्विन्द का सुख एक तरफ। उस परम सुख को पाने के बाद मनुष्य संसार के किसी भी सुख की ओर देखता नहीं, जिस तरह मनुष्य अमृत को पा लेता है उसके बाद वो क्या ये मृत चीजें पीने वाला है? उसकी शक्तियाँ अनेक आपके लिए सज्य हैं, आपके हाथ से बह रही हैं, आपको समझ में नहीं आता कि किस तरह से ये कहाँ पर काम कर रही हैं। मैंने बार-बार आपसे कहा है आप लोग सीख जाएं। आज प्रजापति का, ब्रह्मदेव का यज्ञ किया गया है। आप जानते हैं कि मनुष्य पाँच elements से बना हुआ है और ये जो पाँच तत्व हैं, उन तत्वों की पूजन करने का ही मतलब ब्रह्मा का पूजन करना है क्योंकि ये उनके आयुध हैं और ये भी प्रजापति को भी माँ ने ही दिए हैं। माँ के देखने ही से प्रकाश हुआ था, इसीलिए तेज का जो तन्मात्रा है या जो element है वो तैयार हुआ, या जो essence of element कहिए, तन्मात्रा का मतलब। माँ ने जब खुशबू ली, उसी सुगन्ध से ये पृथ्वी बनीं। इसी तरह से पृथ्वी तत्व तैयार हुआ। माँ के बोलने से ही sound का तत्व तैयार हुआ है, इसे नाद कहिए। इस प्रकार तन्मात्राएं जो हैं वो तैयार हुईं और जो तन्मात्राओं से फिर element तैयार हुए हैं। ये सब प्रजापति का कार्य है, ब्रह्मदेव का कार्य है और ब्रह्मदेव इसीलिए नहीं पूजे जाते हैं, उनको पूजा नहीं जाता। उसका कारण ये है कि वो संसार का सब कार्य करें। आपका जो शरीर है, आपका जो elements का काम है वो कर रहे हैं। उसके लिए उनको पूजने की जरूरत नहीं है, वो अपनी जगह बैठे वो काम कर रहे हैं। आपको सिर्फ दो ही चीजों को पूजना चाहिए- एक तो शिव को जिससे आपका existance बना रहे, आपका अस्तित्व बना रहे, आपके प्राण बने रहें और दूसरा आपको विष्णु को जो कि आपको evolution देता है जिससे आपकी उत्क्रान्ति होती है। लेकिन यज्ञ प्रजापति का करना जरुरी है, कि आपके अन्दर के जो पंचभूत हैं, आपके अन्दर के जो तत्व हैं, इन पंच महाभूतों के जो तत्व हैं, जिन्हें तन्मात्राएं कहते हैं, वो जागृत होकर के आपको भी उसका यश प्रदान करें।

पहले यज्ञ सिर्फ प्रजापति का ही होता था और बाद में विष्णु जी का भी शुरु हुआ। शिवजी जी का भी यज्ञ होना चाहिए, ऐसा लोग सोचते हैं लेकिन उनका यज्ञ नहीं होता है। उनका रुद्र होता है। उसके भी कारण हैं। शास्त्र में जो कुछ विधि लिखी हुई है उन सबके बहुत गहरे कारण हैं, इसलिए जो कुछ लिखा हुआ है उसको गर आप follow करते हैं तो कोई उसमें blindness नहीं है, उसमें अन्धता नहीं है। जबकि आपके पास vibrations हैं आप स्वयं vibrations से इसकी जांच पड़ताल

कर ले सकते हैं कि जो ये विचार है या जो कुछ किताब में लिखा है ये ठीक है या नहीं। बहुत सी जगह कुछ-कुछ घुसेड़ दिया है, हर एक पुस्तक में ये किया है, उसको भी आप देख सकते हैं अपनी vibrations पे। ऐसे कौन जान सकता है कौन आदमी पार है, कौन नहीं है, कौन realized है, कौन नहीं है? कौन God realized है, कौन ordinary realized है, कौन जीवन मुक्त है? सबकुछ आप vibration पे जान सकते हैं। आप हर एक चीज vibration से जान सकते हैं। जो अचेतन में है, जो unconscious में है, मनुष्य ने कभी नहीं जानी। उनकी एक-एक बारीक-बारीक चीज़ आप समझ सकते हैं। Vibrations के भी एक-एक ढंग होता है, एक-एक तरीका होता है, एक-एक उसकी लय होती है अलग-अलग। लेकिन अभी तो basis ही नहीं बन रहा है आप लोगों का, तो मैं कैसे आगे की बात सिखाऊं? अभी तो आप पहली ही class में बैठे हैं, उसी में एक मेरे को नोच रहे हैं, एक मेरे को घसीट रहे हैं, एक मेरे से झगड़ा कर रहे हैं, बुद्धू जैसे। अपना basis पहले ठीक कर लो फिर इस vibrations और एक-एक चीज के permulation और combinations से आप हर चीज समझ सकते हैं जो आप जानना चाहें। इतना ही नहीं, आप स्वयं भी उठते जा रहे हैं। जैसे जैसे मनुष्य उठता जाता है वैसे-वैसे वो ज्यादा जानते जाता है। आप जानते हैं कि जब आप नीचे खड़े थे तो आपको इतना नहीं दिखाई दे रहा था। इससे और ऊपर जाएंगे तो और आपको दिखाई देगा और गर और ऊँचे चले गए तो और कुछ दिखाई देगा। जब आप चन्द्रमा पर चले जाएंगे तो वहाँ से पृथ्वी और तरह की दिखाई देगी। वो पूरी की पूरी घूमती हुई आपको दिखाई देगी, उसका पूरा भ्रमण आपको दिखाई देगा। लेकिन यहाँ बैठे-बैठे तो पृथ्वी लग रही है जैसे कि चोकोर हो। इसलिए जैसे-जैसे आदमी उठते जाता है, उठने का तरीका ये कि एक ही है, एक ही है अपने बोझे उतारते जाइए, सब बोझों को उतार दीजिए। जैसे-जैसे बोझे उतरते जाएंगे आप अपने आप ऊपर उठते जाएंगे। फालतू के बोझे मेरा बाप ऐसा, मेरी माँ वैसी, मेरा भाई वैसा, उसको चाहिए, इसको चाहिए, मेरी सत्ता है, मेरा पैसा है, सब मूर्खता है, misidentifications हैं। आपको गर पाना है तो पाइए और अगर नहीं पाना है तो माफ़ कीजिए। दोनों चीजें नहीं चल सकती। यहाँ आप परम तत्व को पाने के लिए, उसमें घुलने के लिए आए हैं। यहाँ पैसा कमाने के लिए आप नहीं आए। यहाँ किसी तरह का भी व्यवसाय करने के लिए आप नहीं आए हैं। उसमें कोई भी bargaining नहीं है। सिवाए एक चीज कि आपको मैं परमतत्व से परिचित कराऊँ। फिर मुझे उसके लिए आपको डाँटना पड़ेगा, नाराज़ होना पड़ेगा, कभी सिखाना पड़ेगा और कभी प्यार करना पड़ेगा। गर आप इस चीज के लिए उत्सुक हैं और यही चीज माँगने आप मेरे पास आए हैं तो ठीक है, नहीं तो मुझे क्या? मैं तो औलिया हूँ मैं वैसे ही अपनी किताब बन्द कर दूंगी। तुम अपनी गरज़ से आ रहे हो, मेरी गरज़ से नहीं आए। मेरी भी गरज़ है क्योंकि माँ को बच्चों की गरज़ होती ही है। लेकिन ये माँ अजीब है, ये निर्मम भी है, बड़ी निर्मम है। एक दम से clearcut सब को बन्द भी कर सकती है। और उतनी ही मोहमयी और प्रेम करने वाली है। आज के यज्ञ में पूर्ण चित्त से, पूरे अपने को समर्पित करते चलिए और ये वाला यज्ञ विशेष रूप से पंचतत्वों का होने के कारण आप लोगों की समझ में ज्यादा आएगा। ये जड़तत्व पे है, लेकिन जड़तत्व भी जरूरी होता है। गर जड़तत्व स्वच्छ न हो तो बाकी का कुछ नहीं बनता। और आपके जड़तत्व ही गड़बड़ हैं। जब आपके जड़तत्व स्वच्छ हो जाएंगे तब हमारा कार्य बहुत सुचारु रूप से होगा।

शायद अब एक दो ही प्रोग्राम आप लोगों से अलग ऐसे होंगे, ऐसे तो आप जानते हैं कि 19, 20 और 21 को तीन दिन हमारा प्रोग्राम होने वाला है काबाजी, जहाँगीर हॉल में। उसमें से सवेरे का time ध्यान के लिए होगा और शाम का time भाषण आदि वगैरा। सवेरे ध्यान और curity होंगे। तीन दिन के लिए पूरे dedication के साथ, आप कहीं भी रह रहें हो, कैसे भी हो, कहीं भी हों, कोई बहानेबाजी मत करिए। आप अपने ही से बहानेबाजी कर रहे हैं। तीन दिन जैसे कोई शादी में जाता है, बड़ा भारी यज्ञ है। उसमें अगर आप आएं, पूरी तरह से, औरों को लेकर आएं, अपने मित्रों को लेकर आएं, दोस्तों को लेकर आएं, इसका प्रचार करें, घरों-घर जाएं। हम तो handbills भी छपाने की बात कर रहे थे लेकिन handbills की जगह अगर ऐसे कागज़ छप जाएं तो आप लोग ले जाइए उसको लिफाफे में डाल के सबके यहाँ भेज दीजिए, जिनको आप

सोचते हैं वो आना चाहें। जिस तरह से भी हो सकता है, लोग तो आ जाते है, लेकिन उसमें से कितने लोग असलियत से आते हैं? वही पाएंगे, जरा सा भी उनमें खोट होएगा, उनको नहीं भगवान देने वाले कुछ भी। यहाँ कोई बैठा नहीं आप लोगों की चापलूसी करने के लिए। ये कोई politics थोड़े ही न है। आप मुझे वोट नहीं देने वाले, मुझे आपको वोट देना पड़ेगा। ये उल्टी बात है। मुझे आपको certificate देना पड़ेगा। गर मैं आपसे नाराज़ हूँ तो भगवान भी आपसे नाराज़ हैं और सहजयोग आपसे नाराज़ है। इसलिए आपको मझे खुश करना पड़ेगा, मुझे प्रसन्न करना पड़ेगा। मुझे आपको वोट देना पड़ेगा, उल्टा मामला चल रहा है। घर से पैसा लगाकर भक्त लोग इकट्ठे करना अपने से नहीं होता। इसलिए अब याद रखिए कि गर आपको कहीं भी आना है, आपको अगर प्रोग्राम में आना है तो पूरी तरह से सादगी के साथ आइए, innocence के साथ आइए और हमें इसमें पाने का है ये सोचकर के वहाँ आना है। और कोई भी अपने घर के problems लेकर मत आइए। बहुत गलत तरीका है। ठीक है बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं, बीमारियाँ हम ठीक कर देते हैं। लेकिन इतने क्षुद्र लोगों के लिए सहजयोग नहीं है जो रात-दिन अपने घर में ही घुसे रहें। परम की बात पाने के लिए उस dedication के साथ आइए, उसको समझने के लिए आइए और सबलोगों से कहिए कि वो पाना बहुत जरुरी है।

बहुत कुछ पहले भी कहा है, अब भी मैने कहा है। कितनी चीजें अन्दर गईं, भगवान जाने और कितनी चीजें बाहर ही रुक गईं, भगवान जाने। इस पर विचार करें। माँ बार-बार कहती है, हर तरह से सर फोड़-फोड़के भी कहें तो भी गर समझ में नहीं आया तो हृदय खोल-खोलकर कहती है। जो कुछ उससे बनता है, पूरी तरह से आपकी कुण्डलिनी को पूरी तरह से जागृत करके और उसको सहस्रार से पूरी तरह से साफ़ करके, अत्यन्त सुचारु रूप से, उसमें भी वो पुष्प-वर्षा करती है। लेकिन आपकी अगर नाक ही बंद हो, आपकी गर आँख ही बंद हो, आपके गर कान ही बंद हो, और इस प्रकार आपका सभी कुछ जो कुछ जानने के यन्त्र हैं, सब आपने बन्द कर लिए हैं तो मैं सहजयोग से क्या दे सकती हूँ? इसीलिए आज के यज्ञ में आपके यही पाँच यन्त्र मैं खोलने वाली हूँ। प्रयत्न करूंगी। आप भी अपने को समर्पित करें और कहें कि हे प्रभु हमारे खोलो। प्रजापति से यही कहना कि हमारे ये यंत्र खोलो और हमें कुछ नहीं चाहिए। इस वक्त सब अपनी फालतू की चीजें अपने जूतों के साथ बाहर रख दो। सब व्यर्थ चीजें बाहर रखकर के यहाँ बैठो और अनन्त का जो प्रेम है उसको पाओ।

परमात्मा आपको धन्य करें।

(मूल आडियो के अनुरूप)

निर्विचार में रहो

मुम्बई-18-12-1977

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

तुम लोगों को बुरा लगेगा इसलिए मराठी में ही बोलने दो। मैं कह रही हूँ कि तुम्हारे सामने जो भी प्रश्न हैं उन प्रश्नों को तुम अचेतन में छोड़ो, वो मेरे पैर में बह रहा है। माने ये कि कोई भी प्रश्न है, अब तुमको अपनी लड़की का प्रश्न है समझ लो, उसमें खोपड़ी भिड़ाने से कुछ नहीं होने वाला। जो भी प्रश्न है आप यहाँ छोड़ दो, उसका उत्तर मिल जाएगा। अब तुम अगर सोचते हो कि इस चीज से लाभ होएगा वो नहीं बात। जो परमात्मा सोचता है, तुम्हारे लिए जो हितकारी चीज है, वो घटित हो जाएगी। वो तुम कर भी नहीं सकती हो। इसलिए उसको छोड़ दो तुम क्यों बीच में टंगड़िया तोड़ रही हो? तुम क्यों परेशान हो रही हो? तुमको परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं। तुम छोड़ तो दो, जो तुम्हारे सारे प्रश्न को हल करने के लिए पूरी इतनी कमेटी बैठी हुई है उनके पास छोड़ो तुम। सहजयोग में यही तो कमाल है कि सर का बोझा उतर गया उनकी खोपड़ी पर। छोड़ के देखो। ऐसे कमाल होएंगे, ऐसे कमाल होएंगे कि बस। लेकिन मनुष्य की खुद्दारी की बात हो जाती है। आखिर तक वो ऐसा ही सोचता रहता है कि नहीं मुझी को करना है, मुझी को करना है। और सोचते रहिए। एक के ऊपर एक ताना बाना चलता रहेगा। कितना भी आप करते रहिए, आखिर में आप पाइएगा कि आप कहीं भी नहीं पहुँचे, आखिर पागल खाने में ही आप जाइएगा। आपके प्रश्न हल करने के लिए बहुत बड़ी कमेटी बैठी हुई है। उसमें पाँचों तत्वों के अधिनायक बैठे हुए हैं, ब्रह्मदेव। सारे धर्म के बनाने वाले बैठे हैं विष्णु और सारे संसार की स्थिति लेकर के और लय लेकर के बैठे हुए हैं शंकर जी। उनको भी तो कभी-कभी चांस दो, कि तुम्हीं लोग सारे प्रश्न को ठीक करोगे? और जैसे ही आप निर्विचार में होना शुरु कर देंगे, आप देखिएगा आप के अन्दर ये तीनों ही शक्तियाँ अपने आप बन जाएंगी। अपने आप सुलझ जाएंगी-धर्म, अर्थ और काम-बिल्कुल वो ठीक से अपनी अपनी जगह बैठ जाएंगी। निर्विचारिता में रहने से आपके अन्दर के जो प्रश्न है उसमें cosmic change आता है। ये कोई अंदरूनी घटना घटित होती है। उसके सूत्र पे घटना होती है। जैसे एक आदमी समझ लीजिए, शराब पी रहा है। मिसाल के तौर पे। वो मेरे पास आता है माताजी ये शराब पीता है इसकी शराब छुड़ाओ। उसकी कुण्डलिनी जागृत करते ही उसके अन्दर की cosmic दशा ऐसी हो जाती है कि वो शराब पीता है तो उसको उल्टी होती है। फिर ये भी हो सकता है कि शराब की भी जो मादक शक्ति है उसको भी खत्म कर सकते हैं। जब शक्ति पे बैठे हैं तो हर तरह की शक्ति को ले सकते हैं। जितनी भी तत्व शक्ति है उस सबको खत्म कर सकते हैं। लेकिन आप जो ये अपने छोटे से दिमाग से हरेक चीज को सुलझाने का प्रयत्न करते हैं, उसी में गड़बड हो जाती है। बिल्कुल निर्विचार। मेरे पैर पे भी लोग रहते हैं तो भी वो विचार में रहते हैं। मुझे इतना आश्चर्य होता है! कम से कम मेरे पैर पे तो विचार छोड़ दो। वहाँ पे भी उनका चलता रहता है विचार। मैं कोशिश कर रही हूँ, हाथ पैर चला रही हूँ, ये कर रही हूँ, सारा ताण्डवनृत्य हो रहा है और ये लोग इधर विचार ही कर रहे हैं! कम से कम मेरे पैर पे विचार छोड़ना आना चाहिए। फिर धीरे-धीरे ये आदत बनते जाएगी, निर्विचारिता की। बस एक छोटी-सी चीज है कि निर्विचार में रहना सीखो, कोई सा भी आपका प्रश्न हो निर्विचार में रहो। ऐसे मैं आपको सुझाव देती रहती हूँ- आपका ये चक्र क्यों पकड़ता है, वो चक्र क्यों पकड़ता है, छोटी-छोटी बातें हैं उसको समझ लेना चाहिए। आपका शरीर ठीक रखो, मन ठीक रखो। मन की भी बहुत सारी बीमारियाँ होती हैं। औरतों को बीमारी होती है कि आदमियों के पीछे में मरो खास करके, आदमियों को और बीमारियाँ होती हैं। मन की अनेक बीमारियाँ होती हैं। उधर जरा-सा चित्त रखो, निर्विचार में रहो। एक छोटी-सी चीज करने से आपका जो स्वयं हृदय में बैठा हुआ 'स्व' है उसका प्रकाश फैलना शुरु होगा। अब ये ही प्रकाश है जो आपके अन्दर vibration की तरह से बह रहा है। ये आपके अन्दर बसा हुआ, परमात्मा का जो अंश है 'स्वः' (Self) इसका प्रकाश सारे संसार में जाता है और लौट के आपके पास आ जाता है सारा झोली में। अनेक उसकी लहरें चलती हैं। गोल गोल घूमके आपके हृदय में आ जाता है। अपनी जो बाती है उसे ठीक रखो, आपका शरीर ठीक रखो, जो आपका दीप है। आपकी जो शक्ति

है तेल, दिमागी जमाखर्च जो है उसमें खर्च न करो। लौ को सीधे लगाओ। जो लौ के ऊपर का हिस्सा है उसको माँ से चिपका लो। उसके पैर में बांध दो। सीधी की सीधी लौ निर्विचारिता में निर्भीकता से जलती है। और जब ऐसा आदमी कहीं खड़ा होगा तो उसकी तेजस्विता देखकर लोग कहेंगे कि भई तुम्हारे गुरु कौन हैं? ये तुमने किससे पाया? यही सहजयोग के लिए, आप लोगों को करना है। जहाँ तक हो सके निर्विचार रहें। हम तो धक्का दे ही रहे हैं कुण्डलिनी को, आपको भी वहाँ रखने की कोशिश कर रहे हैं, आप भी जरा कोशिश करें। कोई विचार नहीं आना है। और अपना माथा किसी के आगे मत झुकाना। याद रखना किसी के आगे जाकर माथा नहीं झुकाना है। कोई भी हो। बहुत से सहजयोगी लोग सहजयोगी के आगे माथे झुकाते हैं। ऐसा मैंने देखा है। ये सब फालतू की बातें करने की ज़रूरत नहीं है। मूर्तियों में भी देख के जिसके vibrations ठीक हों, ठीक है। मूर्तियों से आप बहुत बड़ी मूर्तियाँ हैं, आप स्वयं एक मंदिर हैं। क्या वो मूर्ति थोड़ी आपके vibrations जानती है, वो तो उसमें से vibration बस आ ही रहे हैं, बस और क्या हो रहा है? आप तो अपने हाथ भी चला सकते हैं। दूसरे को आप जागृति दे सकते हैं, किसी के चक्र खराब हों, उसको आप ठीक कर सकते हैं। मूर्ति तो वहाँ बैठी सिर्फ vibration ही छोड़ रही है। सहजयोग में बम्बई सेंटर में बहुत काम हुआ है, इसमें कोई शक नहीं और लोगों ने बहुत अपने को ऊँचा उठा दिया है। और वैसे भी महाराष्ट्र में बहुत काम हुआ है, एक छोटे से गांव में, राहुरी में बहुत काम हुआ है। जितना आप गहरा उतरेंगे उतना ही गहरा काम होगा। अपने को बहुत ज्यादा लोग नहीं चाहिएं, थोड़े ही लोगों से काम बन जाएगा। लेकिन जो भी हों वो पक्के हों।

(मराठी प्रवचन----------)

(मूल आडियो के अनुरूप)

(शेष भाग पृष्ट 27 से.....)

घूमने अकले नहीं गए, आपको आश्चर्य होगा, लेकिन कुछ मुझमें कमी नहीं हैं, मैं तो मस्त हूँ। मुझे कोई नहीं और उनमें भी कोई कमी नहीं है। गर ये चीज़ समझ ली जाए कि हमारी आत्मा से ही हम आनन्द को प्राप्त कर सकते हैं और जिस सुख को हम सोचते हैं वो विनाशी सुख है। तो जब तक आनन्द में रहना है आनन्द में रहो। ये चीज़ नहीं की, वो चीज़ नहीं की, ऐसा नहीं किया, दोनों का भी कहना ये दुख का कारण है। आज इसलिए मैं बता रही हूँ कि मनुष्य निसंग में आ जाए, निसंग में, बिल्कुल, कोई भी चीज़ उसको न रोके, जहाँ किसी भी चीज़ की लालसा, किसी भी चीज़ की इच्छा उसको न दबाए। तब कहना चाहिए कि वो सहजयोगी है। तब वो सहजयोगी हो गया। जहाँ वो किसी भी इच्छा से- पूरा नहीं, ये चीज़ नहीं हुई चलो दूसरी चीज़, वो चीज़ नहीं हुई चलो दूसरी चीज़, ऐसा जो मस्त रहता है आदमी उसको कहना चाहिए वो सहजयोगी है। और आशा है इस दिल्ली शहर में आप इस तरह के लोग तैयार होने वाले हैं और होएंगे क्योंकि अब हमारा आश्रम बन गया है और आज इस शुभ अवसर पर हमने शिवतत्व को प्राप्त किया है जो आनन्द लोग देखकर के सोचें कि हाँ साहब आनन्द में है, और आनन्द की जो लहर होती है एक आपस में जो एक उसका फैलाव होता है, देखकर के मैं ही खुश हो जाती हूँ। मेरे बच्चे इतने आपस में खुश हैं, इतने प्रेम से बैठे हैं और एक दूसरे का मज़ा उठा रहे हैं। यानि जब इन लोगों की दोस्ती देखती हूँ तो ऐसा लगता है कि ये दिल्ली जो है अब बदल रही है। जहाँ पर दोस्ती नहीं, आपस में इसको काट, इसको खींच, इसको ये कर, एक को नीचा कर, एक को ऊपर कर, उस जगह ये दोस्ती का वातावरण और इतना शुद्ध, दोस्ती के लिए दोस्ती, प्यार के लिए प्यार, इससे बढ़के और माँ को कुछ नहीं चाहिए। ये जिस दिन हो जाए तो मैं कहूं कि इस आश्रम बनाने का और मेरी जो मेहनत है उसका सब मुझे फल मिल गया। आशा है, आज आप अपने शिवतत्व को स्थापित करें।

परमात्मा आपको धन्य करें।

(मूल आडियो के अनुरूप)

सहजयोग की एक ही युक्ति है।

नवरात्रि, मुम्बई, 30 सितम्बर, 1979

.....अपने भक्तों को संरक्षित किया। ये बड़ा भारी कार्य एक जमाने में हो गया है जबकि भक्त लोगों को हर तरह से दुष्ट राक्षस आदि शैतान के अनुचर सताया करते थे। आज भी संसार में शैतानों की कमी नहीं है, दुष्टों की कमी नहीं है, राक्षसों की कमी नहीं है। और इनके जो राक्षसी विचार हैं और जो इनके गलत तरीके हैं उनसे आज सारा ही संसार ज्यादा ही लिप्त नज़र आ रहा है। और इसीलिए इनमें से निकलने के लिए भी मनुष्य अधिक प्रयत्न कर रहा है। इस नवरात्रि में न जाने कितने ही लोगों का Realisation हुआ है और बहुत से लोगों ने इस आत्मज्ञान को पाते वक्त अपने अन्दर की जो कुछ भी तकलीफें थी, जो कि इन राक्षसी आक्रमण की वजह से आ गईं थीं, उनसे भी छुटकारा पाया। लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि सहजयोग में आप स्वयं भी जागृत हो गये हैं। इतने लोगों का जागृत होना कभी भी संभव हो सकता है ऐसे मैं भी नहीं सोचती थी और इतने थोड़े समय में इतने लोग जागृत हो गये ये बहुत बड़ी एक हम लोगों ने मंजिल पाई हुई है। इस मंजिल से अब जब देखते हैं तो ऐसा लगता है कि बहुत जल्दी इस साल भर के अन्दर ही बहुत कुछ काम आप सभी लोग कर सकते हैं। आज मैं आपसे इसलिए बात कर रही हूँ कि आप अब सहजयोगी हैं सब, आपने योग में पाया है, आप लोग योगी हो गये, आप लोग अब योगी हैं। आप ordinery लोग नहीं हैं। सर्वसाधारण लोग नहीं है। आप योग में आ गये। अब आप योग भ्रष्ट नहीं हो सकते। आपको उस योग के अनुसार चलना चाहिए। माने दो चार आपमें जैसी आदतें हैं जरा सा आप Will Power लगायें तो हम शक्ति देने के लिए तैयार हैं, आप अपनी आदतें छोड़ दें। बहुत ज्यादा बोलना , बहुत कम बोलना, ये भी ठीक नहीं है। सब चीज में बीच-बीच में आना है। कोई अति पे नहीं जाना है। कोई आदमी हर समय पैसे की बात सोचता है या हर समय किसी सत्ता की बात सोचता है उसको भी बीच में लाना चाहिए। अपने मन को बीच में लाना चाहिए, मतलब ये कि निर्विचारिता में आना चाहिए। **अपनी निर्विचारिता को आप धीरे-धीरे बढ़ायें। जितना निर्विचारिता का, विलम्ब का स्थान बढ़ता जाएगा उतने ही आपके अन्दर में परमात्मा की शक्ति ज्यादा बढ़ती जाएगी।** यानि आपका caliber जो है वो wider होते जाएगा और आपके अन्दर ज्यादा शक्ति बढ़ती जाएगी। अब जब ये ज्यादा शक्ति आपसे बढ़ रही है तब इस शक्ति को भी उपयोग में लाना चाहिए। अगर शक्ति बढ़ती गई और आपने उसको उपयोग में नहीं लाया तो हो सकता है कि थोड़े दिन बाद ये caliber फिर छोटा हो जाए। अब आपको घर जाके बैठना है और सोचना है, मनन करना है कि हम किस तरह से सहजयोग को बढ़ा सकते हैं। किस-किस जगह हमारा स्थान है, कौन लोग हमें मानते हैं, उनकी लिस्ट बनाइये। कौन-से ऐसे areas हैं जहाँ हम जाकर के इसको प्रस्थापित कर सकते हैं। उसके लिए जो भी आपको जरूरतें हैं, हमारे अलग सेंटर हो गए हैं, आज मैंने कोलाबा में भी एक सेंटर खोल दिया है कफकैसल में। और इस तरह से हर जगह एक-एक सेंटर अब आपके लिए हो गया है और आप गर कहीं खोलना चाहते हैं तो वो भी आप देख लीजिए। आपके रिश्तेदार, आपके पहचान वाले, आप जहाँ पे कार्यान्वित हैं वहाँ, कितने लोगों को आप सहजयोग में ला सकते हैं उनको लाकर के और इस संसार का कल्याण करने का है। सारी humanity का अपने को कल्याण करना है और आप जो आज यहाँ बैठे हुए हैं ये उसके पाये हैं। आपकी जिम्मेदारी बहुत ज्यादा है। और मेरे ख्याल से सहजयोगी अपनी जिम्मेदारी नहीं समझते। 20-25 आदमी गर जिम्मेदारी लेकर के चलें तो सहजयोग नहीं चल सकता। हर आदमी को चाहिए की अपनी-अपनी जिम्मेदारी समझें, अपने-अपने विचार से ये तय कर लें कि हम सहजयोग किस तरह से बढ़ाएंगे, कहाँ तक ले जाएंगे। इसके लिए आप स्वयं प्रबुद्ध हो गये हैं आपको मुझे बताने की ज़रूरत नहीं हैं। आप सिर्फ बैठ कर इस पर विचार करें। आप जानते हैं कि बहुत से लोग कभी भी भाषण नहीं देना जानते थे, वो लोग भाषण देने लग गए हैं। इतनी शक्ति आप के अन्दर तब आएगी जब आप दूसरों को देंगे, नहीं तो आपकी शक्ति कम हो जाती है। ये सबने जाना है कि आपकी शक्ति कम हो जाती है गर आप दूसरों को शक्ति न दें। मैं ये नहीं कह रही कि आप

लोगों की बीमारियाँ ठीक करिए। बीमारी के लिए आप मेरा फोटो दीजिए। लेकिन औरों से बात करें, उनको सहजयोग में लायें, उनको Realisation के लिऐ लायें, फोटो पे बिठा कर के आप Realisation दें। आप, जरूरी नहीं कि आप फोटो से हट के realisation दें। जहाँ तक हो सके फोटो का इस्तेमाल करें जिससे आप पूरी तरह से सँरक्षित रहें। जिससे आपको कोई तकलीफ न हो, कोई आपके अन्दर Ego न आ जाए, कोई गलत चीज़ न हो जाए, आपकी निर्मलता बनी रहे। लेकिन कितने लोगों को सहज में लाना है ये बहुत जरूरी है। जितने आप ज्यादा सहजयोगियों को अंदर लाइएगा उतना ही आपका भी सहजयोग बलवत्तर होएगा। लेकिन इसके लिए ये एक जरूरी तो है कि आप भी पक्के सहजयोगी हों, अगर आप ही डावाँडोल हैं तो आपके साथ आये हुए भी बेकार गये। क्योंकि जो आपके साथ आएगें वो आपके साथ ही डूबेंगे, इसलिए आप भी अपने को पक्का कर लीजिए। अपने को पक्का करना बहुत जरूरी है। अपनी जहाँ community है, अपने जहाँ लोग हैं, बहुत कुछ हो सकता है। अगर आप बैठें कि हमारा यह संघ हैं हमारा ये समाज है, ये यहाँ पर हम इसके मेंम्बर हैं, हम उसके मेम्बर हैं। या किसी के आप मेम्बर हो जाइए जहाँ ऐसे-ऐसे समाज हैं, और उनसे आप बातचीत करें क्योंकि हमको सारे संसार को बदलना है। बहुत बड़ा काम है। दिखने में हम सर्वसाधारण लोग हैं, पर हमारे ही हाथ से ये कार्य करना है तो हम सबको एकत्रित होना है। एक जुट से रहना चाहिए और इसपे पूरी तरह से एकाग्र होना चाहिए। इसके लिए शक्ति तो मैं आपको दे रही हूँ, जितनी चाहिए आप शक्ति ले सकते हैं, और मिल सकती है और आप लोग पाइए और अपनी शक्ति को पूरी तरह से आप बढ़ा लीजिए। **लेकिन इसकी जो एकनिष्ठता है और एकाग्रता है वो आपको लानी पड़ेगी। सबसे बड़ी चीज ये है कि सहजयोग का एक ही बड़ा लोकिंग point है, जो आप समझ गए होएंगे।** एक ही इसकी युक्ति है, एक ही इसकी चीज़ है कलियुग में जो बहुत सरल भी है और बहुत कठिन भी है। वो आज मैं अपने मुँह से आपसे बता रही हूँ। आजतक जितने भी अवतरण संसार में हुए हैं उसको आपने नहीं माना। नहीं माना ठीक है। चलो जो भी गलती हो गई माफ़, लेकिन अगर मुझे आपने नहीं माना है कि मैं एक अवतरण हूँ तो आपका सहजयोग नहीं चल सकता, कुछ नहीं। ये एक compulsion है। ये पहले ही से compulsion मेरे लगा करके मैं संसार में आई हूँ और इसी compulsion को आपको मानना ही पड़ेगा। अगर आपने माना नहीं तो सहजयोग नहीं चलने वाला, कुछ नहीं चलने वाला। सब देव-देवता मेरे अंदर बैठे हुए हैं। ये आप सहजयोगी हैं इसलिए मैं खोल के बात कर रही हूँ। सारे अन्दर बिठाकर मैं आई हुई हूँ और आपको उसका पूरा उपयोग कर लेना चाहिए और समझ लेना चाहिए। अगर आपमें वो एकनिष्ठता नहीं रहेगी तो सहजयोग भी नहीं चलने वाला और आप भी नहीं चलने वाले और सारा संसार भी डूबने वाला है। अब ये आखिरी चांस सारे संसार को मिला हुआ है कि एक incarnation जिसके अन्दर सारे देवी देवता बिठाए हुए हैं और ऐसा incarnation जो माँ के स्वरूप आया है, आपको समझा रहा है, बात कर रहा है, आपसे बहुत प्रेम से, सहृदयता से सब कार्य करा रहा है। और बहुत मेहनत कर रहा है। रात दिन आपके साथ लगा हुआ है। और आप जानते हैं कि किसी भी तरह से मैं अपने शरीर को किसी भी तरह से देखती नहीं हूँ सिवाए आपके आराम को देखने के। लेकिन आपके अन्दर ऐसे बहुत से लोग हैं जो अभी भी अधमरे हैं बहुत से लोग हैं जो बिल्कुल जिसको मराठी में अर्धवत कहते हैं माने जिनका दिमाग आधा इधर आधा उधर है और जिसको क्राइस्ट ने कहा था कि these half believers! उस तरह के जो लोग हैं वो बिल्कुल बेकार होते हैं क्योंकि Christ ने कहा था कि ये murmur करते रहते हैं। ये बड़, बड़, बड़, बड़, करते रहते हैं और इनकी बड़, बड़, में कोई अर्थ नहीं होता। बेकार की चीज़ की तरफ़ बहुत लोगों का चित्त जाता है लेकिन असली चीज की तरफ उनका चित्त नहीं जाता। ये बहुत गलत बात है और इसलिए सहजयोग के जो नियम हैं उनको पालना चाहिए। पहली तो चीज ये है कि हमारे सहजयोग में नियम है कि आपको कोई भी किसी को भी एक भी पैसा सहजयोग के नाम पे लेने का अधिकार नहीं है। जिस प्रकार कोई सा भी काम अनअधिकार करने से आपको नुकसान

होता है उसी तरह से अनअधिकार एक भी पैसा आपने लिया है तो आपको नुकसान होगा। ये बिल्कुल मैं आपसे बता देती हूँ कि सहजयोग में अपने पर्सनल खर्चे के लिए किसी को भी एक भी पैसा नहीं लेना चाहिए और आप जानते हैं कि मैं खुद ही अपना घर का पैसा खर्चा करके कितने काम करती आई हूँ। लेकिन दूसरी बात भी इसकी होनी चाहिए कि सहजयोग, ये हालांकि बिल्कुल बगैर किसी मूल्य के सबको मिलता है लेकिन इसका मतलब नहीं कि ये cheap चीज़ है, ये सस्ती चीज नहीं है। ये बहुत मूल्यवान चीज़ है। ये अब आप जानते हैं कि हर चीज़ का खर्चा होता है, इस हाल का खर्चा होता है, उस हाल का खर्चा होता है। हॉल में प्रोग्राम होता है। कल (अभिषेक) के सामने गाना गाया उसका खर्चा होता है, पूजा का खर्चा होता है और जो लोग पूजा में भी पैसा नहीं देते हैं और फिर आकर मुझे कहते हैं कि हमारा लक्ष्मीतत्व खराब है, तो होगा ही। कल ही मैंने बताया था कि अपना selfrespect होना चाहिए आदमी को! इसका मतलब आप अपने आत्म-सम्मान को बढ़ायें अपने अन्दर आत्मसम्मान होना चाहिए और सोचना चाहिए कि हमारे समाज में जो भी कार्य करने पड़ते हैं उसके लिए पैसा चाहिये। कि माताजी अपना ही पैसा देंगी क्या हमेशा? ये अच्छी बात है क्या कि आपके कल्याण के लिए मैं पैसा दूं? या मेरे पति पैसा दें? उन्हीं का कल्याण हो रहा है फिर। पैसा तो, उनका ही लक्ष्मी तत्व अच्छा हो रहा है, तुम लोगों का इतना अच्छा नहीं हो रहा है। अपनी भी कुछ लक्ष्मी खर्चनी चाहिए। सब को धर्म से कहना चाहिए कि माँ हम लोग सब अपने ही मन से देना चाहिए। आपको मालूम है- अपना खर्चा कितना है हाल का खर्चा कितना है खाने पीने का खर्चा कितना है, सब चीज़ का खर्चा कितना है। लोग खाने का भी पैसा देने को तैयार नहीं। मुफ्त में खाना खाएंगे। ऐसे लोग हमें नहीं चाहिएं। मुफ़्तख़ोर लोग सहजयोग में चाहिएं नहीं। ठीक है, सहजयोग एकदम मुफ़्त है। एकदम फ़्री है। पर मुफ़्तखोरों के लिए नहीं है। कहाँ से लाएं बताइए। इसका पैसा देने का है तो क्या माताजी दें?

दूसरी बात ये है कि हमारे organization का भी बड़ा गड़बड़ दिखाई देता है। जब हम एक माँ से पैदा हुए हैं तब हम सब बच्चों में आपस में प्रेम होना चाहिए। आपस में बहुत प्रेम करना चाहिए, सबको समझना चाहिए। बड़ा मज़ा आता है, जरा प्यार करके तो देखो। प्यार का मज़ा और होता है और दुश्मनी करने का, द्वेष करने का, ईर्ष्या करने का, झगड़ा करने का, आते ही साथ मेरे को सबके complaint सुनाई देते हैं- उन्होंने हमको inform नहीं किया, उन्होंने हमको नहीं बताया, वो हमसे नहीं बोले, फलाने ने ये किया। दूसरा आएगा वो बोलेगा इन्होंने ऐसा किया वैसा किया। मैं कहती हूँ अरे बाप रे बाप। ये अपने हिन्दुस्तानियों की बीमारी है खास। पर सिर्फ बम्बई वालों की भी ख़ास है। नहीं तो ये कि मेरे को इसने मारा, मुझे उसने मारा, मेरी बीबी ने मारा, मेरे लड़के ने मारा, रात दिन रोनी सूरत। आप लोगों को चाहिए कि अपनी प्रतिष्ठा पे खड़े हों, आप प्रतिष्ठित हैं, हमने आपको प्रतिष्ठित किया है। आप जानते हैं आप कौन हैं। आपको मैंने वो चीज़ दी है जो गणेश को दी थी! आप पूजनीय, संसार के वर्णनीय लोग हैं और आप कर क्या रहे हैं? वो अपनी बुरी आदतें और पहली बातें भूल जाइए। अब आप राजा हो गये हैं अभी भी भिखारियों जैसे आप झोली लेकर काहे को घूम रहे हैं बाबा? आप राजा के लड़के थे, खो गए थे, फिर से आपको राजा बना दिया अभी फिर से वही भिखारी जैसे घूम रहे हैं? अपनी प्रतिष्ठा पे खड़े होना है।

तीसरी चीज ये है कि आपके अन्दर जो young लोग हैं, 25-30 जो भी हो, अलग-अलग जगह के, जहाँ-जहाँ रहते हैं अपने नाम आज ही देके जाना। मैं जाने से पहले देखूंगी और आप सब अपने-अपने एक एक सेंटर सम्भालिए, organize करिए और उसके इंर्चाज जितने भी लोग हैं उनको संभालिए। कोई मुश्किल काम नहीं, इतने आदमी हैं, क्या मुश्किल है? इसमें जिस जिस को नाम देना है आज ही पूजा के बाद जा करके नाम दे दें। आज ही व्रत कर लें कि हम माँ करके दिखाएंगे काम और हम समझा देगें कि हम इतने लोगों को इक्टठा कर रहे हैं। सब लोग एक एक जिसको भी जो सोचता है 25 कम से कम नाम होने चाहिएं, ज्यादा भी हो सकते हैं। जो बुजुर्ग लोग हैं उनको सताने की ज़रूरत नहीं है, बच्चों को अभी रहने दीजिए। आप जो Young लोग हैं वो अपने ऊपर लें। सब, आप

भी ले सकते हैं। आप भी, वहाँ पर हो सकता है आपके अपने क्षेत्र में। इस तरह से सब लोग गर अपने अन्दर ऐसा ले लें और आपस में ऐसे लोग सब मिला करें, कभी चाय पर मिलें, कहीं किसी तरह से मिलें और मैं एक साल बाद आकर देखना चाहती हूँ कि सहजयोग कितना फैल गया है। एक बड़ी अच्छी बात है कि इस वक्त गुरु सिंहस्थ आने की वजह से सहजयोग बड़ी जोर से बढ़ सकता है, अगर आप लोग जरा प्रयत्न करें तो। तो इस तरह से हमारी जो बातें हैं उसको समझ लेना चाहिए। अब देखिए हमें लक्ष्मीतत्व की आपको बात मैंने कही। जो दूसरी बात मैंने कही organisation की ये है सरस्वतीतत्व की। इसमें है सारा organize कैसे करना लोगों को कैसे बुलाना किस तरह से उनको चालना देना, उनको समझना, उनको जोड़ लेना। हर एक सेन्टर में, हर एक मोहल्ले में, एक एक लीडर बन सकता है, और बहुत अच्छे से organise कर सकता है। अब लंदन वगैरा में जैसा कर रहे हैं या जैसे पूना के लोगों ने किया उस तरह से करना चाहिए। एक आदमी है वो पच्चीस आदमियों को जोड़े रखता है। आपस में मिलना जुलना, भई तुम कैसे हो, तुम कैसे हो, तुम्हारा क्या चल रहा है, कैसे, सब आपस में प्यार से बातचीत करें। दोष नहीं देखने का, उनमें ऐसा है, नहीं तो उनका मज़ाक करना उनका दोष देखना आदि नहीं करने का। आपलोग सब आपस में देख लें, इतना मज़ा आएगा, दोस्ती में इतना मज़ा आएगा जिसकी कोई हद नहीं। जैसा भी जहाँ हो सकता है जिसको भी आप ले सकते हैं उनको लेकर के और आप इसको workout करें। और मैं जो जो लोग हैं उनसे पूछूंगी next year कि क्या किया इन्होंने। तो आप लोग इसकी गर कोशिश करें और Per Month सब लोग कम से कम पांच दें उससे ज्यादा दें, जैसा दें, पैसा देना चाहिए। अब जो आदमी ज्यादा कमाता है उसको पांच देने में कोई sense ही नहीं है।

दूसरी बात ये है कि पूजा में हमेशा ऐसे लोगों को बुलाना चाहिए जो हमेशा आते हैं पूजा में और जिनका सहजयोग में कोई स्थान है। ऐसे लोगों को नहीं बुलाना चाहिए जो कभी भी चले आए, आ गए। सहजयोग में ऐसे आधे-अधूरे लोग नहीं चल सकते। कम-से-कम पूजा का वरदान उनको नहीं मिल सकता। सहजयोग में दो तीन रिगंस चलती हैं, आपने नोटिस किया होगा, एक तो Peripheri पे होती है जो जन समुदाय है उसमें ज्यादातर लोग पार नहीं हैं। उसके अन्दर की रिंग होती है जिसमें लोग पार हो गए हैं। उसके अन्दर की रिंग होती है कि जो आते हैं आधे, आधे नहीं आते। उसमें पार होने पर भी सबलोग आते नहीं, आते हैं आधे, आधे नहीं आते। उसके अंन्दर की रिंग होती है जिसके अन्दर लोग हमेशा आते हैं और उसके अन्दर की रिंग है जो बहुत ही dedicated हैं और हम सब को जानते हैं। हमें Certificate देने की जरुरत नहीं, हम हर एक आदमी को जानते हैं। आप इसको समझ लीजिए। हमें किसी के बारे में कुछ बताने की ज़रूरत नहीं है और शिकायत करने की ज़रूरत नहीं है। इस तरह से आप लोग समझदारी से रहें क्योंकि ये समझना चाहिए कि आप लोग विशेष लोग हैं। आपको परमात्मा ने विशेष रूप से choose किया है। आपके अन्दर अन्दर ये कुण्डलिनी जागरण करा दिया है और आपके ऊपर ये सरताज लगाया है कि आप योगी बन गये हैं, घर में बैठे हुए आपको इसके लिए कुछ नहीं करना पड़ा। अब पुरुषार्थ करना होगा। जो पुरुषार्थ करेगा वो बहुत कुछ पा सकता है और जो नहीं करेगा वो नहीं पा सकता। जो चीज़ आप देते ही नहीं वो आप कैसे पा सकते हैं? अगर आप सरस्वती, आपको कितनी भी सरस्वती का हम ज्ञान दें, एक लड़का है पढ़ता नहीं, कि माँ ये पढ़ता नहीं उसको ले आए, उसको हमने first class में पास किया और first class में पास होने के बाद भी वो बेवकूफ जैसा घूमता रहा और कुछ भी उसने सरस्वती का कार्य नहीं किया तो उसके पास सरस्वती कितने दिन टिकेगी? आखिर आप यही बताइए कि दीप आप जलाते हैं तो प्रकाश देने के लिए जलाते हैं कि क्या उसको बिठा करके आप अपने आंचल में छिपा लेते हैं? आपके दीप जले हैं इससे अनेक दीप जलने चाहिएं। बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। आप ही मेरे हाथ हैं और आप ही मेरी आंखें हैं, आप ही मेरा सबकुछ हैं। आपके ही through हो सकता है। अगर मेरे से बनता तो मैं क्यों आपके सामने गिड़गिड़ाकर कहती कि बेटे ये चीज़ को करो। तुम लोग मेरे हाथ हो, हाथ के बगैर कोई काम नहीं हो सकता। पर समझदारी से रहना चाहिए और

अपने अंदर अहंकार आदि झूठी चीजें नहीं लानी चाहिएं। और मुझे कुछ नहीं चाहिए, मैं सिर्फ ये चाहती हूँ कि ये आप लोगों का जो जीवन है, योगियों का जीवन, ये अत्यन्त सुन्दर जीवन बने और आपके साथ अनेक आपके कारण कल्याण के मार्ग में आएं और परमात्मा के साम्राज्य में स्थित हो जाएं। ये आखिरी काम है हमारा, और इसमें थोड़ा हमारी मदद कर दीजिए। सब काम हो जाएगा। हम आपसे कहते हैं कि आश्चर्य की बात है कि इंग्लैण्ड के लड़के जो हैं हमारी पास में हालां सब west से हैं, उनके मुकाबले में उतरना मुश्किल है। जैसी वो लोग मेहनत करते हैं और जिस तरह से ध्यान- धारणा करते हैं और जितनी एकनिष्ठा उनमें है आप लोगों में आना चाहिए। उनमें पैसा और ये चीजें वो सोचते भी नहीं हैं और न ही किसी प्रकार से भी वो आलस्य करते हैं। इतनी मेहनत वो लोग करते हैं। उनको मैंने कहा कि आपको सिगरेट छोड़ना पड़ेगा, तो सिगरेट तो क्या उन्होंने सिगरेट का कभी दुकान ही नहीं देखा। इतनी एकनिष्ठा और इतना उनमें मेहनत करने की ये है कि आपके सामने वाकई एक मिसाल के तौर पे ये लोग हैं कि जो इस कदर अनभिज्ञ हैं अपने धर्म से और अपने तरीकों से, उन्होंने मास्टरी कर ली है और उसका आप देख सकते हैं कि Advent जैसी किताब लिखाई है? और ऐसी कम से कम चार पाँच किताबें अभी आएंगी, बहुत जल्दी। कम से कम इस Advent का ही कोई traslation अपने ऊपर ले ले तो एक अच्छे हिन्दी भाषा में हो जाए और एक मराठी भाषा में हो जाए तो भी बड़ा अच्छा हो जाए। यही मेरी पूजा है, यही मेरा सब कुछ है। बाकी सब पूजा में क्या अर्थ है? ऐसे तो सब मंदिरों मे हो ही रही है मेरी पूजा, उससे क्या पाने का है? मेरी पूजा तभी होगी जब तुम अनेक लोगों को जागृत करोगे, हजारों लोगों को जागृत करोगे। जब मैं देखूंगी की ये शक्ति सारे संसार में बह रही है वही मेरी पूजा असल में होगी, बाकी सब मेरी पूजा में कोई मुझे अर्थ नजर नहीं आता। उससे थोड़ा बहुत आपको फायदा हो रहा है। जरूर है पूजा में आने से आपके चक्र ठीक हो जाते हैं। पर गर आप इसको इस्तेमाल नहीं करें उसका उपयोग नहीं करें, उसको आगे न बढ़ायें, उसकी प्रतिष्ठा न रखें, उसपे मेहनत न करें, अपने जीवन के तरीके न बदलें तो फिर से वैसे के वैसे हो जाएगा। इसलिए बड़ा मान है आपका कि आप लोग पूजा में आए हैं तो उस मान को रखना और अगले साल में आने पर जितने भी लोग यहाँ पर आए हैं आज मुझे वचन दें हर एक आदमी कम से कम दस आदमियों को पार करायेगा। हर एक आदमी आज मुझे वचन दे और मैं आपको शक्ति देती हूँ। और हर एक आदमी इसमें पूरी तरह से, हमेशा जहाँ भी ध्यान होता है वहाँ आया करेगा और ध्यान कराएगा। ये हर एक आदमी को आज मुझे वचन देना चाहिए तभी मैं आपको पूर्ण शक्ति दूंगी। हालांकि आज का दिन आपके लिए भी और मेरे लिए भी बड़ा समारोह है, बड़ी भारी चीज़ है, सारे संसार में आज नवरात्रि का अंतिम दिन, बड़े से माना जाता है। लेकिन दुख की भी बात लगती है कि इतने बच्चे सामने बैठे हों तो माँ का जो जिस तरह से खिंचता है वो आप देख ही रहे हैं कि कल से मेरा हाल बहुत खराब है। और आप लोगों को भी बहुत तकलीफ होती है सब चीजों से। ये तो है। लेकिन तो भी ये सोचना चाहिए कि माँ के और भी बच्चे वहाँ हैं और ये सोच के कि वहाँ जब माँ जाएंगी तो कैसे खुश होएंगे वे और उनके भी दिल कितने बड़े हो जाएंगे और अपने दुख को आप लोगों को जीत लेना चाहिए और सोचना चाहिए कि मां जायें! जैसा सुख हमें दिया वैसे उनको भी सुख दें और उनको भी ये आनन्द मिले और हमारे जैसे वो भी सुखी हो जाएं तो तुम्हारा भी दिल शांत हो जाएगा और जो ये परेशानी है कि माँ कब आओगे, कैसे होगा, ये सब छूट जाएगा। हर एक चीज के बारे में सबको पता है। अगर एक चीज का problem हो जाए, समझ लीजिए आपको कोई problem हो जाए कि भई क्या करें, इसमें कैसा solution है, क्या है तो आपस में पूछ लीजिए। आप लोग अपना पैसा इकटठा करें, जो कुछ आप कार्यक्रम करना चाहें करें, जैसा भी चाहें आप कर सकते हैं। **लेकिन याद रखना कि वो भी पैसा, एक-एक पैसा, ये Public का पैसा जो होता है उसका बड़ा भारी अर्थ होता है। Public का पैसा आपको उड़ाना नहीं चाहिए। कभी भी एक पैसा भी नहीं, एक बूंद भी नहीं, आप लोग गलत चीज़ के लिए खर्चा करें।** नहीं तो हमने बीड़ी पी उसका पैसा,

हमने चाय पी उसका पैसा, ये नहीं। हाँ अगर आपको बहुत ही कहीं जाना हो, कुछ खर्चा हो गया हो तो दूसरी बात है। पर अधिकतर आप अपने बस से जाइए, अपनी जैसी औकात से रहते हैं उसी से रहिए। अगर जो आदमी बस से चलता है- मैं टैक्सी से गया उसका पैसा, ये सब खर्चा नहीं करना। थोड़ा सा पैसा आपको भी खर्चा करना चाहिए। इस तरह से भी लोग करते हैं कि बड़े-बड़े खर्चे बता करके, ये सहजयोग में नहीं चल सकता। आप अगर ये करेंगे तो मैं फिर उसकी सजा निकालती हूँ। आप जानते हैं ये चल नहीं सकता सहजयोग में। सहजयोग में आपको बहुत Public के money के लिए, बहुत ख्याल रखना है। ये कोई Politics नहीं है कि आपने पैसा मार लिया और जिसको जैसा कर लिया। ये परमात्मा का साम्राज्य है और इसके कायदे बहुत कड़क होते हैं। इसलिए इसमें पैसा-वैसा की गड़बड़ एक कौड़ी की नहीं होनी चाहिए। कायदे से आप रखिए, कायदे से रहें और अपने को जूते मारा करें, सुबह से शाम तक, गर दिमाग में ऐसा कोई भी ख्याल आए, तो सब ठीक हो जाएगा। आपको ये सब चीजों का किसी का अधिकार नहीं है। जब तक ये अधिकार प्राप्त नहीं होता अनाधिकार चेष्टा नहीं करनी। और सब चीज बहुत Gracefully करें। सब चीज में Grace होनी चाहिए, आपस में प्यार होना चाहिए, दुलार होना चाहिए। आपस में मिलो, कितनी खुशी की बात है कि देखिए कहाँ कहाँ से, आज ही यहाँ पर देखिए कहाँ-कहाँ से लोग आए हैं। सब जाति, सब धर्म के लोग आज बैठे हुए हैं, कितने आनन्द की बात है। एक दूसरे की पूरी तरह से मदद करो, कोई बीमार हो तो दौड़ के जाओ, देखो क्या तकलीफ है। कितनी अच्छी बात है। आपस में मेलजोल होना चाहिए। इसीलिए मैंने कहा कि आज यहाँ पर dinner, लंच करो तो अच्छा है। अभी लंच में पैसा नहीं देंगे, बहुत से लोग ऐसे हैं, हम लंच में पैसा नहीं देंगे। मैंने कहा ठीक है कोई बाहर से आए हैं वो तो हमारे Guest हैं, पर जो यहाँ के हैं उनको तो अपना भी देना चाहिए और दूसरो का भी देना चाहिए। इतना भी एक साल में आप एक मर्तबा नहीं दे सकते हैं तो ऐसे भिखारियों को आप बाहर करें। ऐसे भिखारी अपने को नहीं चाहिएं। सबको मिलना जुलना चाहिए। एक बार के खाने का पैसा नहीं दे सकते हम? ऐसे गये बीते लोग हैं क्या? एक सहजयोग में बहुत बड़ा drawback हो गया है क्योंकि हम इसमें पैसा ही नहीं लेते हैं इसलिए बड़ा भारी drawback है। पर ये बम्बई में सबसे ज्यादा है। इसका मतलब बम्बई में कुछ न कुछ गड़बड़ है। अगर आपको अपना लक्ष्मीतत्व जागृत करना है तो पैसों के मामले में ज़रा ढील छोड़ दें और दूसरा ये कि ईमानदारी रखें। दोनों चीज होनी चाहिएं। दानी भी होना चाहिए और ईमानदार भी होना चाहिए। इससे सब ठीक हो जाएगा। अगले वक्त मैं आऊं, मुझे इस वक्त बड़ी खुशी हुई कि दादर का प्रोग्राम इतना जबरदस्त हुआ और इतना बढ़िया हुआ कि Next time दादर में तो एक बड़ा ही जोर का सेन्टर बन जाएगा। बस दादर से बहुत खुश हो गई हूँ मैं और आपको अनेक आशीर्वाद हैं। इस दादर में जिस तरह से प्रोग्राम हुआ है हरेक जगह ऐसे ही बड़े बड़े प्रोग्राम हों और बड़ी खुशी की बात है। इससे इतनी खुशी होती है कि देखिए बच्चे किस तरह से मेरे बढ़ रहे हैं और इसका importance समझ रहे हैं। इसको बढ़ाएं, आगे चलाएं। जैसे दादर में प्रोग्राम हुए, ऐसे हर एक जगह आपके प्रोग्राम हों और बड़ा अच्छे से सफलता मिले, ये सबको आपको अनेक आशीर्वाद मैं देती हूँ। मेरे हृदय से मैं आपको अनेक आशीर्वाद देती हूँ, आप समृद्ध हों, आप समर्थ हों और आपके अन्दर से अनेक शक्तियाँ बह करके संसार का भला करें और कल्याण करें। और माँ की एक ही इच्छा है कि सारा संसार जो है वो सुख में आ जाए, आनन्द में आ जाए। वो तो आप लोग पूर्ण करें।

(मूल आडियो के अनुरूप)

परिवर्तित इच्छा

मैं एक पूर्णत: नास्तिक व्यक्ति था। डा0 बी.के. कोहली (पंजाबी बाग, देहली) ने श्रीमाताजी की कृपा से मुझे आत्मसाक्षात्कार कराया। श्रीमाताजी ने मुझ पर कृपा की और मुझे आत्मसाक्षात्कार दिया। जिसके उपरान्त मेरा रोम-रोम आनन्द से भर उठा। खुशियों का सागर मेरे हृदय में उमड़ने लगा। इस असीमित आनन्द को पाकर कृतज्ञतावश मुझे लगा कि मैं श्रीमाताजी के चरणों में कुछ भेंट अर्पण करूँ। श्रीमाताजी की कृपा से यह मौका शीघ्र आ गया। श्रीमाताजी विदेश से वापिस लौट रही थीं। उनके स्वागत में हम सभी सहजयोगी रात को हवाई अड्डे पर मौजूद थे। डा. कोहली ने स्वयं अपने बगीचे से फूल चुन कर एक खूबसूरत गुलदस्ता बनाया, और मुझे श्री माँ के चरणों में अर्पण करने के लिए दिया। मैं बहुत अधिक खुश था कि अपनी माँ को अर्पण करने के लिए मेरे पास एक अच्छी भेंट है। हवाई अड्डे पर मैंने वह गुलदस्ता श्रीमाताजी के चरणों में भेंट कर दिया और खुशी-खुशी अपने घर आ गया।

एक दिन के पश्चात् श्रीमाताजी का आश्रम में आगमन हुआ और फिर दुबारा मैने डा0 बी.के. कोहली द्वारा बनाया हुआ गुलदस्ता ही श्रीमाताजी के चरणों में भेंट किया। लेकिन अब मेरा मन आनन्दमय नहीं था। मेरा मन बहुत विचलित हो गया था। मैं सोच रहा था कि भेंट तो कोई ऐसी वस्तु की जाती है जो तुम्हारी अपनी हो, लेकिन वह फूल तो डा. साहब ने अपने बगीचे से लिए थे, उन्होंने अपने हाथों से ही गुलदस्ता बनाया था, मैंने तो केवल माँ के चरणों में अर्पित ही किया था। और वास्तविकता में तो फूल डा. साहब के भी नहीं थे। क्योंकि पेड़-पौधे, फल-फूल समस्त चर और अचर वस्तुएं तो श्रीमाताजी ने अपने प्रताप से ही पैदा की है। उन सभी में, अर्थात स्वयं मुझमें श्रीमाताजी की ही शक्ति प्रवाहित हो रही है। अर्थात फूलों का गुलदस्ता भी तो श्रीमाताजी का ही हुआ। और मैने तो उनकी वस्तु उन्हीं को भेट कर दी।

अर्थात मैं कुछ भेंट कर ही नहीं सका।

अब मैं किसी ऐसी वस्तु की तलाश में लग गया, जिसे मैं अपना कह सकूँ और मैं उसे माँ के श्री चरणों में भेट कर सकूँ। काफी सोच विचार के बाद मैंने पाया कि मै अपनी भक्ति माँ को भेंट कर सकता हूँ और मैं पूरे मन से श्री माँ की भक्ति में लग गया। परन्तु मेरे मन में यह भक्ति श्रीमाताजी द्वारा मुझे आत्मसाक्षात्कार कराए जाने के बाद ही पैदा हुई है। अर्थात यह भक्ति भी श्रीमाताजी की ही अनुपम देन है। मैं इस ली हुई चीज को कैसे माँ को वापिस कर सकता हूँ। और मेरी इच्छा फिर अधूरी रह गई!

अब मैने सोचा कि सहजयोग के विकास के लिए कुछ आर्थिक सहयोग दिया करुँगा। ऐसा सोचते कुछ ही समय बीता था कि मुझे एहसास हुआ कि मेरी आर्थिक स्थिति पहले से अच्छी होती जा रही है। अर्थात यह धन भी श्रीमाताजी ही दे रही हैं, इसे मैं स्वयं उन्हीं को भेंट स्वरुप दे सकता हूँ। अगर मैं सहजयोग के विकास पर कुछ धन व्यय भी करता हूँ तो वह धन भी श्रीमाताजी को भेंट तो नहीं हुई। यह तो फिर श्रीमाताजी की मुझ पर कृपा ही हुई कि अपना धन मेरे माध्यम से सहजयोग के विकास पर खर्च करा रही हैं। मुझे श्रीमाताजी ने अपने कार्य के लिए चुन लिया है! जय श्रीमाताजी! अत: इस बार भी माँ को कुछ भेंट करने की मेरी इच्छा अधूरी ही रह गई।

अब मैंने अपना तन और मन माताजी को भेंट करने की सोची और मैं सहजयोग के विषय में सभी व्यक्तियों को विस्तार से बताने लगा। मैं हर सम्भव प्रयास करता, कि किसी प्रकार अधिक से अधिक व्यक्ति सहजयोग अपना लें। कुछ ही समय में मैने महसूस किया कि, दूसरों को प्रभावित करने की मेरी क्षमता धीरे-धीरे बढ़ रही है। पहले सभी व्यक्ति मेरी बात को बड़ी लापरवाही से सुनते थे, उसे कोई महत्व नहीं देते थे। परन्तु अब अधिकतर व्यक्ति मेरी बात को ध्यान से सुनते हैं और सहजयोग अपनाने का प्रयास करते हैं।

अर्थात सहजयोग प्रचार हेतु दूसरों को प्रभावित करने की मेरी क्षमता श्रीमाताजी की ही देन है। अत: मैं सहजयोग का प्रचार करके भी श्रीमाताजी को कुछ भी भेंट नहीं कर रहा हूँ। मैं तो सहजयोग के प्रचार का केवल माध्यम मात्र हूँ। धन्य हैं हम

लोग कि माँ ने हमें सहजयोग के प्रचार के लिए चुना है। श्री माँ का कोटि-कोटि धन्यवाद!

और अब मैंने अन्तिम फैसला किया, कि मैं स्वयं को श्री माँ के चरणों में पूर्णत: समर्पित कर दूँगा; अपने जीवन की डोर श्रीमाताजी के हवाले कर दूँगा। और मैने ऐसा ही किया। परन्तु समय-समय पर मेरा ध्यान इधर-उधर विचलित होने लगता, माँ की पूजा में ध्यान ही नहीं लगता था। ऐसे में मैं श्रीमाताजी से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे अपने से दूर मत करो। मुझे इतनी शक्ति दो माँ कि मैं अपने आपको, आपके चरणों में पूर्णत: समर्पित कर सकूँ। आपकी पूजा में लीन रह सकूँ। मुझे अपनी माया में उलझा कर अपने से विमुख मत करो माँ। इतने में ही मेरी ममतामयी, मेरी प्यारी माँ, दयालु माँ, मेरी पुकार सुन फिर मेरा ध्यान अपनी पूजा में लगा लेती, और मैं फिर अपनी सर्वव्यापी माँ की पूजा का आनन्द उठाने लगता। इस सबसे मुझे आभास हुआ कि मैं अपना समर्पण तो श्रीमाताजी की पूजा का आनन्द उठाने के लिए कर रहा था। अत: मैं तो माँ को कुछ भेंट करने के स्थान पर अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगा हुआ हूँ।

अर्थात अपनी हर सम्भव कोशिश करने के बावजूद भी मैं ऐसी कोई वस्तु नहीं खोज पाया जिसे मैं केवल अपनी कह कर श्रीमाताजी के चरणों में समर्पित कर सकूँ। मैं हार गया। अपनी माँ से हारना ही तो परम आनन्द है। अब मैं श्रीमाताजी से केवल एक ही प्रार्थना करता रहता हूँ, कि श्रीमाताजी अपने इस बच्चे को अपनी अनन्यभक्ति का आशीर्वाद दें। मैं आपकी भक्ति का आनन्द अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक उठाता रहूँ।

अन्तत: श्रीमाताजी को कुछ भेंट करने की मेरी इच्छा, माँ की अनन्यभक्ति का आशीर्वाद पाने में परिवर्तित हो गई।

जय जय जय श्री आदि शक्ति माताजी,
श्री निर्मला देवी नमो नम:

डा. नरेन्द्र गुप्ता
देहली

त्रुटि-सुधार

प्रिय पाठक,

चैतन्य लहरी- अंक 9,10/2007 के पृष्ठ 38 पर छपे प्रवचन ''चैतन्य लहरियाँ क्या हैं'' की आडियो से प्रतिलिपि बनाते हुए Audio की आवाज़ कई स्थानों पर स्पष्ट न होने के कारण कुछ त्रुटियाँ सामने आई हैं। कृपा करके अपनी प्रति में निम्न त्रुटि-सुधार कर लें। कष्ट के लिए क्षमा प्रार्थी हैं:-

पृष्ठ 38 : पहला पैरा- पंक्ति चार में **'तार छूती'** के स्थान पर **'तार खिंचती'** कर लें, दूसरा पैरा- तीसरी पंक्ति- **'जल'** के स्थान पर **'जड़'**

पृष्ठ 38 की अन्तिम तीसरी पंक्ति 'लेकिन ये दोनों **मूर्ख** इतने अनभिज्ञ हैं' के स्थान पर 'लेकिन ये दोनों **ही** इतने अनभिज्ञ हैं।'

पृष्ठ 39 : पहला पैरा- अन्त से ऊपर- तीसरी पंक्ति में 'आपके **अन्दर** में खिलना चाहता है' के स्थान पर 'आपके **हृदय** में खिलना चाहता है।'

पृष्ठ 40 : पहला पैरा- अन्त से ऊपर को तीसरी पंक्ति **'पिस्तौल'** के स्थान पर **'दुष्टभाव'** तथा पूरे प्रवचन में 'Viberation' शब्द के हिज्जे 'Vibration' कर लें।

धन्यवाद

संक्रान्ति अर्थात सूर्य की शक्ति। सूर्यशक्ति का अर्थ है आत्मविश्वास। सूर्य हमें उष्मा और प्रकाश प्रदान करता है। अब ये हम पर निर्भर करता है कि सूर्य की उष्मा में हम स्वयं को झुलस लें या इससे आत्मविश्वास प्राप्त करके तेजोमय हो जाएं।

परम पूज्य श्रीमाताजी निर्मला देवी

पूणे 14.01.2002